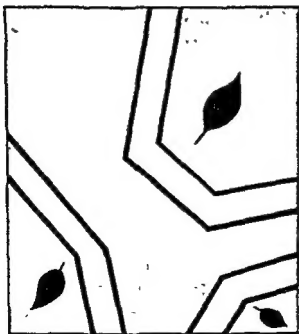


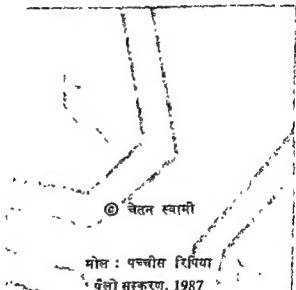
क कविता प्रकाशन, बीकानेर

आंगणै विद्याळें भांतां

चेतन स्वामी



राजस्थानी भाषा साहित्य एवम् संस्कृति अकादमी,
बीकानेर रं आशिक आर्थिक सहयोग स प्रकाशित



मोल : पच्चीस रिपिया

पैलो सस्करण, 1987

प्रकाशक : कविता प्रकाशन, तेनीबाडो, बीकानेर (राज०)

छापोखानो : विकास आर्ट प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

ANGNE BICHALE BHEENTAN (Short Stories)

By Chetan Swami

Rs. 25-00

आ पोधी
मालचंद तिवाड़ी रै नांव
जिण कनै सीखण सारु
सलीकै रै अलावा भी
मौत की है.....

क्रम

पुण्याई	9
पाणी धारो रग	16
धी० डी० ओ०	27
पांन लागम्यो	34
घाभ	41
आंगणं विचालं भीतां	48
मतोख	57
मीदां	63
रुघ्योडा भारग	73
नूवो भीसम	78
मामर	85
गूगळी	91
दुजो ब्याव	95



पुण्याई

“भगवान रँ दरबार संग जातां अँक वरोवर हुवँ, उणरँ अठँ तो जँडो अगारवाळ बँडो मेघवाळ। कोई ऊँच-नीच नी है। नीठ गांव री पुण्या। जागी है, तू चलाय'र ओ'डो क्यू वणँ...काम किणी रा कक्या हुवँ तँ धारा ई ककसी, फिकर ना कर लाडेसर, कीही नँ कण—हाथी नँ म- देवणवाळो अँक वो ई है। मिनख री की खिमता नी है। चाम चली जावणी है, नाम रँय जावणो है...बावळा अिस्या मौका लारँ भज्योड़ा हुवँ उणरँ ई हार्य आवँ।” सिरपंच समझा रँयो हो लाधू नँ। छँकड़लो बंगार कसावण रँ मिस सिरपंच उणरी हेठँ खुळयोही दूण नँ ऊपर खोल्ली। वो संकँ रँ भार सू दबग्यो। इता मोठा मिनख उण रा इण भांत घोरा करँ, अचँ वो काँजी बोलँ नँ काभी नी बोलँ...होणजात रा इण भात नेवरा करँ इण सू ऊँची बात भळँ काँजी हुय सकँ...लोग तो भीटीजण रँ भी सू उणरी छियां सू ई दूर न्हाटँ।

“आव गट्टा मायँ बैठा !” सिरपंच उणरो बावळियो धणँ लाड सू भालनँ पाखती रँ गट्टा मायँ बैठण रो कैयो। वो सँतरो-बँतरो सो बैठग्यो। सारँ जोयो तो ठा: लाग्यो कै गाव रा संग मोजीज मिनख उणरँ मुँडँ कानी जोय रँया है...आज वो पीपळ गट्टा मायँ बैठतां इण बात नँ बिसरग्यो कै उणनँ खल्ला पँरधां उण मायँ बैठण रो समाजू इधकार नी है। वो तो भूलग्यो, पण समाजू इधकारो दँवण नी दँवण रो निरणँ करणवाळा भी आँख मीचनँ आँघा हुयग्या। सिरपंच भी उणरँ पाखती गट्टा मायँ बैठग्यो।

“हा तो बता तू कांओ मोच्यो ?”

उण अपरी-इण ही उण सू सवाई नीची घातनी । वो निरर्ण नी कर पाय रेंयो हो कै काओ कैवैने कांओ नी कैवै । उणनै वोतो देख'र सिरे-पंच भळै उणरो काधो पपोळ्यो ।

“अच्छ्या जवण दे सगळी वाता” तनै तो हाल कित्ताक बरस आया हुवेला । थारो पैदा हुवणो मनै कार्ल-परसू री सी वात लागी” अमाण चेतै है मनै थारै जलम रो साग, खैर, अठै बैठ्या मिनखा में सगळा सू बुजरग मगनीराम जी है ।”

पीपळ गट्टा रें आसैपासै-विराज्योडा थका संग मिनखां री घोटक्यां हाल नै मगनीरामजी रें धोळें एत मे उळभगी । कम सोभी अर कमती मुणन वाळा मगनीराम संग नै आपरें कानी भ्काकतां देख'र बगना-मा हुयाया । सिरेपच जोर सू वूझ्यो” “ब्यू काका किती उमर आयगी ।” संग गावेडी मुळकै हा । मगनीराम रें साफ समझ में नी आई कै सिरेपच काओ वूझै है । कनै बैठयो एक जुवान कान कनै मुडो लैयनै सागण बात जोर सू कैयी तो मगनीराम रें सावळ समझ मे आई । बिना दाता रें पोपळै मुंडे सू मुळकता कैयो—“भाई उमर-धुमर रो तो की बेरी नी, पण खांधिया बिचारा लारै-लारै दौड़ै है अर हू आगै-आगै भाजू हूं ।” बैठयोडा सगळा मिनखा रो अकै सागै ठहाको लाग्यो । सिरेपच अर लाधूराम भी हेंस्या बिना ना रैय सक्या । हेसी ठम्या पछे सिरेपंच खंखार'र कैयो “इया है रे भाई लाधू, कै इण गाव में मगनी काका सू वूडो कोई मिनख कोनी । आनै मौगन दैयनै वूझलै कै अठै इण गाव मे कोई साधू आपरो ठायचो कियो हुवं तो ? ठा: नी साई रो काओ कुदरत है कै कोई साधू म्हारी देखणी मे अठै च्यार छव महीणा स बेमी ह्वयो ई कोनी, अ नीलकंठगिरीजी ही है जका आपरी पुण्याई सू इण गाव नै पवितर कर्यो है, तू जाणै ओ बळद ब्यावणो गांव है !”

सगळा हेंस्या । लाधूराम भी मुळक्यो ।

“म्हारी देखणी में आवै कै कोई भी साधू अठै जमण री कोसिम करतो तो अे म्हारा भाई गिडक लगायनै तगड दैवता । साधू आरै खातर खमडोळ री बसन रेंयी, पण लखदाद है नीलकंठगिरीजी नै जकी इयाकला

चांडा मिनखां मे टिकनं बारह साल री तपस्या पूरी करी।”

मगळां री घाटवयां उण ठोड री सीध में लुळगी जठे नीम हेठे नीलकंठगिरी आंस्यां बंद करधा बैठधा हा। नीलकंठगिरी री कुटिया माथे नूवी नूवी मगायेडी धजावा फरौ रेंयी ही।

सिरेपंच देख रेंयो हो के अवे उणने घणी भूमिका नी बाधने आपरी बात सतम कर देवणी चाहीजे।

“देख रे भाई नाधु, तने बुलावण रो भकमद फगत इतो हीज हो रे के भगवान री किरपा सू अवे इण गाव री मागीडी पुण्याई जागण वाली है। चावा नीलकंठगिरीजी इण गांव ने अमर करणो चावे। आज ताई जको काम इण गाव में नी हयो। धो करणो चावे, बावो जीवत समाध लेवणी चावे।”

लाधूराम रे समझ मे नी आय रेंयी ही के बावे री समाधी मे वो किण भात री आखंडी है जको इण भात रो मान-सनमान ने नेवरा करीज रेंपा है। वो चितवंगू हुवे ज्यू कदे ई मिरेपंच, कदे ई मामे विराजियोडा लोगां ने तो कदे ई बावेरी कुटिया कानी देख रेंयो हो।

उण संकना-कवाई आवता बूझ्यो - “पण में कोई आडी थोड़ी ई देवू हूं—बावो समाधी लेय रेंपा है इण मे म्हारे कात्री अडकांस है...?”

“है अडकांस...जर्ण ई तो तने बुलायो है अर इता मिनख चारे मुंडे कानी देखा हा...में तो तने आवता ई कैय दियो हो नी के काम किणी रा दकं कौनी...ओ असल पुन रो मौको हाथ आयो है, इण में क्यू चूक है दम घोषा रो धेड़ियो है उण मे तूं किसी हांसल उपजा लैवे है। याजवी पईमा जका हुयसी तने दिराय दिया जासी...”

लाधू आपरे भेत मे बावेरी समाधी री बात पैला ई गावेंडधा कने सू मुलगुल मे मुण लीवी ही। उण जिण सू बात सुणी उण ने उतर देय दियो हो के वो आपरे भेत में समाधी नी लेवण देवे। चावे छोटे सो (खेत) ही क्यू नी हुवे, है तो अेन मडक माथे अर गाव रे साव नेडे।

“पण म्हारे तो इनो ई टुकडो है जमीन रो, हूं पछे क्या में हाथ घाल स्यू।”

लाधू री बात सिरेपंच विचाले ई काट दीवी।

“उणरी तूं क्यू फिकर करे, धारें सातर कोई दूजी जमीन री जुगाड़ करस्यां, तूं तो होनां रो उमळो दैय दे...नही जणास वाजवी पईसा दिराय देस्यां। भोळा, ओ कोई एक आदमी रो काम थोड़ा ई है जको तूं जीव नान्हो करे। सगळें जगत सातर पुन्न रो काम है।”

लाघू मेघवाळ जाणै आपरी कावड में हो, जिण सू वेंसी सांवफीजग्यो हवें। बाबो नीलकंठगिरी नी जवर मछभा दरसाई, जीवत समाध लैवण री अर वा ई उणरें खेत में। लाघू री समझ में नी आय रैंयो ही क बाबो उणरें ई खेत में समाध क्यू लैवणी आवें। उण सू ई सगतो निरेपंच रो भी तो खेत है। उण सू पांच गुणो बडो है। लाघू सू रैंयो नी गयो तो कैप दियो—

“धारो खेत भी तो म्हारी सीवाजोड़ ई है बाबें नै उठे दिरवाय दो समाधी?”

“अरे बाबळा, ओ काम कोई मिनस रें चायां थोड़ा ई हुवै है। भगवान रो आदेस बाबें नै जिण ठीड़ रो हुयो है, उण नै आपा किया अलोप सका हा। म्हारें खेत में समाध लैवण रो आदेस हुवतो, तो जणा पछै इता आदम्यां सामे धारो मुंडो जोवण री काभी जरूरत पड़ी ही...”

□

गावराम आगै लाघू नै नी चावता थकां भी हुंकारो भरणो ई पड्यो। लाघू रो ओ गाव अणूतो लाठो नी है। फगत ढाई सौ घरा री बसती है। हाईवै रोड माथे बस्योडो ओ गाव ओक मोटे सैर सू फगत पन्द्रह किलोमीटर री भाय माथे है। सैर सू घणो अळगो नी हुवण रें कारण बिजळी—पाणी रो तोड़ो कोनी।

बाबें नीलकंठगिरी घणा वाजा गाजा रें सामे समाध लीवी। सिरे-पंच रें दबदब पुलिस थाणो की नी कर सक्या। गांव माय अनोखी रौनक वापर रैंयो ही। लोग लाघू री पीठ थपथपा रैंया हा—“वाह, लाघू! वाह तूं तो भो-भो सू तिरग्यो, जलम सुक्यारय हुयग्यो...धारो जमीन माथे किता जणा रा माथा झुकैला?”

पण लाघू असमंजस में की नी बोलें ।

समाधी में बड़ण री बँला बाबें च्याहंमेर ऊमा लोग लुगायां नें कैयो हो—“जाओ रे, गांववाळां, किण ई तरें रे बेमार-सेमार के बिपधर रे डस्योड़ा नें समाध कनलें नीमड़ें रा पत्ता खवाड दिया, वो बारहपड़ंग हुय जावैला ।”

अन सड़क माथें अर गांव रे बस स्टेण्ड कनै लाघू रे खेत मे बण्योड़ी समाध माथें भीड रा गट्ट जुड़ण लागग्या । सड़क ऊपरांकर जावणवाळा जातरो आप आपरी असवारचां नें ढावने नीचें उतरें अर बाबें री धोक दैय नें ई पाछा बहोर हुवें । बाबें पूर्णिमा री तिथ अर मगळवार रे दिन समाध लीबी, उण सू हरेक मगळवार अर पूर्णिमा रे दिन सांतरो मेळो भरीजै । अळगै-अळगै ताई बाबा रा पर्चा पूगग्या । हरेक सकट बाळा लोग बाबा रे धोक देवण नें आवें । देखता-देखता कच्ची समाध माथें पक्को मिंदर बणन लागग्यो । गांव रा केई पच-सिरेपच अर कनलें सै'र रा की भोजीज भिनखा मिलनै अेक भमाध कमेठी भी बणाय लीबी ।

रोजीना इक्यांतरे जद भो समाधी री दान पेटी खोली जावै, वा लोटां सूं लबालब भरियोडी मिलै । सिरेपच रो काको समाध रो पुजारी हुयग्यो । अबै तो समाध रे च्यारा कानी दूकानां भी सजण लागगी । दूकानां मे बाबें री मोकळी फोटूवा अर पर्चा री पोथ्या भी मिलण लागगी ।

कनलें सै'र रो एक दानी तो समाधी रे अडोअड एक लूठी घरमसाळा भी बणावणी सरू कर दी । घरमसाळा रे बारलें पासी सड़क सामी मोकळी दूकाना ई चाकीजी है ।

लाघू री समझ में नी आय रैयी ही कै वो कांजी करै ? ऊपरली हत माथें खड़ी है । सगळा ई आप आपरा खेत बाबेंसा पण उणरो खेत तो सुक्यारय री भेंट चढग्यो । वो खेत रा पईसा लैवणा बावतो पण उणरी ई जातवाळा उणनै पईसा लैवण सू बरज दियो, वा कैयो इण सू जात री हेठी हुवै ।

सिरेपंच आगै उण कोई दूजी जमीन दिरावण रा घोरा क्रियम-अबै तो सिरेपंच गिनारें ई नी । छंवट एक दिन वो अकरो ~~बाबी के फिरे~~

सू कैवण लाग्यो—“सिरपंच साव, मनै कठै न कठै दूजो खेत दिरवाय दो नी जणास अेक और काम भी आप कर सको ।”

सिरपंच रै खेत दिरावण वाळी वात तो समझ में आय रैयो ही पण दूजो किसो काम हुय सकै वा वात समझ परवारै ही ।

“दूजो किसो काम कर सकू—पईसा लैवण सू तो तू नै धारा समाज-वाळा खुद नाट दै दी ।”

“पईसा तो मै आप नी लैवू ।”

“तो पछै ?”

“मनै आप समाध नैडै अेक दूकान दिरवाय दे—म्हारो गुजराण हुय जावैला ।”

सिरपंच नै इण वात माथै घणो अचंभो हुयो—हीण जात दूकान करैला, अर वा भी समाध जिसी पवितर जगां माथै । पण सिरपंच आपरो धीजो नी गमायो ।

“देख रे बावळा, म्हारै दूकान दैवण मे कोई अडकास नी है, पण दूकानां दैवण रा रुळ घणा करडा है !”

“मै तो म्हारो खेत ई दियो है, रुळ मे हेर-फेर आप चावो जियां कर सको ।”

“नही रे भाई, म्हारै हाथ री वात कठै रैयो । कमेठी करै जियां हुवै । अेकूक दूकान रो छव हजार रिपिया सालीणो भाडो है अर दम हजार रिपिया एडवास दैवणा पडै । भोगै पडै तो तू ई लैय लै, हा धारै खातर की कमती वेसी भी कमेठी नै करण रो कैय देस्यां ।”

“पण आपरा भाणजा भी तो च्यार दूकानां लीवी है अर धरमसाळा चिणाई है बां सेठा री भी तो च्यार दूकाना है ।”

“ले, तू तो घणी नुक्ताचीणी करै रे भाई, पण म्हारै अठै कोई रिस्ते-दारी नी है । भाणजा आप आपरा खेत कमेठी रै नावै मंडाया है अर धरमसाळा रा सेठां री सतै दूकान चिणावण मू पैं नी ई च्यार दूकानां री है...कच्चो काम म्हारै कोनी हुवै...।” इतो कैयनै सिरपंच साव चल्या गया ।

साधू री, समझ मे नी आय रैयो ही कै वो काजी करै । अचाणचंक

उपर अक वात ऊकला । ताचक न सहक-मडक जावता । सिरेपंच री
वांवळियो भाल लियो ।

“सिरेपंच सा'ब में ई जीवत ममाध लैवूला आपरें खेत में...पूनम रें
दिन नो-गालें अमावस है, कालें रा ई...दोबही समाध सून गांव री पुण्याई
घणी बधैला...।”

मिरेपंच भटक सून आपरो वांवळियो छुडाय लियो—“ना रे बावळा,
धूड़ में दब'र मरणें में कांओ सार है, इयाकली बावळी वाता नी
करणी...।”

पाणी थारो रंग

बदरी रा कोडिया भूवता-सा लखावै हा । हालत म्हारी भी कम कोभी नीं ही । गळें मांय जाणै रेत भर डाटो देय दिन्हो हुवै ।

—“मास्टर, मरस्यां ।” बदरी रा बोस जाणै माडें मुडें सूरळक पड्या ।

—“म्हासू तो अबै को चालीजै नी ।” कैवतो बो धप्प करतो अंक बूई मायें ओटाळ हुयग्यो । बूई सूं अंक चिराटी जाणै ओळमा देती-सी निकळ उडी ।

अळगै-अळगै ताई अंक-बीजै सूर सिर गुंध्यां फगत घोरा ई घोरा । नैडै-नैडास कोई फोग भी नी दीठो, जिणनै सुरड, तिरस सागै फरेब कर्यो जावै ।

मैं रोवणखाली आवाज मांय कैयो—“तू थोड़ी सधूरी राख'र सुस्ताव, मैं देखूं कठै ई पाणी हुनै तो...” बदरी नाङ हलाय पस्तभाव सूर आख्यां मीचली ।

उतरतै वैंसाख रो जेडो तावडो हुया करै, वैंडो ई हो । पगरखी मांय फवणा अर अेड्यां बळ रैयी ही, पण तिरस रै आगै डील रो ओ पळीतो नाकुछ हो ।

चोफेर रेत मायें पाणी ई पाणी लैर्यां लैय रैयो, पण अकरै तावडै सूं लैर्यां लैवतै इण पाणी नै आजलग कुण पीय सक्यो, जको म्है ई पीवणै रो वेवड कर सकता ।

इण रिदरोही मांय तिरसा भरनै, खुरड़ा खोतरण छंडं कोई सरधा
जाकी नीं बची ही ।

अक ऊंचै टीब्बै मायै चढ़तां आख्यां आगळ अंधारी आय रैयी ही ।
अणूतो जोर लगाय देख्यो—दो-तीन खेतवा अळगै रेल्वे फाटक-सो दीठो ।
टीब्बै सूं उतरती बँला में किणी पंखेरू री पास जेड़ो हलको हुमग्यो ।

ओटाळ पड़्यै, गँळ सूं आख्यां मीचतै बदरी नै चचेड़्यो । —“बदरी
पाणी sss ! ”

बदरी आख्या मिचमिचाई अर हाय आगै लंफायो, जाणै में भर्योडो
लोढो सागै ह्यायो हूं । पछै सावचेती सूं आख्यां खोली । बूख्यो—“कठै है
‘पाणी ?’”

—“आगै...आगै दो-तीन खेतवा मायै रेल्वे फाटक दिस्सै...तूं थोड़ी
हिम्मत कर...” वो हात्यो तक नी, तो में उणरो बाहूड़ो झाल उभो
करणो धायो । उणरै गिजडरपणै मायै मनै भूझळ आयगी...“देख, तिरसो
में ई कम नी हूं, पण सफा हांगो नाख्या तो इण बळती ओकळ में ई दोबां
रो दाग हुय जावैला...घरवाळा सोभ-फिरोळ ई बरात पाछी पूग्यां
करैला...उठ ! ”

बदरी धक्का खावतो-सो उठ्यो ।

गैलो पैली ई बिसराय चुक्या हा । अंदाज सूं ऊझड़ चाल रैया हा ।
‘बदरी आख्यां मीच्यां, म्हारो खांधो झाल्यां धक्का खावतो धिग रैया हो ।
‘टापी री सीध में पग ठरड़तां में उण मोरत नै माई हो, जिण मांय बरात
जावण री हामळ भरी । कितो आछो हुवतो बरात आवतो ई नी । अर
नीतर बदरी नै तो अठै आवण खातर नट ई जावतो !

दिनुगै सूं ओ तीजो बुलावो हो । अबकै नाई नी, बोदूरामजी रो विचै-
टियो पोतो आयनै कैंयो—“काकाजी फुर्ती करो लॉरी सो स्टार्ट खड़ी है ।”

उणरै निकळता ई जीसा रै लवडधक्कै चढ़्यो । वं मघरै सुर मांय
समझावण लाग्या—“मिनख, मिनख रै जाया करै है रे...विचारां नै क्यूं
फालतू भागदौड़ करावै...जावणो है जणा आ घड़ी-घड़ी रा बुलावां मांय
कांओ सार है, अर नीं जावणो है जणा—”

—“कुण, सुगनो है कांजी ?”

मुण'र में कमरै सू वारै भाकर देख्यो, तो जीसा रो नांव लैवता
बोदूरामजी खुद बुहा आया। इणी बखत म्हारै मुई सू निकल पड़यो—
“नरग्या, डेण खुद आयग्या—अबै तो जावणो ई पड़मी—।”

दोय-च्यार कपडा दूध पेस्ट-ब्रश अर दाड़ी रो समान वेग माय घालतो
में बोदूरामजी रै लारै ई निकळ पड़यो। घर सू तीजी गळी में ही नगर-
पालिका रा भूतपूर्व अध्यक्ष बोदूरामजी रो पुराणो मकान है। चौड़ी गळी
मांय लॉरी खडी ही अर अक स्याणो मिनख बरात्या नै वमण रा नंबरा
कर रैयो हो। टोंगर-टोळी कांचाकोळ मचा राखी ही। बस री आगली
सीटा माथै वा आपरा कब्जा धिगाणिया वस्ती दाई ई जमाय लिन्हा। में
माय बड़यो अर सोनवाळी अक खाली सीट देख'र उण माथै जमग्यो।
अठी-उठी जोयो, लॉरी माय घणकरा टोंगर टोळी ई हा, में कनला नै
बूझ्यो, “काभी बात है, ओजू बराती पूग्या कोनी दीस ?”

—“बयू आपा आयग्या नी।” जवाब में वा मसकरी करी अर फिस्स
करता हैंस पड़्या।

में गौर सू निरख्या यानै। लट्टू री कोरपाण घोली माथै धौलो धक्क-
कुडतो, कॉलर हेटै चीलडो करने दियोडो समान। दाड़ी सुतराई सू
वण्योडी नै फररावती मूछ्या हेटै लाल होठ पान सू रगीज्योड़ा। वारै
काना मांय खसोलैडा अतर रा फोहा री भभरोळ आखी बस माय खिच
रैयो ही। मनै मिन ई मन जा बात चेतै आयगी कै जनेती री तो जूण ई
ग्यारी हुबै। जमानो भलाई चावै जठै पूग ज्यावै।

घोड़ी ताळ माय ई गीतेरण सुगाया रो झूलरो मोटर नैई आयो, जिण
बिच्चाळै नान्हा-सा बीद राजा मोड़ा निजर आया। राजाजी रो साफो
मान्यो नी संभ रैयो हो। लॉरी माय बढतां बीद राजा उणनै आपरै दोबू
हाथां नू इण भांत भाग्न नियो, जाणै काच रो भाठ है अर ठेग लागता ई
बधर जावैला। में बोदूरामजी री अक्कल में सेंधमार कर ई रैयो हो कै
अणठक आवाज आई—“अरे, वाह—काभी कैवणो—आयग्यो बढरु ?”

बदरी पनवाड़ी एक खस्ताहाल हवाई वेग लिया हांफनो थको बस
माम चढ़्यो। म्हारै बाजूवाळी दो री सीट माथै बैठ'र उण आपरो हांफणो

कावू कर्यो, कैर वोल्हो—“मास्टर तू कणा आयो ?”

—“आयां नो ताळ हुयमी । बुलावा माथे बुलावा आवण लाग्या तो भाजणो पड़्यो अर बठे हाल चालण रा कोई स्यान-गुमान ई नी हे ।”

—“कैर ठीक है ।” बदरी नमल्ली सू वोल्हो—“मैं सोन्यां, हू ई सगळां सूं मोटो पूगूला” खे, खा ।” वोलतां यको ई बदरी आपरं खूजै माय हाथ घाल्यो अर मुट्टी म्हारे मारं खोल दी ।

मुपारी रो टुकडो लैय'र मैं वूझ्यो—“पईसा तां नी मांगेला ?”
—“नगद नी सर्यो, पाछो आय'र खाते मैं मांड दू ला ।” कैय'र बदरी जोर सू ठहाको लगायो । मन सतोख हुयो, चनो बदरी मागं रँवैला तो घोर तो नी हुबूला ।

को ताळ पछे मैं बदरी रँ कान माथे होठ धरतां होळ—होळ वूझ्यो
—“यार बदरी, पाच कोस री भां कोनी अर लगन ई स्यात गुदळकियो ई हुवैला, कैय इती बेगी हाय-तीवा मचावण री कांजी जरुत पड़गी वोदू-रामजी नै ।”

—“तू मास्टर माय भोळो है ।” बदरी जाण लूठो भेद खोल्हो—
फालतू टीगरां रा चोटी-कान खेंच । आ लॉरड़ी भोफत री है, तेग सटै वरात पूगा दैवैगा...लॉरी बाळो कोई दूजी वरात छोडण मैं हाथोहाथ पाछो आवतो हुयमी ।”

साडी दस वजतां वरात ठिकाने-सर पूगगी । अेक चौकैर घाइ सू घेइ-यांडी गोदाम जेडी धरमशाळा में जनवासो हो । वराती उतर्या नी हा कै नाश्त री तस्तर्या बंटण लागगी । मैं बदरी सूं कैयो—“तस्तर्यां स्यात अंधारे-अंधारे ई वणामनै राख दीवी हुवैला ?”

—“इयां वोदूरामजी रो तप कांजी कमती है । नीतर अँडं धुर गांव में अँडा तमिमा कुण करै है ।”

वारै नटण्यां रो झूचरो गाय रँयो हो, जिण सू धरमशाळा री बोदी भीता गूज रँयी हो । रसिक वराती तस्तर्यां हाय माय ऊंचाय उठै पूग्या । नटण्यां नै वं नी जाणै किण चीज सूं खलचावता सा लखाय रँया हा ।

अेक अघखड़ नटणी जिणरो गळो स्यात भीत मावण खातर नी फगत

इमी वाणी मे गुहार लगावण सारु ई वण्योदो है—वड़वड़ाय रैंयो हो—
 “मंवरियं पट्टावाळा वावू...थांरी जुवानी सुख राखूं...थांरें चांद सरीखो
 फूटरो बेटो जलमं...द्यों-वीरा, मंगत्या नै हाथ रो मंत द्यों।”

छैला वावूआं रो मन इण गुहार मे अग ई नी रम रैंयो हो। वैं आपरी
 जुवानी नै इण अघखड़ नटणी रो बेटो रो जुवानी सूं तोल रैंया हा। बांदू
 रामजी रा मांडेत्यां रैं उठें चल्या जावण सूरसिका रैं खासा सुविधा हुयगी
 ही। वारें हुंवता की संको राखणो पड़तो।

दानी नटणी रो खासा सट्टापोरिया सूर छंकड़ काना में फोहा दाब्यो-
 डिया भाईजी रो कोमल हियो पसीज ई ग्यो। वां लप करतं रुपियेवालो
 सिक्को जेब सूर निकाल्यो अर हाथ ताळकें कर्यो। नटणी ई वारी दानी
 मनस्या समझनै नई आई—“लाओ वावूजी...सदा लिछमी रो बरतारो
 रैवै...।”

“ऊं हूं तनै नी...उण नै भेज...।” भाईजी रो इसारो दानी नटणी
 समझगी। उणनै अँढा संस्कृतिवान मिनखां रो घणो तजरबो रैंयो है,
 स्यात। उण बिना की हील हुज्जत रैं मुँह आडो हाथ दिया गावती आपरी
 जुवान बेटो नै अंगूठें रो धुदो दैय'र आगं करदी। गीतेरण हयाळी पसार
 दीवी।

भाईजी रो दानवीरता मायें इंदर पुसव बिरखा तो नी कीवी पण वारें
 मन रैं आंगणें सैकड़ू कुणा संचनण हुयग्या, जद रुपियें साटें वैं उण जुवान
 नटणी रैं हाथ रो स्पर्श कर सक्या।

अघखड़ जनैती रावणहृत्ये वालें भोपी भोपी मांय रस लैय रैंया हा।
 ज्यू-ज्यू भोपी भूमल रो रूप बखान करती। जनैती जावती जुवानी रैं
 ओळारें “हम्मै-हम्मै बूढी हुय जावोला...” कैंय'र स्यात खुद नै ई कैंय
 रैंमा हुसी कैं बूढा हुय जावोला, पण हद है इण उमर रो फिटार्ई नै कैं वैं
 दिनो दिन बूढा हुवता ई जाय रैंया है।

मैं बदरी रो वावळियो पकड़'र कैंयो—“चाल यार...धूम'र गांव
 देख आवा।”

—“मन! कुण कर्यो है?” बदरी बोल्यो—“मैं तयार हूं पण पाछा
 येगा आवाला मयू कैं तावड़ियो अकरो पड़तो जाय रैंयो है।”

धरमगाळा सूनू निवळ'र म्है टाई में आयग्या । गवाड़ में लाग्योड़ीं
 टूट्यां घडा अर घूषटा सूनू अकमेक हुयोड़ी सुगायां सूनू ढकीज रैयी हो ।
 ताँव-चौड़े टाई मांग मोकळा घेर-धुमेर विरछ सैराय रैया हा । अक नीम
 री छियां में म्हांरी बरातवाळी सॉरी उभी देखने बदरी मनै उठै लैयग्यो ।
 री जाणै उणने किया ठा साम्यो कै नॉरी रो झाइवर जदों साव । बदरी
 झाइवर सूनू बूझ्यो,—“कियां झाइवर साव अठै ई विराजोला का दूजी...”
 —“अठै ठैर्यो किया पार पड़ेला बाबू साव...” झाइवर मजाकिया
 भीरता सूनू कैयो, “कनलै गाव सूनू अक बरात उठावणी है । वस, अब
 बान्या ई, इयां ई चाय-भाणी मे मोड़ो कर दिन्हो ।”

—“कुण-से गांव सूनू ?” बदरी बूझ्यो अर ताळी री फटकार सूनू
 इगारो करतो जदों ई मांग लियो ।

—“गिराजसर सूनू आगलो...काजी नाम...?”

—“गिराजसर जावोला ?” बदरी जाणै चिमक पड़्यो—“अठै सूनू
 कितो अळगो है गिराजसर ?”

...“बयूं चालणो है कांजी गिराजसर, “झाइवर हंस'र बूझ्यो ।

...“चालणो तो...” बदरी म्हांरै कानी देख्यो तो उणरै चैरै मायै
 मनै संशय निजर आयो ।

मैं बूझ्यो, “गिराजसर पारो सासरो है कांजी, बदरी ?”

...“अरे नही मास्टर तू तो मजाक करे...जठै कोई मोटरगाडी,
 मैसागाडी नी जावै उठै बंदे रो सासरो...हु...ह...”

...“जणै पछै गिराजसर रै नांव सूनू इतो गळगळो हुवण री काजी
 जरूत है ?”

...“भाया तू सरकारी नौकर है, तनै कांजी ठाः आ प्राइवेट दूकान-
 दारी कांजी चीज है । पैली कने सूनू समान द्यो, पछै पइसां खातर लारै
 भाजी...”

“वस, वस । मैं समझ्यो ।” मैं बिचाळै ई कैयो, “तो वठै आपने
 उधार वसूलण नै जावणो है ?”

“हां पार । अर जावतां ई पईसा तता मिल जावैला...कियां झाइवर
 साव गिराजसर कितो ताळ में पूग जावोला ?”

भलेर देनी ।

—“हा, वो मैं अवार कइ देसू बदरी भाईजी” पण म्हारें घरें कुण्डो कर्या बिना विल्कुल नो जावण दू सा ।” हडमान अणमुणी कर्ता आपरो जेब सू नोट निकाल्या अर गिणेर अंक सी तीम रिपिया बदरी नै भन्ना दिन्हा । बदरी रिपिया हाथ माय निया अणवस-सो म्हारें कानी देखण लाग्यो ।

—“चाय आवे तद ताई आप अठ ई बिराजो” मैं बामण दादो री नूयान में निगह कर आवू कोई हरी सब्जी हुवें तो” बामण दादो इण गांव रो ‘बडोचजार’ हे जठे साग-तरकारी सू सैय’र सोने-चांदी री खरीद बेच हुवें” हडमान हंस’र बत्तायो अर कैयो, “अवार चाय आवे अर ह ई आवू, ये अठ ई आराम करो ।”

मनै तिरग लाग्योडो हो । मैं मोचरो, चाय ल्यावण वालै सू पाणी मंगाऊना । हडमान उतावळो-सो निकळ्यो । मैं हडमान रै हियें री हुनस रो असर बदरी रै खैरें माथ सोधणो चावतो । उणरें खैरें रो रग उड्योडो हो । म्हा सू निजर मिलतां ई बोल्थो — “मास्टर, आज तो फसग्या” ।

मैं बदरी रै इण अणमोख्य बीहार सू अचंमै मांय पढायो । तद ई बदरी फँस कैयो, — “चाल” अवे उभो नैवण मांय ई मुसीबत है” चात तनै रस्तें माय बताऊना, चाल, आज्या ।

बदरी फँस म्हारो बांवलियो पकड्यो अर उण कच्चे आसरे सू खैच’र मनै यारै लैय आयो । मैं उणनै रोक’र बूझतो, पण उणरी बदहवासी देखनै मनै भी किणी अणहुणी री आशंका लखाई । तरै-तरै रा अनुमान साधतो मैं बदरी रै नारै बोलबालो चाल पड्यो ।

गाव री सीव सू यारै निकळ आया पछै ही बदरी निढाई सू सांस भरी । मैं तेज चालण सू कोभी तरिया हाफ चुक्यो हो । दोबां री सासा सावळ हुई तद मैं ब्रइयो, “बदरी, छेकड़ तनै कांभी निजइ आयग्यो हो,” गाव माय थारी किणो सू दुस्मणी तो नीं है ?”

— “दुस्मणी अर इण गांव माय ?” बदरी हँस्यो तो म्हारें अचूंमै री कोई सीव नी रैयो ।

— “हद है तू अवे हंस रैयो है ।” मैं पं

—“अब रोवणै सू कांभी फायदो ? रोवणो तो तद पड़तो जद उण कुम्हार रै अठै कच्ची रसोई खा'र जनेऊ नै लाज मारतो । थारै में मास्टर पढ़ लिख'र भी अक्कल नो आई । यार, आपां बांमणा रै घरै जाया-जलम्या आं काह फमीण जातां रै घरै रसोई जीमण लाग्या तो,...तो आपांनै कुण बूझैला रे ?”

—“बदरी...।” म्हारी चीख निकळगी

—“बोल मास्टर.....समझदारी करी नो में ?”

—“वो बिचारो साग तरकारी लैय'र आवैला, थां पिडतजी महा-राज खातर । उणरै दिल मायै कांभी बीतैला ?”

—“तू दिल री बात करै, अठै घरम मायै कांभी बीतती ?”

—“उण बुलाया कोनी ह, आपां हो गया ह ।”

—“बहस मत कर मास्टर । मनै म्हारा पईसा मिलम्या, बात आई-गई । चाल अब बोदूराम जी रै पोतै री बरात में जीमांला...साथो चाल...।” कैयर बदरी अक पगडांडी रो रुख कर लियो ।

मैं मुड'र देख्यो, हडमान रो गांव कठई घोरं लारै लुकम्यो हो । उण पगडांडी कोस भर नीठ धम्या हुवांला कै म्हां दोवां रै मुंडै सू अकै सागै निकळ्यो, “तिस्स लाग रैयी है ।”

मैं देख्यो बदरी रो मुंडो सूख चुक्यो हो । उणरै होठां मायै पापड़यां जमगी ही । मैं कैयो,—“अ रस्तं माय आवता फोगड़ा सुरड़-सुरड़ नै चिगळ बौकर तिस्स नी लागैला । घंटा खण में तो पूग ई जावाला...।”

“फोगड़ा घूसणै सू तो तिस्स बत्ती लागै है, मास्टर ।” कैवतां उण अक झूपड़ी कानी इशारो किया,—“वा देख, घोरै मायै झूपड़ी है, स्यात पाणी भी मिलैला...।”

झूपड़ी देखनै दोवां माय फुरती-सी आयगी । गैलै सू टळनै झूपड़ी नई पूगा । माय जाय'र देख्यो तो आप-आप रै भाग मायै रोवणै री जची । घडै रै नाव मायै अक फूटोडो ठीगळो म्हां दोवां रो मुंडो चिगाय रैयो हो । उण ठीगळै नै देख'र तो म्हांरो तिरस औरं बघगी । बार-बार लुखा होठां मायै जीभ फेरनै आलाकर रैया ह, पण सागै-सागै ओ भी लखावै हो जाणै जीभ मायै धूंक आंम ई नी रैयो है । कंठ तो जाणै चिपम्या हुसो । बदरी

✽

मुंडो सटकाय नै रोवणखाली आवाज माय कैयो, “अबै ?”

म्हारो खांधो अपड़यां बदरी आख्यां बंद कर्मा चाल रैयो हो । जूतयो सू उछळती गरम ओकळ सू गुद्दी भरीजती जावै ही । ज्यूं-ज्यूं फाटक नैहो आय रैयो हो, म्हारै मांय नूवा प्राण सचरीज रैया हा ।

जाणै फाटक ताई पूगण रो ई आखरी मत हो बदरी में । फ्रांसिग सूं परली कानी, टापी सू पैली, अक वोरटी हेटै पूग'र बदरी म्हारो खांधो छोंड दिन्हो अर जमीन सूषण लागो । में भट करतो टापी कानी लंपयो ।

टापी मे ऊंच करतो मिनख मनै पछै निजर आयो, पैली में पाणी रो घडो दीठो । अचीत्यो ई मिनख देखनै धो अघबूढो मिनख हड़बड़ायो अर उण उठनै दकाल करी—“ठेर ।”

म्हारा हाय-मय उणरी दकाल सुणनै हा जठै रा बठै ई रैयग्या । म्हारै हाय में छल्योड़ी डोनी उण खोसली अर कैयो—“इया पाणी पी'र तनै मरणो है कांभी...पैली थोड़ो मुस्ता से ।”

में जाणै रोय पड़घो होवूं, बोल्यो, “बारै म्हारो भायलो है...तिस्ते मरैबेहोस हुययो है ।”

“—की कोनी हुवै, उणरै ।” उण ध्यावस सूं कैयो । फैंह छल्योड़ डोली लैयनै खुद बारै आयो ।

थोड़ा सुस्ताया पछै चळू-चळू पाणी पाय'र उण इण बेतुकी जात्रा रो हालचाल बूझयो । म्हारै सक्षेप में बतायां धो बोल्यो —“शहरी लागो... पदया-सिग्या हो, वामण हो.....हूँ” उणरी इण गैरी ‘हूँ’ रो अरघ म्हारी समझ मांय नी आयो । वो पलट'र बदरी कानी मुडयो अर बोल्यो—“पिडतजी, म्हारै कानी देखो...पाणी पीयां सू पैली नी सर्यो, पीयां पछै जात नी बूझोला ?”

बदरी मुंडो उठाय'र देख्यो पण बोल्यो की नी ।

—“में हरिजन हूं, जात रो भंगी । ओ घड़ो, जिणरो पाणी पीय'र थारी आख्यां खुनी है, म्हारो ई है । वामण रो घरम लैवण रो गुनो कर में भी नरक रो भागीदार हुयग्यो...बोलो हुयो क नी ?”

बदरी आख्यां फाड़या मिनख कानी देखतो रैयो । में अकानी ऊभो दोष् नै देख रैयो हो ।

वो आदमी चुप हुयग्यो, तो बदरी सिसकतो उठ्यो अर आगँ लंक'र उण रै खाधै माथै हाय राख दियो, “भगवान...मनै माफ करज्यो भगवान” ।

—“चलो वामण देवता...टापी री छियां मांय थोड़ो अराम करल्यो.. की ताळ ठेर'र भरपेट पाणी पीयर निकळ्या । मैं रस्तो पकड़ावणनै सामै चालूला की दूर...।” मिनख हंसनै कैयो अर टापी कानी बहीर हुयग्यो ।

बदरी मारी पगा सू आदमी रै लारै चाल रैंयो हो । मैं आवाज दी,
—“बदरी...।”

“मास्टर, वहस मत कर । चुपचाप टापी में चल्यो आ...।” हार्योड़ै लहजै मे बदरी कैयो तो मैं देखतो रैंयग्यो ।

लारै रैंयग्या सगळा घोरा री रेत जाणै बदरी रै चरै माथै पसरगी ।

बी० डी० ओ०

उणन सखावै के—वो जट्ट भरियोड़ो गुहो है जिणन रस्तै रै सूअ बिचाळै नाख्योड़ो है। लोगां रै पगां तळै आय'र पिचकै, पाछो फूल जावै। पण आज तो हृद ही हुयगी। अक किणो उणन भुकनै उठायो अर बिचाळै सू दो टुकड़ा करनै नाख्यो।

होळै सुर मांय बूझ्योड़ो सवाल बार बार पड़धुन हुय'र उणरै काना में खुमण लागतो—“तू आलोक ही है नी ? तूं आलोक ही है नी ? हुंस्यार आलोक ? ...” •

उफ ! ओ सुणती बखत वो भर क्यू नी गयो !

“म्हारो हुंस्यार आलोक हुयां सू थारो कांअी बिगड़ग्यो।” उणन सखावै हो—‘हुंस्यार आलोक, हुंस्यार आलोक’ अक अटक्योड़ै रिकाडं रै दाई उणरै काना में लगोतार बाज रैयो है।

इण बखत वो गैलो हुयनै चिरछावण बाळो ई हो के सामे आवतै भिनख न देख'र वो इयां नी कर सक्यो।

पनवाड़ी री दूकान रै कनेकर निकळता अलसेट में ई उण खुदोखुद नै उणरै पीसी मे निरख्यो। उण देख्यो उणरी आख्यां रीस अर अपमान री दाभ सू सिलग रैयी है। खुद री ही राती चुट आख्यां सू उणन डर मंसूसण लाग्यो।

‘बजार नैड’ आवतां-आवतां उण आपरो रुख पार्क कानो कर लिन्हो। पार्क मे बैठ'र उणरो जीव कर्यो घणै [जोर-जोर सू रोवै। इतो रोवै के

उणरें मांय जको भी घिरोळा साथ रेंयो है वो स्मो पंघळ'र धारें आम जावं अर वो खुद नै हुळको मँसूम करे ।

पार्क में बैठ'र उण विलां रे वंडळ नै दूव माथे पटक नांरयो अर वांनै घूरण लाग्यो । उण कंडी निमरमी नौकरी अपडली । जटं दिनुगें, मिह्या, दोफारा घूम्या पछें स्यावासी री ठोड़ अपमान मिलें । इण सू तो आछो रेंवतो किणी दूजी नौकरी मिलण तक वो बेकार रेंय जावतो ।

ए० ई० री घणी वीणत्या करनै तो उण आ नौकरी पाई अर वा भी बिल डिस्ट्रीब्यूशन री । पैंतीस हजार री आवादी वालें उणरो कस्वो अर अकलो वो उण विभाग रो बिल बाटणियो । उणनै अवं समझ में आयो कै उणरें ही इण पद माथे काम करण वालें कर्मचारी इण पद नै खाली क्यूं करग्यो ?

सर सर मे उणनै आ नौकरी घणी खोली लायी । किणी अफमर रो बंधाण नी, फगत घूमणो सें'र माय ।

पैलड़े महीणै री तिणखा सैवतां उणनै घणो अचंभो हुयो । उणनै तीस दिनां रा दो सौ चाळीस रिपिया री ठोड़ दो सौ दस रिपिया दिया तो उण होळें से प्रतिरोध रें सुर मांय वूझ्यो—“साब आठ रिपिया रोज रें हेसाब सू तो दो सौ चाळीस रिपिया हुवं, अे तो दो सौ दस ही है ? तद तिणखा बाटण वालें जे० ई० एन० रें नैड उभा कर्मचारी अकं सागें हँस्या । वो सिटपिटायग्यो । दुबारा उण की नी वूझ्यो । जे० ई० एन० उणरी नादानी माथे मुळक नै रेंयग्यो ।

उणरें ई दूजें मस्टररोल माथी, जको ट्यूबवेल माथे ड्यूटी देवें, समझा वण लाग्यो—“तू तो यार पढ्यो-लिख्यो हुय'र भी अणपडां सू बागदो निकळ्यो । मस्टररोल कर्मचारिया नै कदै ई पूरी तिणखा मिले है कांअी ? तीन दिन री कटौती कटी चौईस रिपिया अर यूनियन रो चदो कटग्यो छहे रिपिया—अवं बोस कमती कियां मिल्या ?”

“यूनियन रो चंदो तो पक्कावाळा सू लिरीअणो चाहीअें अर तीन दिन री कटौती किण बात री ? में तो पूरा तीस दिन काम कर्यो है ?”

“धारी समझ माय नी आवैला—ओ नैम है ।” ट्यूबवेल साथी उणरें प्रदतां री झुंझळ में नी फसणो जावतो । वो उणनै अकलो छोड़'र वूहो

गयो ।

तद सू बो भली मांत जाणग्यो कै नौकरी करण खातर तीस रिपिया कटावण रो नैम हुवे ।

उण कटौतियां नै सैण कर ली, पण अजकालेँ जको उणरै सागै बीत रैयो है, इणने वो सैण किण भांत कर सकै ।

आज ही उण किण तरे री हेसी उडाऊ निजरां रो सामनो कर्यो हो । उणनै तद लाग्यो कै वो वावनी हुयग्यो है अर थोड़ी ताळ और रैयो तो वावने री जग्या जमी मायै चालतो-फिरतो मकोडो हुय जावैला ।

उणनै फैंह खुदोखुद मायै रीस आवण लागगी कै क्यूं उण आ नौकरी करी जठै पल-पल उणरी महत्त्वकाक्षाया नै कुठित हुवणी पड़ै । स्वामिमान कबोयो जावै ।

वै सगळा नजारा उणरै सामेँ टुकडा-टुकडां मे उभा हुयग्या जका मोह भागण रां साखी है ।



एक-तीन-पाच-सात अर इण तरै वो पूरी उणतीस पेड़्यां फदाकग्यो । दो-दो पेड़ियां मैली चढण सू उणरी सास भरीजगी । अबै पेड़ियां नी बारह-दो हो । सांसा नै काबू में करतो वो बारहदे रै फसं नै देख रैयो हो । हांथ माय पकड़्या बिलां नै फडफडावतो वो की छिणां ताईं स्यात उमो हैली मे वापर्योडै सरमाटै रो जामजो लैवतो रैयो । कोई वारै नी आयो । 'किणी नै वारै नी आवता देख'र मजबूरण उण हेलो पाइयो—“जैबंद-लाल रगलाल...”

की ताळ पछैँ ओक बिहारी छोकरो आय'र उणरै साम्हो उमो हुयग्यो । “बया डाक है ?”

“नही... पाणी रा बिल है ।” उण दो पाना निकाळ'र छोकरै नै मंला दिमा ।

उणनै पूरी बिहारी जात मायै खीरु हुवण लागगी । कंड़ी धोंचू अर पागल जात है । बिला रै ढिगलै नै देख'र भी डाक रै वारै मे वूझै ।

अवकल रा इता उजीर है जणै ई तो साठ रिपिया महीर्ण में सेठानिया
 रा पूर पल्ला घोवण सूं लैय'र भाड़ू बुहारी तक रो आखों खोरसो करै ।
 सेठिया लोगां रा उत्तयोड़ा कपड़ा पैर'र भी राजी ।

अबै वो बिकोवड़ी मंजल रै गंदलै-सँ मकान रो दरजो छटसटा रैयो
 हो । घणी ताळ कटो बजायां पछै माय सूं खरखरावती आवाज आई
 “कुण है ?”

“मैं हूँ पाणी रा बिल बाळो ।”

“ठैरो, खोलू ।”

दरज में बूढळी प्रगट हुई ।

“मायो दुखै हो बेटा, इण खातर सोयगी...आज अळस पोर सूं ई
 मायें माय घोवो उठ रैयो हो ।” बिना बूझ्यां ही बूढळी दरजो बंद अर
 मौड़ी खोलण रो कारण बता दिन्हो ।

“मायो दुखै है तो मैं किसो अमृतांजन बांट रैयो हूँ ।” कैवण रो मन
 हुयो पण कैयो कोनी ।

बिल भलाय'र वो आवण लाग्यो तो बूढळी टोक्यो—“अऽऽ ठैरी तो
 बेटा ।”

वो ठैरग्यो ।

“देखी तो बेटा, किता रुपिया रो है ओ बिल ।”

“दस रिपिया रो ।” उण बिना देख्या ई लापरवाही सूं कैयो अर
 जावण लाग्यो । उण फेरुं टोक दिन्हो—“पण लारली दफै तो सात
 रिपिया सितर पईसा ही हा नी ?”

“हां, हा पण अबै बधा दिन्हा ।” कैय'र वो आगें बूहोग्यो । गळी रै
 छँकड़लै कनारें ताई बिल बांट'र वो पाछो आयो तो बूढळी उणनै उठई
 बिल भाख्यां भिली ।

“पईसा तो बधा दिया चोखी बात, पण पाणी आजकालें कम आवै, आ
 कांजी बात है ? पईसा लेवो जणा पाणी तो पूरसल दिया करो ।” बूढळी
 बड़बड़ा रैयी ही अर उणनै लखावै हो जाणै आखें बाटर चक्सं रो बिगड़ी
 व्यवस्था रो अंक अंकलो वो ई जिम्मेदार है ।

उण बळती निजरा सूं बूढळी कानी देख्यो ।

“पाणी कांओ में देवू, म्हारो काम तो बिल बांटणो है।”

आ बात वो दिन में बीसू दर्फ दोहरावै।

वो बूढ़ी सूं पिठ छुदाय'र दूजी गळी रै पाटे नैडो आयग्यो। जठ उणरी ही उमर रा कीं छोकरा बैठ्या तास खेल रैया हा। उणनै देख्यो तो—अेकर सगळा खेल रोक दियो अर बूझण लाग्या—“क्यूँ बिल है म्हारो।”

“हां है।” वो धिरजाई सूं सगळा रा बिल निकालण लाग्यो।

छोकरां नै बिल भलाय'र वो चूनगरां रै मोहल्ले में उतरग्यो। की मुसलमान लुगायां चोपाळ रै पीपळ तळें बैठी हताई कर रैंयो ही। उणनै आवतो देख्यो तो सगळां री निजर्या उण मायें टिकगी। वारी हताई रा सुर उणरै कानां में पड़्या तो वो सहमग्यो। वैं कैय रैंमी ही—

“जै पाणी पूरसस पावणो है तो अेक ही उपाय है, इण बिल बांटण वालें नै पीपळ सूं बांध देवो...अफसर आयनै छुडा लै जायसी...तद ठा: लागैला करम फुट्यां नै। आ गिरमी री रत अर टोपै-टोपै पाणी नै तरसां। ऊपर सूं अे बूहा आवै हरेक महीण'ओ बिल ह्यो माटर सपलाई री।”

उणनै पाछो सिरकणें में ही भलो लखायो। बिना बिल बांट्यां ही वो पाछो मुड़ग्यो। उणनै मालम है अे लुगायां जितो नी करै बितो ई थोड़ो है। किणी आवतै-जावतै नै पकड़ा देवैला इण गळी रा बिल।

दो-तीन गली दूर आ जायां पछें भी उणनै लखावतो रैंयो, जाणै लुगाया उणरो तारो करती आय रैंयी है। बदहाल-सो वो अेक सिराहे मायें आय'र उभो हुयग्यो। सांसा नै ठीक करतो वो सोचण लागग्यो। खुद रै सुखी जीवण री इछा नै इण भांत तो वो कदेई पूरी नी कर सकैला। नौकरी लागता ई उण सोच्यो हो-आछो ई तो है छह महीणा टेम्परेरी रैंयां पछें वो खुद ही पबको हुय जावैला। तद बरस दो बरस में पदोन्नति कर कलकं वण जावैला। फहं वो सुखी हुयसी। उणरो नान्हो-सो परिवार है—कलकी जीवण सूं समूचें परिवार री पेट पोख लैवैला। पण लागं आ छह महीणा री लौह री भीत वो किण भांत ही नी डाक पावैला। इण तरै सुमिता नै समझाया करतो हो—“सुमिता, तू मन लगाय'र क्यूँ कोती

पढ़ें—पढ़ाई में घरवालों का परमा लाग है नी।”

उणरें दानेपणें मायें सुमिता [मुळकन कंवतो— “पढ़णें री दरका तो तन है, तन नौकरी करणी है, म्हा छोरियां रो काभी...।”

तद वो गरवीज जावतो आपरें हुस्यार हुवणें मायें अर ताणा-वेज करतो कैं वो पणों पढ़ेला अर घणों आछी नौकरी करेला।

वो दानेपणें सू कंवतो—“हा भई तन भणाई करन करणों ही कांभी है...म्हाने पढ़णो हे अर में पढ़ रैंयो हू।” घर री हालत जाणतां यका भी वो किया सोच लंवतो कैं वो घणों पढ़ेला।

आठवी पास करनें वो हाईस्कूल में आयग्यो। सुमिता आठवी पछें उणनै आज ही मिली। तीन वरमा पछें उणनै मामी पाय'र वो हड़बड़ाय सो गयो।

जिण सुमिता नैं वो घडल्लें सू डाट दिया करतो। उण सू आज निजरां नी मिला सबयो। बिला रं दिगसैं माय सू दो पाना निकाळ'र उणनै भला दिग्हा अर जावण लागग्यो। ओजू वो दो पग ही नीं चाल पायो कैं उणनै सुणीग्यो—“तू आलोक ही है नी...”

“हां।” इण सू बंसी वो फी नी कैंय पायो। उणरी वा ‘हां’ घणी मार खायां पछें सीकारणें जंडी ही। हैली सू हेटें उत्तरतां उणरी पीड्यां काप रैंयी ही। अंडी गरवीली मुळक नैं वो देख कियां सबयो। कांभी कांभी नी कैंय रैंयी ही वा मुळक—“लगन मू पढाई करनें घणी आछी अफमरी पाई...घणो घमड हो नी भणाई मायें ? ...।

पाकें माय बैठ्यो वो दूध नैं दीवा हाथा सू लंच रैंयो हो। “हा हां घणो घमड हो...ओजू कांभी मरग्यो घमड.....नौकरी साटें घमड थोडी बेच सू।”

अक धिड निदचै धारनै वो ऑफिस कानी चाल पड़्यो ऑफिस रें दरजें मायें ही दूलीचद सामो मिलग्यो। उण सू टकरावता ई वो सदा दाई चहक्यो—“ओ हो बी. डी. ओ. आज घणो राजी निजर आय रैंयो है। पण दोस्त की नूंवी खबर रो भी ठा: है ?”

“कैडी खबर ?” उणरें जाणन मांय किणी तरें री उतावळ नी ही। “घणी कोभी खबर है बी. डी. ओ., पण तूं फिकर मत करजें, में ए० ई०

सू फय दू ता...तू भी ओकर उणरें घर जाय'र पंग चंपी कर आइज्यो...
 पीफ साव रो सख आदेश है कैं नूँवा मस्टर रोल कर्मचारियाँ रो ठोड़
 इन्टरव्यू सू भर्ती सी जावेला, पण तू चित्या ना कर, थारें गभीर सुभाव रें
 कारण ए० ई० या सू प्रभावित है, बस ! थोड़ी सी पगचपी भी जरूरत
 है..." बात रातम करतां दूलीचंद आंख मारी ।

—“ए० ई० रो पगचंपी करेला म्हारो जूती ।” उण मिर भटक'र
 हियो सी दूलीचंद अणबोल रेंवग्यो । वो फुमफुमायो—“बी०डी०ओ०...”
 “हां...हां...” वो मुल्लग्यो ।

पांन लागग्यो

“गोपाळजी नै पांन लडग्यो । वै तीन दिनां सू खेत मांय हा । उठै कोई औरू लडग्यो । गाव रै आधीटै आवता ई बेहोस हुयग्या ।” घर मांय आवता ई घरवाळी सबसू पैली ओ समचार बताया । वा हाथ रो काम सळटा रैयी ही ।

मैं हाथ-मुंडो घोयर चौके मे बैठण जाय रैयो हो । उणरी आ बात सुण'र भूख न्हासगी । “पछै, पछै कांजी कर्यो ? अबै गाव तो लियाया नी ? हणै कियां है वो ?” म्हारी इण उतावळ सू जाणै उणरै कोई फरक नी पड़घो । वा आपरी उणी सुस्त रफतार सूं काम कर्या जावै ही ।

भाङ्ग, जिण सू वा चौकी साफ कर रैयी ही, हाथ माय लिया-लिया ही आंटी मुंडो कर'र कैयो—“अबार धान मायै है...” धान सू उणरो मतळव गोमाजी रै धान सू हो । औरू लडघोड़ै रो पैलीपोत उपचार अठै ई हुवतो आयो है ।

मैं सुरत कपडा पैर'र धान मायै पूगण नै त्यार हुयग्यो । जावता-जावता घरवाळी टोकी—“जीम तो जावो ।” उणरी इण बात मायै भाल तो घणी आई, पण मैं फगत अकरी मीट सू खोवतो वारै निकळग्यो ।

गोपाळ म्हारो वाळगोठियो रैयो है, अवार लारला चुणावा में म्हारो उण सू मनमुटाव हुयग्यो । चुणाव सू पैली वो म्हारै कनै राय लैवण नै आयो हो कैं आपां नै किणरो 'सपोर्ट' करणो चाहीजै । मैं उणनै साफ-साफ कैय दिन्हो हो—“जात लारै नी अड्यङ्गो है...तू तो जाणै,

आपारे छेतर में घारी जात बाळां री घणेर है। अठे जको भी आवैला, फगत जात रे नाब मू बोट मागण न आवैला। गांव री दिक्कतां था सू लुक्कोड़ी कोनी। कोई वारो निपटारो करै, तो आपा न कांओ दोराई है? किणी भी जात रो क्यू नी हुवै, आपा घणो कराला उणरो सपोटे अर खूब दिरावाला भोट।”

पण वो भोरीजग्यो। लारलो एम० एल० ए० जको सत्तारूढ़ पार्टी रो हुवण रे सार्ग-सार्गे उणरी ही जात रो है, इण दफे फेरुं चुणाव रे मोके गांव में आयो। एम० एल० ए० रे प्रमामंडल न कुण तोई। घणो ई उण गाव रे विकास सारू कोई काम नी कियो। पूरा पाच साल माय चावै लोग उणरा दरशन नी किया हुवै...।

एम० एल० ए० चुणाव रे ठीक पाच दिन पैली गाव बाळां न की स्यानदार पैतरा दिसाया, जिणरी फेट में आखो गाव आयग्यो। इण सड़क-बीजळी बिहूण गाव माय, जिया-किया जिन्नड़ी दोवण बाळा खातर ओ दोवू ई बीजा किणी समस्या रो नाब नी है। बिना बीजळी अर सड़क रे इण गांव रा टावर जुवान अर जुवान बूढा हुवता रैया है। गाव री प्राइमरी ताईस्कूल में भणीज्यां पछै, पांच कोस अलग बड़े गाव में जठे दसवी ताई री स्कूल है, मांय पढ़ण जावण बाळा की स्कूलिया जरूर कदै-कदै नाक मैळो-मैळो करै के आपा रे अठे भी ऊंची स्कूल, सड़क अर बीजळी हुवणी चाहीजै, पण बूढा-अधबूढा लोगां री समस्या सड़क अर बीजळी कदैई कोनी रैया। वारै खातर तो इण गांव री खास समस्या पाणी है। जिणनै पीपलर भिनख, डांगरा अर जिनावर जीवता रैय सकै।

गाव रे टाई मांय पीपल-नीम रे जोरदार घेर बिचाळै गांव रो कुवो है। कुवो अँहो स्यानदार, जिणरे दोवू कानी इता मोटा-मोटा हौद है के समूचा छलीज जावै, तो गांव बाळा बीस दिन ताई ठाठ सू पाणी पीवो। एम० एल० ए० आ ही हौदा माय ऊमर तो गाव बाळां न कैयो हो—
“अवै ओ हौद कदै ई खाली कोनी रैवै। इणा मांय आठ पौर चौईस घड़ी मीठो पाणी छल्योडो रैसी...अवै कोई डोर-डांगरो नी बिरहाइजैला, नी ई स्यारी-आंगो करणो पड़ैला।”

कुवो वांक्तो रामधन मुंडो फाड़्यां एम० एल० ए० कानी देखतो

रेंगग्यो। उणरें मुड़े माथें गुलाल-सी बिखरगी...उणनं तो बस, अकई बात चोखी लागी। 'स्यारी-आंगो नी निकालनो पड़ैला।' जीवो एम० एल० ए० साब, थारो बस बर्ष। अठे धापू तीज दिन बोदा खल्ला पराय लाव-बडस पकड़ा देवें, जा आंगो निकाळ आय...।

एम० एल० ए० चाल'र चाठ ताई आयो। चाठ माय सूं पाणी हथाळी मे लेंय'र गाव बाळा कानी घूमग्यो।—“ओ पाणी है? (गांव बाळा री तो मँकडूं पीढ्यां इणनं पाणी मान'र ही पीवती आई है।) हु...ह। जिणनं अणजाण्यें मे पचु पोय लेंवें, तो मर जावें, तिरसो आदमी पीयलें तो बिरहा जावें...कान फाडना पड़ें!”

नीचें ऊभी पणिहारियां घूघटें री कोर सूं अकटक देख्यो जावें ही, एम० एल० ए० साब नें। एम० एल० ए० साब खातर तो अे पणिहारियां भी मोट ही। वैं बां कानी घूमग्या। हौद सूं नीचो सुल्लनं कँवण लाग्—“अबै आ बँन-बेट्या नें इण खारें पाणी खातर दोजख भुगतणें री जखत कोनी रैवैला अर नी ही घर सँजाय'र इण खारें बाकळ मांय मीठो पान'र मिलानें री दरकार रैवैला। बस, घरें बेट्यां मीठो पाणी मिलैला। बँन-बेट्या नें आखें दिन अठे ताबड़ें में तपणें री कोई दरकार नी पड़ैला।”

नीचें ऊभी लुगायां री आख्या मांय सुख रा डोरा तिरण लाग्या, बाने सखाय रैयो हो जाणें वारें सिर माथें मूण नी है...आ भी कोई जिद-गाणी है, आलो दिन अठे सूं घड़ा ढोवती रैवो; फँस घर री कुंड मांय में पालर निकाळ'र मिलावो इण माय, सँर मांय तो कोई लुगाई पाणी लँवण नी जावें।

कुवै री सारण मांय उभी ऊंट भी एम० एल० ए० नें निरख रैयो हो, 'बो आराम सूं चीठ रैयो हो, उण अणबोल ओठाह नें भी स्यात एम० एल० ए० रें खिडायें मुख री सुगंध आयगी ही, उणरो घणी उणनं चक्कर घाण करण री ठाड़ एम० एल० ए० कानी बाको फाड्यां उभी हों। एम० एल० ए० गावबाळा नें समझा रैयो हो—“पाणी री समस्या तो हल हुई ही समझो, पांच कोस अळमैं काळबास गांव मे ट्यूबवेल लागग्यो। खूब पाणी निकळ्यो है। उठें सूं पाइप तैण जोड़'र आ हौदां नें भर देवांला। की पाइप में (जोर देय'र) सरकार सूं मिकराया है, जका

स्वात आजकाल में ही आरंभ अठे पूरा जावैला । वस, महीने भर में इग गांव में विरहाणै री समस्या हल हुय जावैला । अब रैरी बीजली री समस्या...वा भी अलगी हुय जावैला । पाइपां रै सामे में की खभा भी सिकराया है ।”

साधमाच में एम० एल० ए० साव रै पधार्या रै ठीक पाच घटा बाद ही कच्चे में चालण बाळो ट्रक खभा अर पाइप सैय'र पूगयो । सैर मांय तो ट्रक खाली करवावण खानर मजूर मोघणा पई, पण अठे तो आखो गाव ही मजूर हुययो । किणी उत्तराई कोनी मांगी । सब गोपाळ नै गरव सू देखै हा । बियां अबे गोपाळ एम० एल० ए० साव रो सगो भी हुययो । गोपाळ री डावड़की रो रिइतो एम० एल० ए० आपरें अकलई भाणजें सू तै करग्या । गोपाळ तब सू ई बेंडीजमोडो-सो आखें गाव में एम० एल० ए० रो प्रचार करतो घूम रैयो है । पूरी विरादरी माय थोड़ी चलती बाळो (राज में) अर भण्यो-गुण्यो गोपाळ ही है । एकाध नै छोड'र विरादरी में आंकस है गोपाळ रो ।

ट्रक कुवै रै टाई माय ही खाली हुयो । आखो गांव जाणै पाइप अर खंभा रा दरमण करण नै उमड़ पड़यो । ट्रक खाली हुय'र जाय चुक्यो हो । बूझा-ठाडा अर टावरां रै सामे बूढी लुगामां भी पाइपा नै हाथ लगाय-नगाय देख रैयो ही । अक छोकरे खाली घई जियां बिचली आंगळी सू पाइप बजायो अर नाड़ हलाय'र कैयो—“है तो पक्को ।”

गोपाळ सगळा नै गरव सू देख रैयो हो । उणरी आख्या में सतरंगा सुपना आ-जा रैया हा । वो मन ही मन सोच रैयो हो—“अबे ओ गांव बमन हुय जावैला । सगो है, की तो काण राखें ई ला—“वो फी और भी सोचतो, पण उणरी तिन्द्रा अक छोकरे बोळो खेंच'र भाग दी, “गोपाळ-भईना, मैं तो अक खभो म्हारे बारणें आगे लगवाऊंला । पछे रात नै ठिया दड़ी रमण में की अवलाई नी आवैला । खूब च्यानणो हुयसी ।” उण हाथ री सीध सू वा ठोड भी बसादी, जटै खंभो रोपाणो हो । गोपाळ मुळक'र हामळ भरी—“हा, हा, उठे ही रोपावाला ।”

छोकरे नै जाणै सूरज-चाद साधग्या । वो घरवाळा नै ओ समचार देवण नै भाजग्यो कै उण गोपाळ भईता सू घर आगे खंभो रोपावणो मंजूर-

करवा लिन्हो है।

एम० एल० ए० फेरूँ एम० एल० ए० वणग्यो। जीत रै पछै गोपाळ गांव कानी सू जोरदार माळा पैरावण री बात कैयी, तो म्हा सू रंयीग्यो कोनी। भायलाचारी रै नार्त में उण नै साफ-साफ मना कर दिन्हो चंदो देवण सू, अर समझायो—“गोपाळ, टाडै माय सीमंट रा च्यार पाइप न्खावण सू आपां मीठो पाणी पीवण नी लागग्या। काळवामियै सू अठै ताई पाणी त्यावण खातर अँडा टूकों ई पाइप चाहीजै। भूखै मजन न होई गोपाला.. भूखो तो घाया ई पतीजै।” गोपाळ चिडग्यो। पण में म्हारी बात मायै यिर रैयो। में माळा पैरावण खातर कोई चंदो कोनी दिन्हो अर सद सूं ही वो म्हा सूं कटघो-कटघो रैवण लाग्यो।

गोपाळ तुरत-फुरत आपरी भैम बेच'र तीन हजार अर बाकी गाव वालां सू चंदो कर'र अेम० एल० ए० ने पांच हजार रिपिया री माळा घाल'र जोरदार सुवागत कर्यो। पाडोसी गाव रो सिरपंच भी अँडी सुवागत देल'र दग रैयग्यो। सिरपंच सूं विरोधी इण गाववाळा मत ही मन इण बार गोपाळ नै सिरपंच बणावण री तेवइली।

गाव वाळा नै चुणाव रो उडोकना मेह सू बती रैवै।

□

धान रै नैइ धणी भीड़ भैली हुयगी। गोपाळ रै डील मायै सोजन सी आयगी। पण में जठै अँरु लइयो हो—सूजन भरतग हुयग्यो। पण मायै नीम री पत्या बाण्योड़ी ही। आधी बेहोसी मे धी पायीज रैयो हो। धान रो पुजारी छाणा वाल'र उण मायै धी होम रैयो हो। खीरा मायै धी पड़तां ही जोर सू लपट उठी—सगळा अँकै सामै कैयो, “गोगापीर जोत सैय लीवी।” सगळा सरधा सू हाथ जोड़'र कैयो—“स्याय करग्यो गोगा धणी...।” तासा वजावण वालां नै जाणै जोत रै सामै ही छिन चढगी। बँ डोल अर धांळी और जोर सू पीटण लाग। पुजारी रो भाई, जिण मायै गोगाजी री छियां जावै, जोर जोर सू साकळा री मायै में खावतो नाचण लाग्यो। पण गोपाळ री बेहासी में कोई फरक नी आयो।

मैं अणवस सो उभो हो। वेहोसी न देखता म्हारी चित्या बघती जावै ही। बार-बार अक बात जबान माथे आवती जावै ही—इणने तुरंत सैर बयू नी लैयग्या, उठै स्यात सूई लागती, तो अबार साई होस में आय जावतो। सपे काट्ये न भूछा तो आवणी ही नी चाहीजै। मैं अठी-उठी देखैर सेवा करण वाला माय सू अक नै बूझ्यो—इणने मो कितो पाय दिन्हो?”

“दो किलो...”

“उल्टी कितो हुई?”

“अक भी नी।”

“अक भी नी?...फैर इणने कय मोरण माथे उताप हो? वेगा सू वेगा सैर ले चालो। उठै अस्पताल मे भती करवाला।”

म्हारी बात सू पुजारी समेत सगला चिठग्या—“देख कोनी रैया... बाबै जोत लैयली है।” मैं बाने धीरज सू समझाया, तो हताश लोग तयार हुयग्या। अलगै खड़घो अक आदमी दूजोई सू फैय तो होळी ही रैयो हो... “सैर कांभी रैवण लागग्यो, अपणे आपने औतार ही समझण लागग्यो...” पण मने मुणीजगी। फैर ई मैं उणरी बात रो कोई बुरो कोनी मान्यो।

म्हारे सागे छकई मे गोपाल री सेवा-चाकरी करण खातर तीन आदमी भलै तयार हुयग्या। रस्ते में पावण खातर धी रो पीपो सागे लैय लिन्हो।

रस्ते मे रैय रैयैर अक बात म्हारे माथे में चक्कर काट रैयी ही। ओ तीन दिना सू खेत मे ही हो। इण उन्हाळी री टैम खेत में कर कांभी रैयो हो? ओ तो भर विरखा में ही भीत कम खेत जावतो रैयो है। रैयो नी गयो तो छकई में बैठ्ये रघाराम सू बूझ बैठ्यो—“रघाराम ओ उन्हाळी मे खेत कांभी ल्यावण नै गयो हो?” उण छूटता ई उथळो दिन्हो, जाणे जबाब धड़चा ही बैठो हो—“गांव वालां सू मुंडो सुकोवण नै। गैरन वाला खातर नेताई सौरी कोनी हुवे।” मैं नी समझणे रो भाव दरसायो तो वो कानाफूसी रै अदाज में बोल्यो—“बच्चू, तू हफतो भर सैर मे रैयैर अक दिन छुट्टी कारण नै गाव आवै। तने कांभी ठा: अठै कांभी संकट है?” सवालिया अंदाज में उणरी भवा तण्योड़ी रैयी—“ठा: है तने गांव

री समस्यावां रो ?”

“हां है भाई, इण खातर तो हफते में एक दिन खातर ही सही पण अठे रैवण नै जरूर आवू। मन ओ भी ठा: है, पञ्चीस सात पैली अठे साढे तीन सौ घर हा अर अब पूरा तीन सौ। वै पच्चास घर इण समस्यावां सू डरं नै भाज लिया।”

रुधाराम गळफळो-हुयनै कैयो—“चोखो रैयो, भाज लिया। रोजीना घोखो तो भी खावणो-पढ़णो विचार नै...अब ओ गोपाल है तो कांभी। इण नै भी एम० एल० ए० काअी कम घोखा दिया...रोजीना लोग पाइप-खंभा बजा-बेजार विचारै नै तंग करण लाग्या। जद भी मुणतो कै फलाणी तारीख नै एम० एल० ए० जैपर सू सैर आवैला, तो वो पग जूती घाल्या बिना गाव री बीजली पाणी रा हाल-चाल बूमण भाजतो। तारलै दिनां, मुणा हां, एम० एल० ए० इणनै चट्टो उतर दैय दिन्हो कै काम काम रै तरीकै सू हुवैला। तू बेगो-बेगो अठे मत आया कर। राज रा काम राज रै तरीका सू हुवैला...एम०एल०ए० आपरें भाणजै री सगाई भी बीजी ठोड कर दिन्ही। इण मूं तो ओ एकदम तूटगयो। उणनै एम० एल० ए० सू अंडं धोखै री आस कोनी ही। ओ तो पूजतो...”

रुधाराम बात पूरी करतो, उण सू पैली ही गोपाल नै एक जोरदार उल्टी हुई। लीली...लीली...

“पाणी...” उल्टी हुया उणनै थोडो चेतो सो हुयो। पाणी री मांग सांगे ही इण नै घी पायो।

सैर पूगण में ओजू अेक कोस री छैती बाकी पडी ही। उल्टी हुया रै बावजूद उण माथे वेहोसी धिरती जावै ही। रुधाराम उणनै गोदी में लैय'र होम में ल्यावण रा जतन कर रैयो हो।

मैं सोचूं इणनै साधारण भाप तो नी लड़यो। घणो जैरीलो साप लडयो है। ठा: नी ओ सैर में भी बंचैला कै नी।

थांभ

ढोन् री गड़ागड़ रें समखें वारी छाती माथें जाणें घमीड पड़ रेंया हा ,
 अबें सोग रायळें सू निफळ रेंया हुर्येया । जिण नाजोगी बेमारी नें आखी
 उमर भोंडी, आज वा ही बेरण वणनें आपरो यळ निकाल रेंयी है । वाम
 रा चपड़यां मूं जिण डील रो की कोनी बिगड़घो, उणनें इण दम बेदम कर
 नाख्यो । वा तो अँड़ी सपनं मांय ई नी सांघी ही कै कदैई इण भात मांघी
 ई भाननो पड़ेसा । 'अक्खू-अक्खू' ई करणो पड़ेसा । हुताई मे चित्तम पीवता
 सोग जद घांसी मे अळूभता तो यानें धणी रस आवतो—“और पीवो इण
 मा राठ नें, आखो गुण इण में ही है, अर जे पीवो तो अक्खू-अक्खू करण री
 कै जहत है, आख्यां धारी घांमतां री वारें आय रेंयी है पण फँह ई इण रें
 काठा चिमट रेंया हो ।” पीवण वाळो आपरी आख्या पूँछतो वारी इण
 बात माथें मुळवनें रेंयजावतो । वै कोई नसो नी करता इण मूं कोई तकरार
 भी नी करता । कोई हिम्मत करनै कैयतो तो ई इतो-‘काभी करां बिसन
 पड़्यो लानूजी, पड़तो तो पड़्यो अबें छूटणो हुम्यो ओखो ।’ वै लज-
 खाणो पड़घोईं मिनख नें बुझकारता—“लाडेसर, छूटे कोनी ओ किसो
 अम्मल है, छोड़ण नें सोग उणनें ई छोड़े ई है, हरेक चीज मन मे धिरणा
 कर्या सू छूटे...मन नें घिठ करनै बगाय दो कै इण नें पीवां तो गाये रो
 खून ही पीवां ।”

पण पीवण वाळा वारी अँड़ी बातों री कद गिनरथ करता । वै काना
 ई नी डोरता । इती वानें भी कांभी पड़ी ही जको नसो छोडावण खातर

सुदरी चामड़ी बाढ़े । कोई छोड़े तो चोगो नी छोड़े तो जाय'र घंड में पड़ो । वाने तो लागी जिसो माख दी । अब आगलां रें पोसावती हुवे ज्य करो । घणो कंवण रो जमानो कोनी...क्यू के कोई किणरो केय माने तो साथ कोनी-कर मगळा आपरी जची-जची है...पछे कर्ण में कांथी सा है...?

वा आपरी जिदगी में लोगा नें कांथी कांथी नीं कंयो । पण जिण आदमी आखी जिदगाणी में किणी भान रो नसो-पतो नी किमो वो इण भात दम रो मिकार हुय जावैना आ तो वा कर्द ई नी सोची ही । पछेती में जावना इण भात माचो झालण सूं तो पांच साल पैली रामजी उठा लैवना तो किमो फोर खाडी हुवे ही । आ तो उण जई आदमी खातर रोज मरण जई वात हुयगी । समझ पकड़्या पछे स्पात ई कोई होळी रैयी हुवेना जद रावळे सूं निकळतो डोल अकमो ई गड़गड़ावतो बिना वाने होळी मगळावण नें बूहो जावै ।

डोल रो अँक अँक गड़गडाट बारै मार्थ में बाज रैयी हो । लोग होळी घोरिये पूग्या हुयसी । पूजा पछे होळी मंगळावणी सरु कर दी हुसी । पण थाम कुण निकाळ्यो हुवेना । समझ पकड़्या सूं लैय'र सारली होळी ताई तो थाम वें ई निकाळता रैया है ।

वै औचक नें बँठा हुवण नें खस्या पण बँठा हुवताई घांसी रो अँडो अळूझो आयो के तकिये माथे अघडांखा हुयने खेखार धूकण लागी । दम सूं उपड़ रैयी ही पण चितार सूं होळी रो थाम हेठे नीं उतर रैयी हो । आज पहली बार वै होळी मगळावण नें नी जाय सक्या । अँडा काम खातर वाने कर्दै ई तेडां रो जरूत कोनी रैयी । मरण-परम्ये का होळी-दिवाळी हाजर नी हुवे वो भितख ई किमो ?

बास में कोई बल जावै तो दाग वँळा मुसाणा में लामूजी बिना, काम ई नी चालतो । सास नें उथळावणो का लास माथे खेजड़ी रा मोटा-मोटा ठूठ चिणना कोई हँसी-खेल रो काम नीं हुवे पण वारे खातर तो अँडा काम हँसी-खेल रा ई है । किणरी ई काम निकळ जावै तो पछे वारो कांजी घमोज है । पण, आज बळता मडभोलिया सूं थोम वारै कुण निकाळसी...

वै हेनो देवणो चावता हा पण इण उपड़ती सांस में सावळ हेतो ई नीं

देयीजै । घरवाळा सगळा होळी रो जीमण जीमता हुयसी । भरजोर हेतो देवण री कोसिम अकर भळें करी—“हरि ss ss ।”

“आयो बावोजी.....” कंवतो हरि रसोई में सू जीमतो अध-विचाले ई उठन आयो । बूझ्यो—“कांओ लाऊं ?”

“थांभ...” आगे दम बोलण नीं दियो तो वै सांस टिकावता बोला रैयया । हरि रे की समझ में नी आयो कै वै कैय कांओ रैया है ।

“पाणी लाऊं बावोजी ?” हरि बूझ्यो ।

वां नस हलाय'र ना रा लटको कर्यो । कई ताल री हवक्या पछें दम जम्यो तो मंदी आवाज में कैयो—“बेटा ओ डोल क्यांरो बाजें है ?”

“होळी मंगळावण नै गया है बावोजी...”

“हम्मै...हम्मै बुलावो कोनो आयो कांओ...थांभ कुण निकाळसी...सू जावतो बेटा,...।”

“ओ हो ! बावोजी, कटै चित्या हुई है...थे सोवो, हाकै ई निकाळ लैसी कोई न कोई ।” मुळकतो हरि वारा खांधा पकड़न सावळ सुवाण दिया ।

गैलो है हरि, मनै चित्या नी हुबैला नो किणनै हुबैला, ओ कोई हंसी-टटा रो काम है जको हर कोई कर लेसी । लाय मांय सू आदमी निकाळण सू बेसी दोरो काम है । जिण नै उजस हुवै थो ई कर सकै । रजाकर साव नूवा आदमी हुबै अर थांभ नही निकळै तो ममूळें वास खातर कैण-कयीण जैड़ी बात हुवै । सुगन तो माड़ा हुवै ई ।...बख, बख री बांता हुवै । वा आपरो जमारो ई तो अंडी वातां मे गमायो है ।

बांनै चेतै आवै, कालै री सो बात है वै कछियो पैर्यां घूमता । तीन कोस दूर नेत सू घरै दौडता-दौडता आवता । आवता ई रसोई मांय बढनो अर दावै ज्यू ई खाय पीयनै मस्त रैवणो । उण दिन री बात नै आज किता मान हुयग्या हुसी...साठ सू तो बेसी ही हुया हुसी...उण दिन वै खेत सू घरै आया । भूख घणी अकरी लाग्योड़ी ही पण रसोई में हेर्यां सू रोटी कै खीच कीं नी मिल्यो । चूल्हे री वैवणी में मसोड़ दियोडी फगत दही री जमावणी पड़ी । वां नै ओर की नीं सूझ्यो तो मुंडे चाढ़ नै उणनै ई गटांगट पीयग्या । इतै मां आंयगी । घणा रोळा कर्या—“नागई खादड़ा, इयो

भूखां मरतै रा किता पिराण पड़ै हा...रोटी कर देवतो...अबै सारता सगळी जणा हाथ में रोटी लैय'र ई खाया भलाई, लगावण तो सगळो तू चेपग्यो ।" इण पर बां मुढो पलकारतां केयो हो—"तो कांभी हुयो मा, रोटी ऊपर सू खाय ले सू, लगावण में मिल ज्यामी..." इतो सुणताई मा चीपियो उठायो हो अर वो रसोई सू वारै मतथा दैग्यो ।

अंडी खुराक ही जण ई वै अकला दावै जको सेजड़ा के रोहिड़ा वाडनै ऊंट माथे घाल घरै लैय आवता । ढाच माथे भाठो ढोयनै तो आखी गवाडी कर लिन्ही । हालाकि छोटकिये रो मारो रैवतो पण तां ई वारी धर्योड़ी टोळा हालताई किण सू ई नो हालै ।

वै भी तो कंडा दिन हा । आखै खेत नै वै दोवू भाई लाट लैता । दुनिया सू बैसी बांवता इण वास्तै धान भी बेसी ही हुवनो । उण दिन, आहा...उण दिन तो मामी में जवरी ही करी, आज चेत आया ई हंसी आवै । उण साल मोठ अणुता ई हुया हा । खेत में लाणिया ई लाणिया धिलकै हा, पण लाणिया नै खळ में मैळा करण री दिक्कत ही । जूल भर भर नै माथे सू नाखण नायमू तो किणो रो गाडी-नारो मांग लियो जावै तो बेगा मैळा हुवै अर दुख ई कम पावणो पड़ै । आ सोब'र वा छोटकिये नै कैयो—"जा मामी रै खेत सू गाडी-नारो लैय आव ।" मामी रो खेत वारै चिपोचिप ई हो । छोटकियो थोड़ी देर में पाछो आयग्यो । कैयो—"मामी ना करदी, कैवै वळध रो पेट चालै हे..."

"किमो पेट चालै, आपरा मैळा करै हा जणा तो की कोनी चालै हो खैर नटण रा हजार रस्ता हुवै..." वा कैयो—"पण देखत्यां, अबै तो मैळा गाडी माथे ई कराता..."

"गाडी नै वै नट ई ग्या जणै किता धिगणै कराता...और सरै में कोई गाडी कोनी..."

"तू देखतो रै ई ।" कैयर दोवू भाई दिन भर दूजै विले लाग्या । रात नै सोपो पड़्या वा सगळी योजना छोटकिये नै बता दी । दोवू भाई सोब-सोब गया । मामी रै डेरै माथे साण पाण सोपो पड़ग्यो हो । गाडी डेरै सू की पसवाड धागड्या कर्पोडी उभी ही । दोवां कानी खाधा लगायनै दोवू भाई उणनै ऊंचनै खेत में लैय थाया । आखी रात में सगळ

मोट मैना कर तिन्हा । भांकरकं जावता छोटकियं कैयो—“भाया अबै पूगा थावा गाडी नै ?”

“ऊं हूं...” यां मुळकता नाट कर दी । मीवा जोड अडाव रै मांय अेक दूफाडिये रोहिडो हो । गाडी नै उण दूफाडिये में टाग आया । दिनुगं मामी हाथ ममळती आई—“डावड़ा लादू, म्हांरी तो गाडी नै कांभी ठा: कुण लैयग्यो । लैय जावण रा चित्ना ई कोनी मंडियोडा । ठा: नी कुण उल्लण नै लैयग्यो... अबै कांभी कहं...।”

“मामीजी, इण मू तो आछो हो कालें म्हांन दैय देवती... पण अबै तो जोवो मामी, कठ ई उडणी जहाज दाई पास्यां तो नी आयगी हुवै...।” कैयता वानें हेंसी आयगी तो मामी नै टोमो पडग्यो । “डावड़ा कोई मम-सरी करो हो तो ठा है जणा मावळ-मावळ ई धता देवो...”

“मावळ बतायां कांभी देवाला...?”

“धपा'र लापसी जीमा दे सू ।”

“अेक घात है मामी धारी गाडी नै तो ओलखू कांभी, पण अबार बननं अडाव रै दोफाडिये रोहिड़' मायें बंठी एक गाडी जरूर दीठी... फागण चेत मे कीड'यां पाखीजें ज्यूं कठे ई गाडी ई पाखीज नी गी है, बेगा मग्हाळो पास्यां आयोई जिनावर रों कांभी अबार उण रोहिड़' मायें है थोड़ी ताळ नै धीजी ठोड़ बूही जायें ।”

“नागई खाघां, इणनं हेठें तो उतारो । रोहिड़' हेठें चकारिया देवती मामी बरहावै ही । मामी रा रोळा सू कनलें-कनलें सेत रा मिनल भी भेंळा हुयग्या । सगळा जाणें हा करतूत किणरी है । सगळा ई उतारण रों कैयो तो वां मामी मू कैयो—“किया मामी मळध रों पेट चालणो टब्बो कै भी...?”

कंडी कंडी कोगत करण रा दिन हा । दिन जावता ठा: ई नी लागै । दोवूंमायां रों ब्याव ई हुयो । धणियाणी रै माता निकळी अरमरगी । उणरो ब्याव हुयां पछै धणियाणी रै माता निकळी । उण साल घणा छोरा-छोरी माता सू भरप्या हा । दूमर ब्याव रों भतो ई नी कर्यो ।

चां आपरी जिदगी में कदं ई नारें मुड़नै नी देख्यो । अवलें सूं अवलो काम वारें लातर साव मोरो हुवतो । सुम-असुम हरेक मौकें गांव में वारी

मौजूदगी तो हुवती। वैं तो हरेक सूं इयां ई कैया करता, “मैं अके दिन अचाणचकै ई जावूला...सुड़-सुड़ नै मरणो, खुरड़ा खोतरड़नो, आपारै कोनी पोसावैं...” पण, लागै कैयी बाता अणपोसावती भी करणी पड़ै, भुगतणी पड़ै।

वा अेकर मळै हरि नै हेलो दैयनै बुलायो। बूझ्यो—“आपा रै घर सूं गयो है काअी कोई होळी मंगळावण नै?”

“पप्पूडो गयो है।”

“पप्पू सूं काअी हुसी...पप्पू तो टावर है रे...तू जावतो बेटा...”

“धे आराम करो-बाबोजी...।”

“आराम ही तो करू हूं पण,...।” बारी गिरगिराटी मिट नी रैयी ही। होळी-गौर्या रो ढोल सुणतां ई वैं करड़ धज्ज होयनै घर सूं निकळ जावैं। गौर परणावण नै जावता तो बारी करड़ धजाई लोग देखता ई रैय जावैं। नूवो रंगायोड़ो केसरिया साफो। थोळो धक चोळो भीणी धोती-जकी फगत इणीज दिन पैरीजै। खांधै तरवार सटकायोड़ी नै हाथ मांय सैल। देखै जको ई मुळकै—सितर सूं बैसी आयग्या पण ठरको हाल वो ई है।

हरि रसोई मे जायनै थाभ री बात कैयी तो सगळा हेंस पड़्या—“बाबोजी रै आछी चित्या लागी नी...थाभरी...अबै थांम घणा ई तिकाळ्या...आगै काढ्या...।”

थोड़ी ताळ में पप्पू बारै सूं आयग्यो। हरि आवता ई उणनै बाबांजी कनै भेज दियो।

“कुण पप्पू ?...” वा बूझ्यो।

“हा दादोजी...पप्पू नाड़ नीची कर्यां हंकारी दियो।

“कटै गयो हो बेटा ?”

“होळी घोरियै।”

“होळी मंगळादी बेटा ?”

“हां दादोजी !”

“भळ कठीनै गई ही बेटा ?”

“आपारै गेत बानी...।”

“सेत बाया बेठा, जमानो हुवेला ।” केवता वै इत्ता अके सागे सवाल
 दूभने सू हांफरई चढ़ग्या । पप्पू रो हाथ वै आपरै हाथ मांय लेय राख्यो
 हो । सांस टिकावता भळे बूझ्यो—“आज थांम कुण निकाळ्यो ?”

“थांभ...?” केवतो पप्पू खिलखिलाय नै हंस पड़्यो... “दादोजी,
 आज जोरदार मजो हुयो...होळी मिलगाया पछे केई ताळ हुयां लोग
 खाया-खाया थांरो नांव लेवता रैया । लाधूजी कठे, अरे लाधू वडो कठे...
 जणा मै केयो दादोजी तो बेमार है नी...वै लोग पछे रोळा करण
 लागे...थांभ निकाळो भाई थांभ...दो तीन मोट्यार बळता भड़भोलियां
 मै कूदा पण हांय मुंडो बळता देख पाछा सिरक आया । छंकड साठ्या सू
 भड़भोलिया खिडावतां खिडावतां थांभ नै नारेण बळनै कोयला हुयग्या ।
 उण कोयलै नै साम लोणां कूवै रै कोठे मै नांख्यो...।”

“हरामखोरो थांभ नै बाळ नांख्यो ?” वै भचकै उभा हुवण चाया ।
 धिगता-धिगता साळे सू बारै आय हेतो पाड़्यो... “सुण्यो हरिया...ओ
 पप्पू कांभी कैवै...थांभ नै बाळ दिन्ही हरामखोरा...इण सू तो आछो
 हो...उभोड़ा मांय सू ई बळ जावतो कोभी...अरे कमीणा जाणो कोनी
 थांभ बळिया कांभी हुवै रे...थांभ नी बळ्यो है सैग गांव बाळां री हूणी
 आई है...” केवता वै आंगण मै माथो भासनै बैठग्या ।

“सगळ घर रा देख रैया हा जाणै थांभ नी बाबोजी खुद ही बळग्या
 हुवै ।

आंगण विचालै भीतां

छोटोड़ी बीनणी घर आवती ही पैलहो काम भाठा भिड़ावरोण करघो। उण चाग्रगनेता री गल्लाई घर री थित नै आसगली। भाठा छेकण मे ही उण रो आपो सुघरसकै। बस ! पछे उणनै काई तेवड़णो हो ? पी'रै में ई उण घणो पुन्न कमायो, भोजायां नै टांकणै कर्योड़ी राखती। पी'रै में, बोछरड़ापणै आलै अंग-चंग बस्योड़ै तेवटै नै, वा सोरै सांस अलघो कीकर मेल दै ?

खावतै-पीवतै इण घर में कमी काय री ? पण वा आपरा करतव नी करै तो ओ भाखर जैड़ो जमारो किण भात् सुधरै ? बीनणी नै जे आठाना रा किरचा ही मंगावणा हुवै सो कणां ही बडोड़ी जेठाणी रै टाबरा नै तेवै सो कणा ही छोटोड़ी जेठाणी रै टाबरा नै। दोनूं जेठाण्या देराणी री इण सुगली आदत मायै घणी ही कळपै, पण वा रै कळप्पां सूं वणै काई ? ज्यांरा पडघां सुभाव, जासी जीव सू...!

मासू-सुसरा तो रामजी रा जीव। पछेती मे आवतां बीजो धार लियो। किणी भांत रो कारो-कुटको हुवो, वां नै को लेवणो-देवणो नी। वां रै भवा घी री मूण ऊंधी हुवो चावै सित्तर करोड़ री माया भेल्ली हुवो... ई तो माळा-भणियै मे ही मगन। टाबरी आपो साभ लियो तो मोह-माया नै परै कर दी। पाच टाबर हुया अर पांचूं ही मुंडायै। सगळा परण्या-पाता। दोय छोरया आपरै सासरै में सुख-बसै। दोय छोरा आपरो न्यारो-न्यारो टुगारो चत्तावै अर एक छोटोड़ी हाल मणीजै।

दोनू भाई आपरो न्यारो-न्यारो विणज करै। एक रै तो केनवास री

दूकान अर धीजोई रँ लूण-पिसाई री घक्की । पण घर में एक चूल्हे रोटी बर्ण । दोनू मोटोई भाया नँ परण्यै-पातै छोटे भाई री भणार्ई माथै की उजर कोनी हो । महीनँ आळै दिन उणनँ तो पोथी-पानड़ा अर जेब-सरची आळा मिल ही जावता ।

टावर, रोजीनँ फोड़ा घामण रँ कारणै, छोटोटी काकी सू छाटा लेवता रँवै । पण काकी ई किसी कम ही । उण जद देख लियो कै छोरा काम करण सू मांय-रा-मांय नटण लायग्या, तद उण केई नूवा उपाय सोच लिया ।

छोटोटी जेठाणी रँ छोरें नँ बुसाय'र कैयो—“संतोपजी, ओ लो डोढ़ रिपियो । मनँ दोय लाल गटथां लाय दो नी...अबार ही दोय कब्जा सीड़णा है ।”

छोरो ऊमो-ऊमो गुहू कुचरण लाय्यो । पछै आमँ कानी जेवतो बोल्यो—“काकीमा, देखो नी मूरज मयारँ आयोड़ो है, सावडँ री इण भाय में मंगवाय'र काई फरस्यो ? मित्र्या रा ठंड हुयां लाय देसू ।”

उण जेठाणियां नँ सुणावती उतावळी बोल'र कैयो—“ठंड हुयां काई माथें में लेवणी है ? ठंडै-ठंडै तो इण घर रो खोरसो ही कोनी नीवडँ—खुद आळो लोदवी काई घूड़ काढ लेव ।”

रसोई में बैठी दोवू जेठाणियां एक साथ ई चिमकी...देखो नादीदी नै ! किस्ती कूड़ घोलै ? किस्ती खोरसो करै ? आखै दिन तो हाथ पर हाथ घरघां बैठी रँवै ।

उण भळै, छोरें नँ, घीणती कम अर हुकम बेसी देवतां, कैयो—“जावो-जावो ल्याय छो नी लाडी—अबार आय जासो ।”

“म्हारँ सू तो इण लाय में की जाईजै नी ।” छोरो सफा नटग्यो । वो जावण लातर मुड़यो ही हो, कै मामँ बडोड़ी जेठाणी रो बेटो अणोक जावतो दीठो । उण हाथोहाथ, वो डोढ़ रिपियो एक आठानी भळै मिलाय'र अणोक नँ पकड़ाय दी । वो काकी नँ देखण लायग्यो ।

“जावो लाडी, उण आठानी रा तो किन्ना लेय लिया अर डोढ़ रिपिये मे दोय लाल गटथां सावणी है, उण मोड़ आळी दूकान सँ...जावां देखा, फुरती सू ।”

छोरो आठानी रँ सोम में वेगो-सो न्हास्यो । पगो-पग ही पाछो आयग्यो “ल्यो काकी, ऐ गटघां !”

“ल्यो काकी ऐ गत्या ।” दूजोडो छोरो, जाको उठे ही ऊभो हो, उणरी कूट कडाई ।

काकी चिणखी—“क्यू, आभो थारं ही ताण टिकयोडो है काई ?... कामचोर....!”

‘कामचोर’ सुणतां ही छोरो बिदक्यो—“मैं क्यू कामचोर...कामचोर हुबोला ये...ओ अशोकियो तो लिगतो मरँ...तावडें मे गयो तपड़का मारतो ।...ऐ तो थोड़ी ताळ में भळें हुकम करसी...पांच पइसा री मिरचा, दोय पइसा रो तेल ल्या’र दिया अशोकजी...मरँ तो दूकानदार सू टक-टक री चीण मागतां ही सरम आवँ...अड़ोस-पड़ोस रा सगळो दूकानदार ओळखै...हुंह...।” अर छोरो खबो मचकोड़तो वारं निकळग्यो ।

लाय-पलीता लागभ्या बीनणी रँ । इण बिसोरं रो बंट निकाळणो तो घणो जरूरी, पण इण रो बंट काढण खातर बीजोर्ड सू वणाय’र राखणी पड़सी । उण हाकरता जेठूतँ अशोक नँ आपरँ नेडें बुलायो अर मायँ हाय फँरतां कैयो—“वो सतोपियो तो गूगो सांड है, ये स्याणा हो । आ लो आठानी भळें, कुलफी खाय लेया पण उणनँ दिखाय’र खावणी है, चिगा-चिगा’र...जैडो देखें बँडी ही अक्कल आवँ । बापूजी लूण रो धधो करँ अर खारास इणरँ मूडें जमियोडो...!”

छेकडली बात बा की आकरी बोली सो घर रँ मांय ताई पूगगी । संतोप री मा बिदक’र आई । उणनँ भाळ तो ऐडी उठी कै देवराणी री नस भटक देव ।

“क्यू बहूराणीता ! उणरँ मूडें तो खारास है, पण थारं मुंडें तो पैप रा फूल भड़ है नी...वाळू घसको आघो ही...कोई करीजै नी थारो गोलीपो...इसो हाळी चाहोजतो हो तो लावणो हो पो’रँ सू...टक-टक री चीजा खातर टीगरां नँ तगड़ बोरँ !”

बीनणी रँ आं बातं मूं भावें ही लाज नी आई । जेठाणो रा ताना उण नेई वाता सोच’र टगर-टगर सुण लिया ।

अशोक री मा अवचळ ऊभी ही आंगणें । ऊण कनै दोवां सू ही अडवी करण जेडो की नी हो । वा भोरयां मुरें अर टोरयां टुरें जेडो ही है । घणी दारुन्दी कोनी । आखें दिन चूल्है-चौके सू खसती रेंवें । वडो हुवण सू चौको उणने ही संभाळणो पडै । घर सूं वारें ही को निकळ मर्क नी । एक छोटोडी बीनणी है जकी नै इण घर मे आयां वखत ही कितोक हुयो है, पण आडोस-पाडोस री मोकळी लुगाया सू जाण-पिछाण कर राखी है ।

संतोपी री मा तो आपरी बान कैय'र विलें लागी । धोडी ताळ में ही वारें मूं अशांक रोवतो... ओख्यां मसळतो आयो । हाथ मांय कुल्फी रो बिता वरफ बिप्योडो घोचो लिया हो । उण नै डुसका भरता देख'र संतोप री मा धूड्यो—“काई हुयो रे अशोक ?”

“संतोपियो मनै बिना बात ही कादे में पटक दियो अर म्हारी कुलफी खोस ली ।”

“कठै बळै है वो ?” कैवता वा बारणें सू वारें भाकी तो संतोप बारणें कनै ही ऊभो हो । बावळियो पकड़'र घर में ल्याई—“क्यूं रे, इण रें मारी कीकर ? चाल, माफी माग ।”

“काई बात री मांगू माफी ?” छोरो अटग्यो ।

छोटोडी बीनणी नै तो इत्तो ही चाहीजतो हो । वा सीवणो बिचाळै ही छोड'र वारें आई । अशोक री मा कनै मुडो कर'र कैयो, “ऐ किण री मागै ?”

आ बात संतोप री मा आछी तरा सुण ली । पण अवार कसूर खुद रें टाबर रो हुवण सू कीं नीं बोली । छोरें नै ही बकी, “चाल, मिला इण सू हाथ अर कय कै मनै माफ करदें ।”

“कैय दियो नी में कोई माफी-बाफी कोनी मांगू ।”

“कियां कोनी मागै ? कसूर धारो है, माफी तो मांगणी ही पडसी ।”

“में इणरें ठोकी जरूर, पण कसूर म्हारो कोनी ।”

“हूं-हूं, ठोकी ही ये अर कसूर ही कोनी ?” देवराणी भळै जेठाणी न चिगावती-सी बोली ।

संतोप री मा नै देवराणी री बात मार्थे भाळ, आयगी । वा कैवण

सागी—“धे पछै काई धाणेंदारी करो हो, में आप ही ऐकै पाणी न्याव कर देसू। म्हारें खातर तो संतोप अर अशोक एक-मा है। हूं किण री ही नी राखूं।”

संतोप री मा दोवू छोरां नै झाल राख्या हा—“हां, अब वता तूं इणरें ठोकी वयूं?”

“इण ने ही बूझ लो।”

“नी तू बता।”

“ओ कुल्फी लेय'र आयो अर मनै चिगा-चिगा'र खावै हो पण में की नी बोल्हो।”

“तो...?”

“कुल्फी खायां पछै ओ घोचो म्हारें भामी कर'र बैवण लाग्यो, यारा जीसा लूण रो बीपार करै इण खातर धारी जवान खारी हुमोड़ी है, लं घोड़ी मीठी करलै।”

उण दोवां रा बावळिया निसकारें साथै छोड़ दिया।

छोटोड़ी बीनणी राजी हुई कं अशोक मा-बेटां रा मोर बळै जैदी बात उण रै मिखाया कैय ही दी।

वा अशोक नै माय लेयगी अर कूडिया आसू बळकाया—“धे चित्था ना करो, इण ठोकणें री तो कसर काढ सेस्था।”

□

खंखारें साथै दोनूं भाई घर री कुत्ता-किवाड़ी खोलनै आंगणें में आया तो हरेक कमरें में चुपाचुप हुयगी। तीनूं भायां में गाढो सनेव। न्यारा-न्यारा धंधा करतां ही जीमण खातर मार्ग ही घरें आवै। छोटोड़ो भाई कोई डिप्लोमा खातर बारें गयोड़ो। तीनूं भायां में गाढो हेत। कदै ही दो जीम को हुया नी, इण करता लुगायां ई आंकस मानै, आपस में माठा मोरण री कोसिस नी करै। लुगायां री खडबड़ आंघण भरतारां जागै बख्ताणीज कोनी। तीनूं लुगायां जाणें कं भाई-भाई आपरें टाणें घरम-घोभा है, इण रांडा-गिगरथ री की गिनरथ नी करैला। पछै बकवाद

कर'र मुँहो कोझो करणन अर आपरो भाजनो देवणन कुण तयार हुवै !

पण छोटीही बीनणी रँ तो घाय-फाय लाग्योड़ी ही । वा हरमेस रावा-पीवा'र अशोक नै एकदम आपरँ हाथवसु कर लियो । उणनँ सामीडी पाटी पढा नाखी केँ समझायँ मुजब काम कर ही देवणो है । अशोक उणी मुजब करधो ।

जीम्पां पछे दोवू भाई की ताल आट-टेढ करँ । अशोक तो मीको ही बूढतो हो । खूटी माथे नटक्योड़ी, आपरँ जीसा री कमीज रँ गोजेँ सू पांच रो एक लोट काड'र भट काकी कनै पूग नियो । काकी उण नँ स्यावासी दी, "अवै बात उण लपरँ मुँडे री ...पण जद जेब में पचास अर पाच रा दोय लोट हा तो पचास वालो क्यू कोनी निकालधो ?"

"म्हारी तो हिम्मत नी पड़ी, काकी ।"

"कोई बात नी । पण, अवै ठा तो पड़णो हीज है, इण वास्तै म्हारै बतायँ मुजब ही करणो है...साची बात रो थारी मा नँ ही भणकारो नाँ पड़े...सौगन है म्हारी..."

छोरो घूक में आगली कर'र कंठां अर माथे रँ तीन बार लगावतो सौगन लेय ली ।

तावड़ै-तावड़ै आट-टेढ करधा पछ दोवू भाई धधेसर जावण नँ अड़-बड़धा । आप-आपरी कमीज गळें में घाल'र बहीर हुआ । छोटी भाई हाल बारणँ सू निसरण आळो ही हो केँ आपरी घिराणी नँ हेलो पाड़धो, "अरे, सुणै है नी ! लै, पइमा लै । ऐ दूध-वाळें नँ देवणा है । ऐ पिच्या-वन रिपिमा दिया आज ताई रा चूकत हुम जासी । हूँ अवार भूल ही जांवतो ।"

वो भट देणी आपरँ गूजेँ सू पचास रो सोवटधोड़ो लोट काडधो । उघेड'र देख्यो । अचरज सू जोयो-घरतँ तो कोनी पड़धो...पांच रो लोट गयो कंठे...इण पचास आळें रँ बिचाळें ही तो हो...! इण तरां बड़-बड़ावतां वो घणियाणी नँ लोट देवतो बूझ्यो—"जेब मांय सू पांच रो लोट लू काडधो काई ?"

"थाने बूझ्यां विना थारी जेब में कदे ही हाथ घाल्यो हो काई ? जरूरत हुरां थां सू ही माग लेवतो...मनै लागे लारे ही कंठे-न-कंठे नाख

दियो हुमी ।”

“यारो मिर ! नाखतो तो पछे पचास बाळो सागै नीं पड़ जावतो ?
इण रै बिचाळै हो वो ।”

हेला पाइ-गाइ'र सगळें टावरानें नै वूझ्यो । सगळा ही अणजाणपणो
दरमायो । छेवट अशोक नै वूझ्यो तो उण ई नकारो देय दियो, पण होळै-
सी एक टुणकनी ई नाख दियो—“थे सूता हा जणा संतोपियो रिपियै-
रिपियै आळी कुलपयां खाय रंयो ही ।”

“कोई बात नी टावर ही तो है ।”

वो दूकान कानी टुरग्यो । छोटोडो भाई पैला ही गयो परो । अबै
सुगायारै इण चोरी री घणी हुल-हुल हुयमी । चोरी री सगळी तुम्मत सतोप
माथै आय पड़ी । छोटोडो बीनणी ई साख भरदी कं जेठसा सूता हा तद
सतोप खूटी कनै खड़ा हा । अशोक पैलां ही कैय दी ही कं वो उण नै
रिपियै-रिपियै आळी कुलपयां खावतें देख्यो हो ।

अबै तो इण चोरी री घणी ही गिरगथ माची । सगळा ही जद संतोप
नै चोर ठैराम दियो तो उण री मा रै टो'मो पडग्यो कं कठै ही ओ
साचोणी चोर तो नी है ? घर री बात गळी ताई पूगयी कं आज सतोपियो
आपरै बाबै री जेव सू पांच रो लोट काढ लियो । उण री मा ठगा-पोटा'र
बूझण लागी—“बेटा ! ओ काई करियो ? इया कुलपयां खावण खातर
चोरी जेडो नाजोगी काम क्यू करियो ?”

छोरो सूनी आख्या सू मा रै सामै जोवतो बोल्थो—“मा ? तूं ई
ऐडी बात करै ! मैं कुल्फी खातर रिपियो स्कूल री बचत बैक सू कढ-
बाय'र लायो हो...मनै तो अशोक नै दिखावणो हो कं तूं आठाना री
कुल्फी खावै तो मैं एक रिपियै आळी खाय सकू ।”

“मा-बेटा कंडा सचवादा बणै ? अबार लावू मनू री मा नै...वा
आखा देखै अर उणरै मुंडें पितरजी ई बोलै...अबार कूड़-साच चवडै
आय जामी ।” छोटोडी बीनणी बिचाळै हो बोली ।

छोटोडी बीनणी भट करती मनू री मा कनै गई । उण नै धताय
आई कं सगळ्यां रो वैम तो संतोप माथै है । आज वो आं पइसां सूं धूपेटा
उडावै हो । पण चोर अर उणरी मा इण बात नै कद सदरै ? सिझ्या रा

“पांच वजी घाने आवणो है आखा देखण नै...।

सिझ्या दोवूं भाई घरै आवे तो न्यारो ही नजारो। घर में लोबान
री सुगन्ध खिड़घोड़ी। मनु री मा सेर-एक गवा कानी जोर्व अर सामे
जगत दीवै री बाट नै ई ऊंची सारसी जावै। पछें जोर सू बड़क दीवी—
“चोर पारको कोनी...घर में ही है...।” अर वा तीन-ब्यार मवेरघां
‘दीवी।

तीनू लुगायां हाथ जोड़घां घर-घर धूजण लाग रई ही। तीनू
ही लघावली-सी बूझ्यो—“कुण है म्हारज.....नांव बतायां ठा
‘पड़ ती !”

“बूझो काई ही बिचोटिये आळो छोरो है...बिचल रो बेटो...।”

बड़ोड़ी अर छोटोड़ी बीनण्यां रैं चे’रा पर चिलक बापरगी पण संतोप
अर उणरी मा रैं मुंडे री रंगत उतरगी। अब तो वा ई आपरै बेटे नै चोर
‘निदर लियो हो, पण पेट रैं फरजंद नै कियां डंडे ? टाबर है...’ चोरी कर
ही ली हुयैला !

थोड़ी क ताळ मवेरघां लाय’र मनु री मां तो आखां नै बाघ ओढ-
णियै रैं पल्लै अर आपरै धान-भुकाम गई परी।

बिचलै भाई नै बात री निगी नी हुवण सू ओ सांगो समझ में नी
आयो। भाई नै बूझ्यो तो उण टाळ दिमो कै टाबर है, कोई मूल हुयगी
झुमी, की कोनी।

पण बात किसी छानी रैवती ? अबे वो सगळी बात समझ्यो। उण
लप करतो संतोपिये रो हाथ झाल’र एक रैपट जड़ दी। छोरै रैं होठां सू
खून तिड़क्यो।

“माळा इतें मान रो ही चोरी करे ?...आज तो मारघां बिना नी
‘छोड़ू...’ वो उणनै बोझै दाळै कूरण लाग्यो। संतोप रैं डोडावणै सू
अशोक रो बाळ-मन ई आपरो धीजो छोड़ दियो। उण देहयो, इयां तो
काकोसा संतोप नै मार नाखसी।

छोटोड़ी काकी रो हाथ आपर खंवे पर सू छेड़ करतो अ बिल्कायो,
“मै बतावूं काकोसा...!”

सगळा चिमक्या पण छोटोडी वीनणी लप करती आपरो हाथ उणरें
मुढें माघें घर दियो ।

विचोटियो भाई छोरें नें छोड'र हारघोडें जुवारी दाई आंगणें सू
चाल'र कमरें में वडग्यो ।

वडो भाई टुकर-टुकर आंगणें रा तीन फाड हुंवता देख रैयां हो ।

संतोख

खेजड़ी र च्याहमेर फँरी दियां पछे लुगायां अँकर भळें भगूण मुंडी कर'र सुरजी नै हाथ जोड़धा अर पछे आप-आपरी जूत्यां कानी लफण लागगी ।

“पाणी रा गड्डिया काँधी भर्योडा पाछा थोड़ा ई ले जावणा है ।”
 भेक अधबिचैरी-सी बीनणी आप सू कीं बड़ी बीनणी नै मुळकतां थकां कैयो ।

बड़ी बीनणी भँपगी । हाथ में भरियोड़ो गड्डियो भट देणी खेजड़ी री जहाँ में उंधा दियां ।

“ले देखोक हूँ ई किसीक भूलोकड़ हूँ, अरध री गड्डियो हाथ में लियां ई उभी हूँ ।”

पंधवारी रै इण खेजड़ी हेटे, आसचीय रै बरत री कथा सुणन आई पांच-छवू लुगाया में दीय अधखड़सी ही अर तीन मैनी बीनण्या । उणरी गड्डियो नी उंधावण री भूल माथे सगळी अँकै सागँ हँसी अर कैयो—

“आ बालनजोगी है ई भूलोकड़ ।”

“जण ई तो आई साल आस माता आनै भूल आवै ।”

बीनण्या मांय सू जकी भरियोड़ो गड्डियो अखरावणवाळी ही उण कैयो अर कैय'र आपरी जीम नै बोचली । जीम बळें हाड मांस वायरी हुवै नी जचै ज्यां बोलज्यावै । आगलै माथे दावै जियां बीतो । पछे तो उणने ई धणो पछतावो हुयो, उणने अँड़ी अकरी बात नीं कैवणी चाहिजे । पण अवै

तो कैयीजगी जकी कैयीजगी । तरकस सू छूट्योड़ो तीर पाछो कीकर आवै ।

भूलोकड़ बीनणी रै मुहँ रो पाणी स्सो उतरग्यो ।

"भाग-आप आप रो, वापड़ी आस माता मायँ किरसो जोर थोड़ो ई है ।"

आ बात कैवतां वा रोवणसाळी-सी हुयगी ।

अेक बीनणी जकी अवार ताई बोलबासी ही । उण सूं भी अंडी अणखावणी बात सँयीजी नी ।

"धानै जिठाणीसा कोई सू कदै ई सूवो बोलणो आवै है काभी ।"

बोलाळ बीनणी रै चेहरँ मायँ अपराध बोध भळकँ हो । गेलँ मे तीनुं ई बीनण्या घरँ आई जठँ ताई चुपचाप ई आई, अर कनै-कनै रा आप-आप रा फळमा मे बहगी ।

□

फूला जड़ियो औरणो उतारती बगत उणनँ घणो दरद हुयो । उणरो मन तो करै वा उण औरणँ नै उतारै ई नी पण उण कनँ अेडै-टाकलँ ओठ्ठण खातर ओ एक हीज ओरणो है अर एक हीज पूणी दो मरी रो हारियो । वरत री कहाणी सुणन नै जांवती बैळा उण आ दोबा ई चीजां नै घणै भाव सू पैरी ओडी ही ।

हारियो खोल'र उण देख्यो-डावँ कानलँ फूल रो अेक नाको तो सफा ई घसीज चुक्यो हो । भळवाणो पड़सी । 'लारै आने केयो हो, भळवाय'र भाय देया । इतो ई धिनक नांव है, अेडै-मेडै पैरण जिस्तो रैय जावँ ज्यू । पण म्हारी रांड री कुण सुणै है । केवँ-कोई ठंगरो सुनार मिलँ तो भळवाऊ नी । अठँ तो सगळा ई नकां जोगा है । भळआई-भळआई मे सामे बँड्या री आग्या मे धूड़ नाख देवँ । अेकर डोरँ सू बांध लै । कणै ई वख पडसी जणै भळवाय देसू । आनँ अबँ कुण समभावँ, नाकँ री भळआई-भळआई में आ गलो खा'र कोई सगळो हारियो तो खावँ कोनी । तुम खण राससी जको तो होनार री जात सू रैयोजँ कोनी, मर्या ई छोडँ नी ।

उण नै अेक बात चेते आय'र हेंसी आयगी ।

आप काल रै दिन हारियो अडार्ण मेल्यो हो, जणा जात रा तो घणाई
बामण हा पण पाछो छुडवाय'र लाया जणा बिचलै फूल हेटला तीन
घूघरिया कोनी हा । अे तो ग्यासै दाई लियाया, हूं कैयो इण में तो नीचली
फाकडी सू घूघरिया निकळ्योड़ा है । नीची दूढ घातली । फगत इतो ई
कैयो—“करसी जका मरसी 'भ्हारै सू तो अबे जाय'र इयां को कैयीज
नी कै ये इयै मांय सू घूघरिया काढ लिया । आगलो सीधी नाक मायै
खळकावै हा । भ्हे काढ लिया घूघरिया, ई वापई महूकार कानी देखो रै । अठे
सोनो नांव रा दरमण आज अिण ई कराया है । हूवा तोड लिया तो फूटा
बांरा । हू तो बुहार धिगाइन नै जाय'र कोनी कैवू कै ये पिडतां हारियै
रा घूघरिया तोड लिया । बळो आगा-मोंगो ! ब्याज ई भोग्यो है नीं
महीना वारै रो । आनलै तरनाट करतो तीन रिपिया सैकई सू लियो है
नी । हाथी तुलै बठे गधेड़ा काण में जावै । मिनखा सरीर रै काम पड़तो
ई रैवै । आं रो कांभी, आज भसकायोडा हुवै जणा काल पाछा किसै मुंडै
सू जावां । चीज मैल'र भी पर्ईमा देवण नै तयार कोनी हुवै—“ना भाया,
भ्हारो तो घणो ई मोनो देख्योहो है । भळै थारै काल नै घूघरिया तूट
जावै । इसी जगां मुडो फलको सो कर'र रैवणो पडै । गरीब रो घोरको
कट्यां जोर कोनी चालै, पेट मोटो करणो ई पडै । गरज आपरी हुवै ।
अेडा-मेडा तो चावै गरीब हुवो चावै अमीर सगळा रै पड़ता ई रैवै, अर
अेडै-मेडै मे आनै सिवरणा ई पडै ।” ले...बीरा...हूं...ई कांभी
कांभी सोचण लागगी । काम नै तो मोड़ो ह्वय रैयो है.....पडी
हारियै रै सोच में दूबळी हुवण लाग रैयो हूं...गडको लैय'र आवण
आळा व्हेला अजू रोटी टुकई री कोई तजवीज ई नी है ।

उण हारियै नै अेक डब्बी में धर'र काटीज्योड़ी सिद्धक में कपड़ा रै
हेटै घर दियो ।

‘या साळ सू वार आई जित में छोटीछोटी जागगी ही । गूदडां में
बैठी छोरी ठिणकण लाग रैयो ही । बडी ही बडी छोरी सायर उण नै
मुळावण में लाग रैयो ही, पण मां नै देख'र अरकी दिनुगै-दिनुगै उठतां
ई आपरी बाण रै मुताविक सायर री मुळाई रैयो कोनी तो उण कैयो,

“मा बैन न ले, आ म्हारें सूर् रेवें कोनी।”

“आवू बेटा आवू, आज तो कहाणी सुणन न जावण सूर् सगळा काम रेंगम्या। फूस बारी कढ़ी न कोई बंट चंटो चढ्यो, पाणी बाळो तो अवार कूवो बंद कर देसो, पाणी न न्यारो मोडो हुयग्यो, थाने स्कूल खातर न्यारी तयार करणी है। वा संतुड़ी कठीन गयी?”

“बा तो उठतां ई बारें गई मां सेसन न...।”

“हुवा गई तो बा किस्सो काम करै है केयोडो। अळवादण है बाळण-जोगी, कुदड़का रें सिवाय की चोखो कोनी तागें बीन तो। घड़ी स्यात ई दीगरी न ई राख लेवें तो, सूर् तो कीं स्मारो देवें नी...?”

“बुलाय'र लावू काभी मा?”

“तही रैवण दे। वा पड़ी बुहारी, तू थोडो आगण रो छीछो काढ़ दे... बितै हूं इन बोबो दे देवू...।”

छोरी मां री गोदमा मे आवता ई दापलमी।

मायर आगण री बुहारी काढती जावें ही। आगण रें बिचाळै राती अर घोळी माटी सूर् वणायोई चौक माथें उण अघर-अघर बुहारी फेरी। चौक अवार होळी माथें उण री मां वणायो हो. अर उण न वो आगण रें बिचाळै भोत चोखो लागें। छोरी हाळ नवू साल री ई नी हुयी ही पण समझणी किती। सगळें घर रा कंवळा वणाया तो मां रें सागें आफळी। किस्सो ई काम हुवो, वख नी पड़ो पण सटूमण मे तयार रेवें।

मां सायर न फूस काढ़तां हिवळास सूर् देखण लाग रेंयी ही। सागें ई बोबो लेंवती छोटोड़ी छोरी रें कंवळा भूरा वासा मे ई हाय फेर रेंयी ही।

सायर आगण रें दिखणादे पासें वणायोई भूपडै रा खिर्योड़ा डोका नें बुहारी छेडें मैल'र मैला करण लाग रेंयी ही। उण भूपडें कानी गेहरी दीठ सूर् जोय'र आपरी मां नें केयो—

“मा भूपडें री छावण अबें नूवी करावा जद हुवें, ओ डोका तो मुरण लागम्या!”

“धारें जीसा नें कैयो कै सरकंडा मगवावो भूपडो छवावा ज्यू।” कंवता उण बोबो देंवती छोरी सूर् बोबो छुडवाय'र आगण मे बंट्य दी।...

कमै की गड़ा-गुड़ियां री खाली पेट्यां, जिणा में थोडाक-थोडाक गुवार रा दाणा घात'र मैल दी। घाप'र दड़ादोट हुयोदी छोरी रमण लागगी।

“सांयर हूं पाणी लियावू, फूस तो कढग्यो। छोटोड़ी बाल्टी सूं पाणी काढ़'र बटैड्यां में घाल दैयो अर बटो ऊर दैयो। पाणी घणो नां घाली, पड़घो इया ई ऊफणैला। खात आली हुयगी तो बटो सिन्ध्या ताई को मिजैला।”

छोरी हां रै लटकारै में नस हलादी तो वा इठूणी भिर मायें घर, पड़ियो मोड़ सूं यारै निकळना सिर मायें आडो घर सियो अर बहीर हुयगी।

गेनै में वा मोचण लागगी—

लुगायां किती मटयोली हुवै...छोरो-छोरी किस्तो भिनस रै सारै हुवै...काल म्हारै साम परणोज'र आई। भिडतां ई एक टिंगर कैं हुयग्यो फुलोज पिद्याळ हुगी। ‘आम माता भूल जावै...और कोई माता भूल जावै, बातां किती आवै नादीदया नै...।’

फेहं दिस्मां जावती कँवण लागगी...म्है तो म्हारै एक टावर और हुंवता ई अपरेमन करवाय लेस्या घर्ण कीसाटे में काअी पड़घो है। अबै ई करवावै नी कुण पालै है तनै...छरम वाय'र्या हर कोई नै चौबको देवण ने त्यार रैवै...।

कुवै मायें छीड़ ई ही, उण वेगी सी घड़ो भर्यो अर बहीर हुयगी। लुगाया छीड़ हुवो चावै भीड़ सागै नै उडीक बोकरै, पण वा तो को रावकी मे नी कोई देवकी में। मरड सरड़ गई अर आई। दूजी लुगायां जिती हलर-फलर वी नै आवै कोनी।

घड़ो लैय'र घरै आई तो उणरो मोट्यार गाडी सूं नारो खोल रैयो हो अर सायर संतुड़ी नै भिनान करावण लाग रैयो ही।

‘मोडो हुयग्यो अबार एक घड़ियो ही त्थाईजसो बाकी, सिन्ध्या रुपामूं, अई ई गड़को लैय'र त्थायग्या, अठीनै छोर्या नै ई जीमाय'र स्कूल भेजणी है।’

वा रोट्यां पोवण लाग रैयो ही। भयाराम हाथ मुंडो, धोय'र रसोई

मे आयग्यो । रोटी रो मुगंध सू उणरी भूम हौ जव सू धनी वधयो उम्
सू कैंयां बिना नी रैंयोज्यो ।

“रोटी बेयो सौ घाल...आज तो भूम अकरी करटी सागी है ।”

“आज इती अकरी कियो सागी ?” वा मुळकनां माग्ही भारी ।

“काभी ठा ।” केवता उण धालो गमछे सू पूछ'र मामी धरदी ।

“किता गडका नाम आया ?”

“दोय गडका ।”

यो जीमन नै रोटी सैंव'र बँटयो ई हुव'सा कं बाग मे जोरदार रोओ
माग्यो । मामे ई सुगाया रो कूकनो अर मामे मोट्यारा रो हाकां । पन
अर मे ई हाय लीवा मी मचगी । यो उठ गडकां हुवण नै हुयो सो उण
पाटी बँटाप दियो—

“बज्जनदयो नी पारो काभी लेव, ये पारी रोटी जीमानी ।”

“ठा तो कम् चुन गटे है ?”

“ठा हुयोरो है गमबिगन बाबोजी रा बँटा सटे ।”

काने सो बिपेटियां छोरो मां नै धरकी सैंव'र पटक मामी, बाजी
पनी किराई... रोवन जोगी या पाबा ने मे निन देगण माम'र मोटा
बट्ठा हा काभी ? पन बाबा मे पुराटी रा बँटे नारा मामी ।”

बाग तो बागो भा रो बळी देव'र पाब निन हुव'सा बँटी है
माम'र मयो पयो, भा गमगडा गू मायो चुन मगाये, मां ई हाड लोछा
करवाय गिया...बटियाजी बाग बाग गटे बँटा है मुमान मे भरलीक्या
मारा निरे...पामू कोई मारी मरी गुटे ई जग बेरा हा...पाब है रामजी
माराज रा...।”

मुदाई के बँटण है असाव माये कथागाम नै जीमन-योमन ई हैनी
बागले ।

—हा इत माय हुकला रो काभी बाग है । मुदाया मटबोली पनी हरे,
पन मुदा मचक'र देवे । ओय मीन पागुदा ई है काभी ?—काने छोरा
कोई पन गू पई ।”

कथागाम है और बाग गू हेमो अलहो । उणरि हेमो मे मरंन रो
बया मामी हुव'र हो ।

सौदो

जोगलिया रै नेई आंवतां-आंवतां सुरजी कसमल ह्वर धौरिये सू नीबे कूदया । उण पसवाड़ो फोरनै, ध्यालुं कानी, उवासी सैवतो यकां जोयो । फेर मन ही मन बड़बड़ावण लाग्यो—‘ओजू’ तो जोगलियो ई आयो है (तळाव) फेर दुकोतां पछै मयाणियों अर उणरै पछै मणकार । मणकार ओजू तीन कोस छेई पड़घो है, मणकार पूगतां-पूगतां समक आधी ठळ ध्यासी । पण छोड़ो, जोगलिये सू तो अबार गुधळकै-गुधळकै निकळ जास्या । अठे साळां डर फेरुं बतावै है ।’ वण अेक चिमकोर नीजर जोग-लिया कानी फंकी ।...जोगलिया री पाळ माथे मुस्तैद ‘इरणा’ उणनै भूत सू कम नीजर नी आया । उण सोच्यो...अठीनै देखू ई कोनी...घणो डरणे सूं ई मोताड खड़घो हवै । अबार एक खेतवाई री ओजू रैयी है आ डेहरी, अबार निकळ चालस्या...इयां मोच’र बण बळघां री काछ बिचाळै हाथ घाल्यो अर टिचकारी दैयी, पण सीलिये-धोळिये री चाल सागण रैयी । बो बळघां रै माठेपणै माथे जाड़ पीसण लाग्यो । साळा दोनूं ई धरम भाई है । आजलम कोजी पचासूं मौदा कर लिया पण बड़ा माठा बळघ तो दैस्या ई कोनी...पण, किता दिन रैयसी ? आगली गोपआठ्यू रै येळें में निकाळ देसू साळा नै ।’ ‘इण रै सार्ये ई उण सीलिये रै अेक घुद री मार नांखी अर बड़बड़ायो—“मर साळा कदै ई तो खातो चालणे री ‘सोगन भांग लिया करो ।’

। सीलिये-धोळिये, माथे घणी री वाते रो रती भर ई असर नी पड़घो-

पण ऊट्टा गोपण सागम्मा—'तू गाळो गाटियो मोशगर म्हानं गात्रो
पनाय गकं है कं ? गूटो हरामी। विनरो ई नेम गूं घणी नी बम्पो।
कूटनी पामरी अर निकाल काड्या दूजी ठोड़। कपरो भी बस्ती मूं माद-
मूग'र नारं अर फंरं गरपट पाम न्यारी नारं।'।

दयात पो बळपां री मनपत भावम्मा। गाडी रं सूअं विषाळें बंठी
'दुरगली' सू बोस्यो—“ले, तू थोटी आगीनं आय'र बळपां री राम
पकटलें, इनरं में हूं अेक कामटी तोड़ स्यावू। अे दयां ई धानन जोणा
मोनी।”

दुरगली इणगत बंठी रंयी जानं कानी रं टाटा लगायंडा हुवें।

“मुण्यो कोनी...गोपो पड्य्यासी...अर भोजू ताई दुकोमो ई नी
आयो है। एक तो पारं बाप हरजीई दयांई दिन भायवा दियो, अर फंरं अे
मादरका काड़ मळप टको पावडो भर रंया है। ले राम ले। हूं कामड़ी
तोड़ स्यावू ?” यो बळतो-भूजतो मो बोस रंया हो।

बा इण बार भी की नी बोली, पण बण जबरदस्ती राम उणरं हाप
में झलाय दी अर अेक खीप कानी लंफयो।

यो खीप कानी लंफ रंयो हो अर उठीनं दुरगली जकी लासी ताल्लूं
साम मोस्या बंठी ही, नैहचे सू सांग लियो। फंरं घूंघट री अेक कोर
उठाय'र खीप कानी जोयी। सीलो करम खीपड़ी हो। बा सोचें ही—
“हरामी ज्यू ही सांपई मे हायघानं, परडोट कस ज्यावें। राम मादयो।”

अठीनं यो खीप री डाळी तोड़तो सोच रंयो हो। “हरामजादी आ
दुरगली भी किता टमुभा कर रंयी है। छिनाल काठी-काठी फंरं हुय रंयी
है। बिड़दू काको केवें जकी बात साव साची है—त्रिया नं त्रास मली...
राजा भोज अे भाणमती नं त्रास नी देंवतो तो ? बाप रो मघाधणो, रडार
रं लारं भाटं रो हुवण जाय रंयो हो पण, आधीटें मे अकल आयगी...
लगायी तीन-ब्यार हरी बेंतड़धां कं पाघरी हुयगी भाणमती। दो-ब्यार
हरी कामड़्या लगाय सू तो आ तो कं इणरी छियां सीधी हुय ज्यासी।’

यो कामड़ी लंय'र आयम्मा। गाडी मायें बेंठतो बेंठा भी उण दुरगली
कानी जोयो हो। दुरगली लाल कपड़ो ओढायां, धान री बोरी हुवें ज्यू
बंठी ही, नी तो चुसकणो अर नी ही मुसकणो, दुरगली रं इण मूकपण

माथे उणने फेरू रीस आवण लागगी । पण उणने रीस दावणी पड़ी ।
 वयक ओजू रस्तो खासा ही बाकी पड्यो हो, अर फेरू सोपो पडने र
 नजीक हो । वण पूछ भरोइ'र नीलिये-घोळिये र सगोतार तीन-तीन,
 च्यार-च्यार कामइथा फटकारी । कामड़ी लपूसडां बायरी हुयगी, पण
 बळघा री वणकार में तो मामूनी मो तेजी बापरी ।

चिरचिर्याट्यां री भिणकार में वघेपो हुंवतो जाय रेंयो हो अब तो
 उणने आवडी अेक सू तो ज्यादा की नीजरां ई नो पड रेंयो हो ज्याहं
 कानी रात रो काळमस वधण लाग रेंयो हो । दुकोसे रो धोरियो अेक रेत-
 बाई माथे ओजू रेंयग्यो हो । दुकोसो स्याळिया री टेकरी रें नांव सू नांव
 जादीक धोरियो है । उणने स्याळियां सू तो डर नी लाग पण न्हार वघेरा
 मूं वो जरूर डरें । वो सोचण लागग्यो । अजें तो चेत चाले है, लोग ओजू
 फोंग काटण नें ई नी आय रेंया है । जे कोअी एकाध आवतो ई हुबैला तो
 सिझ्या सू पै'ली-वै'ली फोंग टाच'र चल्थी जाय । रात बासो कुण लेवै है
 अठें । असाइ उतरतें तो अठें ई मुन्याड कोनी रेंवै । च्यानणा फळकण लाग
 ज्यासी पण अवार तो काग पड़ै है अर कुता भूसै है । बोळ बतलावण सू
 रस्तो सोरो-मोरो कट ज्याव, पण आ दुरगसी तो बैरण गुमसुम गांठड़ी
 घणी बंटी है ।

वण बतळावण री गरज सू पूठ मोड़ने दुरगली कानी जोयने कैयो
 "दुरगली...।"

वा फेरू चुप रेंयी ।

उण फेरू बतळायी—'मुण्यी कोनी ? ...में तन्नै बतळायी है भलो ।
 'सू sss ओ जको मून धार रेंयी है, ओ थारे ई कोनी पोसावैला ।'

इण बार भी वा चुप रेंयी, पण सीढा ऊपरी बांधोडा हाथ छोड़णें सू
 लाख री चुइथा जरूर बाजी ।

उणने फेरू रीस आवण लागगी । रीस सू दोलडो हुवण लागग्यो
 दुकोमा री दलांत उतरतें उण बळघा रें तीन च्यार कामड़ी फेरू फटकारी ।
 इण दफ्ता दळांत हुवण रें कारण बळघ भाजण लागग्या । वो जाड पीस तो
 बोल रेंयो हो । गाडी रें धचका रें कारण उणरी बात बोटीज-बोटीजने पूरी
 हुय रेंयी ही ।

“दुरगली...धा...आ...रे...भे...में...ध...धणा फोड़ड़ा पड़ैला...
...न...अ...तो...तू...ऊँ सगळा...ट-टसुआ भूल...ज्यासी...तू भ्हारै
सू राजी रजा रैयसी तो अच्छन-अच्छन राख मू, पण धारा तो तोरा हणै
ई मुर्मड़ा सा लागै ।”

“तो तू कांभी तोरा सुधार देसी ?” दुरगली बोली ही ।

यण खीरा बळती आख्यां सू दुरगली कानी जोमो, अर जाड़ रो कटीङ्ग
उपाड़पो ।

“अच्छा; छिनाळ रै ई जीभ उग आयी ?” फँर की नँहवो वपरा—
पता धोहयो—“दुरगली सगाय'र खावैला तो घर बसतो जावैला, राजम
करैनी मारी उमर, बी हीजई हरजीड़ रै घरं कांभी पड़घो हो...मुला
दुकाटा सू माथो भांग रैयी ही । अठै ईसर री दया मू सी मुल है ।”

उणरै मोळा बोला सू बा की ठंडी पड़गी । बीसता थका उणरो गळो
अक नेहुरी ठेस पाळै पिछतायें सू भरीजय्यो ।—“रामूडा तू भ्हारै मुं
इमो कै अणूतो मुख पाय लैसी ! धारी आ अनीत भगवान तो देखतो
हुवैला ?”

उण गुमान सू खूवा मचकोड़या ।

“की कोनी देखै भगवान । हू तन्नै नातो कर'र ल्ययो हू ।”

“इणनै तू नातो केवै है कै ?”

“क्यू तो और कांभी है ?”

“किणरी ई निवळाई री बेजा फायदो उठावणो है । पण चाल कुम्याव
की ज्याव तो वो ई करतो हुवैला ।” उणरो ओ हार्योड़ो फँसलो हो ।
बिगत नै याद करनै वा मुबकण लागगी । रोही इण री सुम्याड़ मे उणरो
सिमकणो उणनै दर ई दाय नी आयो । वो दकास पड़घो ।

“दुरगली बंद कर ओ टसुआ, ■ धणी ताळ सू सैय चुकयो ओ सब;
छिनाळ धारी मा ई कदैई पतिमरता बणी ही कै ? कै मिलतो हो तनै उण
हरजीउ री कैद में । हूँ उण कसाई नै जणू कोनी कांभी ?”

“तू फेरू उणनै कसाई कैयनै पराछीत चढाय रैयो है ।”

“हा-हा चढावूँ हू पण धणी तरफदारी मत करना उणरी, गंठक री
बाख जैडा सईकडा तीन सी बाळन आयो हूँ इया ई कोनी ल्यायो ।”

वा बेबस हिरणी री ज्यूं खाली आंखियां उठाय'र रेंगगी। हरजीई री पारिवक मुळकण उणनं खारी जै'र जैड़ी लागी। वा मांय री माय बठीज'र रेंगगी। वो परमोइ छांट रेंगी हो। "हूँ तन्नं हरजीई'री कंद सू निकाली हूँ। तू जीवण पड़ज्यामी।"

"तू मन कंद मे नाख रेंगो है।"

"तू...ऊँ...अ जका बाता रा नदतर खुमाय रेंगी है, अ घारे ई नी पोमावैला हूँ तन्नं सोरी राखण मारु ल्यायो हूँ पण इण हैवाना सू खोटी दुस पावैला।"

"दोरी राख'र मार ही तो दैमी? जीवणो किण नाजांगी है।"

"अच्छा तो आ बात है?...जीवणो कोनी तो कर्न ई है मूरमागर बूचो, बांध पोट'र नाख देवू? मुरजो कुम्हार इण में ही पड़नं मर्यो हो। उण मैली तू ई रल्ल जायी।"

"तन्नं परमोइ छाटनं अर पोट बाघनं री जरुत हो कोनी पड़, मन्नं पड़नो आवै है।"

उणरा अँड़ा निश्चैभरिया बोल मुणनं वो मै सू कापण ना तो सोचण खातर जरुर मजबूर हुयग्यो। उणनं बात संभालण सारु जवरन घोर घरणो पड़घो। अब उण की जबाबदारी नी करी। वो खोइ री चुप्पी मारै घुळग्यो। ब्याव-ब्याव करती चिराट्या उणनं अपरोधी लाग रेंगी हो। अब ये मयाणिये सू निमर रेंगा ह। मयाणिये परलें धोरें सू मणकार रो ध्यानणो साम्हो दीख रेंगो हो। बावन घरां री बस्ती मणकार री किणी बाढ़ न उलांघतो ध्यानणो टिमटिमावै हो। उण अदाज लगायो अजै समक सोपो तो नी पड़घो है। रावळ री कोटड़ी रें मुंडामे हुवण वाली हताई अजे खोडी नी दीस ?

वण उतावलल करण सारु, बलघा री काछ बिघाले हाथ घाल्यो अर बड़वड़ायो—"अँ मुसरा, जै इया ई बीद पगलिया करता रेंगा तो घड़ी दो घड़ी मे ई गांव नी पूग सकाला। अर तदताई तो साव सुन्याइ हुय जायो।" वण पूठ मोड़'र देख्यो—दुरगली खामोशी चवाय रेंगो हो।

दुरगली भी उणनं कनस्या सू जोयी, उणरें चेहरे मारें धिरणा लैरायगी। पून री फटकार सू आघे बैठे रामूई रें कानां मे लगाया; फोवां

रो मेंकार, उणनै सुगंधी रै बजाय दुरगंधी लखाय रैयो ही । धोला-धुप फपड़ा में सजैडो रामूडो उणनै शैतान निजर आय रैयो हो । वण 'पिच' करनै धूक दियो । वण आख्यां उठाय'र घणी हंस सूं अळगैताई जोयो । उणरै मीतूडै रो गांव 'पूनरार' अवै घणो लारै छुटग्यो हो । भोत घणोलारै ।

गवरू, पण साव भोळै मीतूडै रो चेहरो उणरै आमे ले'रायग्यो । जाणै वा सीतूडै नै कैय रैयो है, उणरी ठोडी पकड़नै—“सीतूडा ओ आपणी जात में सौदो क्यू हुवै ? और किण ई जात में तो नी हुवै; कांभी घणा काळा खाली आपा हीज चाब्या हा ?”

वो हँमतो थको भोळैपण सूं कँवतो—“इण सारू हूँ, कांयी जानू मनै तो खुद नै भूझन आवै, पण परापरी रो चलायोड़ी रीत नै कुण तोड़ सकै ?”

“सीतू धारै में भोळै अर डरोकरा दोनू गुण लखावै ।”

वो खाली मुळण नै रैय ज्यावतो । वा फँसुं कँवतो ।

“मनै ई कोभी सौदो करनै लेयग्यो तो ?”

“लेय ज्यावै तो लैय ही जावै...” वो धीरै सोक कँवतो ।

इण बात रो निस्तारो खुद (दुरगली) कर्नै ई नी हो कै कोभी उणरै सुमरै हरजीडै नै पइसा रै लालच मे नाख'र उणरो ई सौदो कर सकै है । वा मायरी मांय अमूज'र रैय ज्यावती, सीतूडै सूं करियोडै खुद रै सवाल भायै ।

उणनै वो खोटो दिन याद आयग्यो, जिण दिन ओ रामूडो उणरै फळमै आयो हो, वा बळधा नै नीरणी नीर रैयो ही । उण दिन वा नूंबी काचळी अर कसूमल ओढणी में सजैडी ही, रामूडो उणने अक निजर सूं देखताई उण भायै रीझग्यो । उणरै हाडोहाड उणसूं सौदो करणै री जचगी । होको पीवतै हरजीडै सूं उणरै सौदे यावत बात टोरी । हरजीडै उण सूं पाच सौ मांग्या पण आखर सौदो तीन सौ में तय हुयग्यो । वो सो रो लोट भाई रो पकड़ाय म्यो अर परसूं शुक्रवार रो दुरगली नै लैय ज्यावणै री बात पकी करग्यो ।

उणनै, जइ आपरै सौदे री बात रो ठा लाग्यो तो उणरात वा सीतूडो रै, खूब सूं लागनै-आखी रात रोयी । वा सारी रात कळपती रैयी ।

“सीतूड़ा, तूं म्हारे कटार मार दे पण, म्हारो सौदो नां-कर...तू जाणें कोनी सीतूड़ा रामूडो कियांकलो आदमी है। आपरी तो दो बीसी उमर ढळगी। उणरा हाण ढळंडा है। वो मनं रोजीना नूबं मरद नें सूपसी अर थारें बापू नें दियोड़ा पईसा तीजें दिन उगाय लैसी।”

सीतूड़ो डाफा चूक हुयोड़ो सो उणरा कळपता बोल सुणतो रैंयो। वो आपरें बाप हरजीडें सू भोत धणो डरें। उण सू उपकार नी चाल सकें। नी तो हरजीडो दाव (कटार) बिना बात कोनी करे। सीतूडें नें लखाय रैंयो हो के वो मरद नी है, डांगरां नें चरावतो खुद भी अबोल डागर हुयग्यो है।

वा फेरूं भिरविरावेंती रोयी ही।

“सीतूड़ा...कांओ-कांभी सुपना देस्या हा अर कांभी हुवण जाय रैंयो है। नीतू जकें सरीर रें खाली तू ई हाय लगायो अबैं उण सरीर ने कंभी जणा भोगसी। कांओ थारें आ बात दाय आयज्यासी?”

सीतूडें री उवाज डूगे कूबें मांय सूं नीकळें ही—“दुरगली; अबैं बापू साई लैयली...अबैं की नी हुयसकें दुरगली अबैं की नी हुय सकें। तनैं ठानीं आपा वचन लोया तो राणें परताप री आण लोया...आपां राणें परताप रा बेली हां...बापू थारें सौदे री बात रामूडें सू करली...अबैं जें तनैं रामूडें नें नी सूप सकें तो वानें सरीर नाखणो पडें।”

“तो फेर दाव तो है थारें कनै ? वो पछें के काम आयसी ?” वो कापग्यो।

“दुरगली थारी हित्या करणें सू तो आछो है कं मैं खुद दाव री खाय लेवूं।”

“तो फेर चाल रातोरात भाज ज्यावा ?”

“नी...नी...दुरगली भाजनं कठें जावांला...घणो अळगो आपां सू भाजोजे कोनी। जें भाज हो स्यां तो कांयी थारी डज्जत खाली, म्हारें ई तणी रैंय ज्यासी...अळगें उलांतरें नी भाजस्यां तो ऐं ही मागण साटिया आपानें ओलख लैयसी, अर आपा रें उठें आणें तो कसण मूछनी, मठें कांओ गत हुयसी तू सोच सकें। तनैं ठानी कोओ सुटिया धिगई सिदिना कारण नें त्यार नी हुवें तो उणनं सगळी न्यात फिमामणी पडें। अर पछें जें

माई नेयेड़ी हुयें ना मोदो करणो ई हुयें । हां एक उपाव है...?"

"बोन मीनू...बोन वो कांजी है...हूं सो कां करण नें त्यांर हूँ ।"

"वो आं है के एकर तो तन्नै रामूडै रै सागें जावणो पड़सो, पण थोड़ा दिना पछे...हू तन्नै पाछो मोदो करनै संय आसूं ।"

वो भी ममभग्यो अर वा भी समभगी के उणरी इण बात में कां तंत नी है । रामूडो लूटो घनवाळ है । वो कदांत ही मोदो नां करेला । वो त्यात जिमावण रो दमखम राखै है ।

अबै वा भी सीतूडै री नाचारी समभगी के सीतूडो की नां कर सकेला । उणरै मुंडे माथे अक मरैड़ी मुळक आयगी । वा बोली — "सीतू तू भोग डरोक निकळघो...माच्याणी भोत डरोक निकळघो..." उण एक मरजोर निमकारो नाख्यो ।

तीजें दिन (भाज) रामूडो ग्योळी अंटी रै बांधनै अर हाथ में डाग संय आयग्यो । उण हरजीडै रै डेर रै आगें आपरी डांग सूं लीकटी खेंचदी । हरजीडै नें दो सईकड़ा दैय'र दुरगली नें उण लीकटी सूं बारै फदाक दी । अबै दुरगली उणरी ही । दुरगली घणी ई रोयी पण छैरुड उणनै उणरै लारै आवणो ही पडघो ।

दुरगली रो सोचणो जारी हो गण, रामूडै रै बतसाणें सूं उणरी तिन्द्रा भागीजगी, "देख अबै राबळैरै भुंडागें सूं निकळासा जको साबळ जच'र बैठग्या ।"

राबळै री हताई अबै ई खीडी ही...लोगडा आपू आपरै घरा कानी जाय रेंया हा । रामूडै नें देखनै सगळा उणनै बतळांयो ।

"कुण रामूडो रे !"

"हा बापजी !"

"किया आज कोजी नूवो सोदो कर ल्यायो के रे ?"

"हा बापजी, 'पूनरार रै हरजीडै सूं कीयो है ।।"

सगळा ई जणा हेंस्या ।

"वेटो थारड़ो काम जबरो है रे रामूडा...फट चौथे-राचवें महीनै नूवी बीनणी लेंय आवै ।"

"हो बापजी म्हा साटिया रो तो काम ही सोदो है ।"

“जबरो है भाभी ।” इतो कैय'र लोग आपू आपरें घरां चल्या गया ।
 दुरगली रै कानां में रैय-रैय'र लोगा रा साद सुणीज रैया हा कै 'रामूड़ा
 घारो काम जबरो है चौधे-पाचवें महीनै नूयी बीनणी लैय आवे ।' वा
 माय री मांय ही भूमळीज'र रैयगी । वण अेक दिठ निश्चै कर लियो...
 मन ही मन पको निरणै कर लियो... 'नी...नी...अबै तो आ हीज छैली
 (छेकड़ली) बीनणी हुवैला...अबै नूवी मां रै जाया लायसी ।'

रामूड़ रो भूपछा आयग्यो हो । वा उणरें कैयां बिना ही गाड़ी सू टूटै
 उतरगी ही । उणरें कैयां बिना ई उण बळघां नै खूटै सू बांध दिया ।
 रामूड़ नै ठाडो अचरज हुयो—कै जकी सगळै रस्तै ठसाठस ही वा अबै
 मतोमती जाणै-चूणै घर री ज्यू काम कर रैयो है । फेर सोच्यो—'टैम हू
 ममकावण करली है सा, कै अबै तो अठै ई रैवणो पड़सी ।

उण पूछ्यो—'रोटी बणायमी कै ?'

'नी अबै रात घणी बीतगी अबै दिनुगै ई जीमस्या...अबार तो नीद
 आयरैयी है...' वा अंगड़ाई लेवतां बोली ।

वो ग्याल हुयग्यो कै आ इतरी दूर मे इती रयाणी कियां हुयगी ।
 बोल्यो "अच्छा तो मन्नै भी भूख कोनी, अबै तो सो ही स्या...ले, आ
 पेटी अर वा खुणै मे पड़ी लालटेण, चसा ले !"

वण चुपचाप दियामलाई लैय'र लालटेण जगाय ली । फेर दोवू सोय-
 खा । उणनै तो पड़तै-पड़तै नै नीद आयगी, थकेलै रै कारण । पण दुरगली
 री आंख्यां में ऊंध कठै ? उणरी आंख्यां आगै तो भोळै-झाळै साव मजबूर
 सीतूड़ै री छिव डोलै ही । वण एक निमकारो नाख्यो । 'सीतूड़ा तू तो
 माव डरपोक निकळयो पण हूं तो प्रण कियो हो कै साटणी हुय'र भी 'अेक'
 री हुयसू...अबै मनै लागै म्हारै प्रण री घडी नैही आयगी है ।'

वण लालटेण रै ब्यानणै मे जोयो । रामूड़ो मस्त नीद लैय रैयो हो ।
 उणरें मुंडै मायै नीद मे भी जीत री पाखिक मुळक खिल रैयो ही । वा
 घिरणा सू बळगी, वा धीरै सीक बिना अवाज करघां उठी...अेक खुणै में
 पड़ै पीपै नै बिना सड़को करघां अघर से नीचे भोक्यो—भूपड़ रै सगळै
 आगणै में किरासणी ही किरामणी हुयग्यो । पीपै नै पाछो सूबो करनै
 आपरी ओढघोड़ी ओढणी उतारी, ओढणी उतार नै उण किरासणी में

भिजोयली। पछै लालटैण नैड़ी सिरकायनें घोरै सौक पाछी सोयगी, किरासणी सूं भिज्योड़ी ओढणी आपरै माथै ओढली अर अेक पल्लो उणरै आघै अंग माथै न्हांक दियो; भूपडै रो एक डोको खोस'र लालटैण सूं चसालियो, डोकै ने अेक'र रो घरतै लगाय लियो; अर पछै आप माथै ओढघोड़ी ओढणी रै लगाय लियो।

अेकै सागै ही जद च्याखूं कानी सं ओम रामूड' रै लाग्यो तो वो चिम-कर बैठघो हुवणो चायो। पण बैठघो नी हुय सक्यो। दुरगली आपरै पूरै जोर सूं उणरै बाथ घालली। वो पूरी ताकत सूं तड़फा तोडघा पण बा भी साटणी री जायी ही...हालण नो दियो—बोली, “रामूडा ऊपर आळो सगळी अनीत देखै है।”

इण हरख सूं तो कोई सती भी काखी बलती हुवैला !

रुधोड़ा मारग

घर में बड़तां ई उणरें मायें में मगळी वे बातां पाणी में डूब'र दम तोड़तें मिनस री भांत ऊंची उभर आई ।

मा रो रोस अर खीज रलियावणी सुर गूजै—“खाली हाथ ई आयग्यो ना ?” फेर दुखरावण लागसी, “हम्में भई तू बूढ़े बारें और कांभी करसी-चाय ई तो छुडायसी ।” फेर अक लांबो मिसकारो, “सुख कठे है रे सुख कठेई कोनी ओ तो भागां सूरू ई मिलै—खाली ओ ई क्यूं रतनाराम भी तो आपरी मां रें अक ई है पण चाम तो कांभी दाळ रो सीरो खावै तो ई मनाही कोनी...तनै दोस कोनी लादेसर लेख बिधाता रा...”

फेर मां कौं ताळ ताई बोली रैय जावै...बोली रैय'र आगै कीं कंवण री भूमिका घड़ै, बापू री झूझत परमासीजै—“सालू त्या देवतो रें पच्चास गिराम चाय, बापड़ी निकाळ लैवती बडका रो नांव ।” बापू छिणेक खातर की सोचै अर मळै बोले—“कहू: नशो है, नशो क्यांरो है, घाटो जलमायो है अंगरेजां ई कीर मुलक मे । आप तो मरग्या बुगम्या आगा अर ओ नफे रो भरियो अठे संमळाय्या खूब पीओ दिन मे पांच-सात दफा कोनी कोई बरजण आळो कोनी अर बरजै ई कुण ई बिना तो उठतां ई दिनुगै-दिनुगै सगलां रें त्याळ्यां पढ़ै ।” बापू छिणेक चुप हुय जावै ।

अी घर में कांभी पूरै मौहल्ले में ई खाली वो अर उणरो बापू चाय नी पीवै । इण खातर ई उणरा बापू चाय पीवणियां नै जी भर-भर'र

भाटें । बापू ध्यावग मू मां नै ममभावें—“लाई दिन भर मूं सट’र जागो है बांयतां ई तूं गावणो गरू कर दियो...”

बापू चुप हूवें नही के इतरें मां री हलकी-हलकी गिमनयां बितरण लागें ।

“कां रो ई बुढ़ापो बिगड़ै तो पछै मायळ तो बिगड़ै, पण तू तो करलें धन भेलो, फदाम धारें तो हेली बणै । म्हारो कांभी म्है तो पका पान हूं—मास दो मास दोरा-मोरा ई काट लेस्यां...पण तू तो कर धन भेलो...”

मां री मास में कैयोडी बात उणरें काना में गरम-गरम मौसै री मात ऊतरै पण फेर ई वो मून धारधां राखै, मून नै उण आपरें नरीर रो एक अंग बणाय लियो । वो मोल बालो मुन्न में गम्प्योणां मां आंगण में परीठी री छोटी भीतळी मायें बँट्यो मा-बापू री बंतळ मुणतो रैवै । बंतळ रो विषय वाली धाय ही बयू घर री भूष सूं जुड़ता और घणाई विषय हूवै । उणनै चेतै है मा-बापू री इन बंतळ में समझ पकड़्यां पछै भोत कम औसर अँड़ा हूवैना जद दोवां नै हरस सूं बातां करतां देख्या व्हेला । मां-बापू री इन बंतळ मुणनै में बदजात मुगनड़ी (उणरी सुगाई) रोटी बाळ नाखै । रोटी बळनै री मुगंघ मां रै नाक में घुस जावै । पछैम मां रै जळजळाकर गुस्मै रो घेवाय उण कानी हुय जावै ।

“ठा नी हरमेस कठै गमेडी रैवै । किसो दिन इस्यो हूवै जकै दिन रोटी बाळियां बिना रैय जावै । काम कठीनै ई करै है अर बाको कठीनै ई फाड़मी । काम तो काम रै भळ हूवै...आछो ढगळ पानै पडघो—कोई काम ढंगसर को कर जाणै नी...जबरा फूट्या सालियै रा ई भारज्या मरोसै...खालिया कमा’रतूं...गर्धे शीईकमाईअर आ गमाई...तूं भाज्या राखी अर आ लेखै लगाया राखसी...म्हारै माटी नै दोय टैम तो न्हावण-घोवण नै चाहीजै । पढ़ी-लिखी कवको ई कोनी पण न्हासी-घोसी दो टैम जरूर । जाट री बेटी’र काकोजी नाम...देखी कोनी बालिस्टर री बच्ची नै । इयाकलां फरफटिया सूं घर कोनी बसै ।” मां थोड़ी ताळ खातर बिसाईं खावै पण उणनै लखावै कँ हाल तो वा आपरी बीनणी नै चौयाई सबड़घकै को लैय सकी है नो आ सोच’र मां आपरी बिगत री बीनणी सूं ताळमेळ बँठावतां थकां पाछो बोलणी सरू कर देवै ।

“अठे तो आखी ऊमर खोदल्हो ई खोदल्हो करघो । कदै ई रात नै रात नीं जाणी अर दिन नै दिन सो को जाण्यो नी जर्ण जार-पार पड़ी । उठतां ई तो पक्को पांच सेर ‘पीसणो’ पीसणो पड़तो अर आज कल्यारां सू सेर ई पीसावो नी देखां-जोर आवै । काम-काज की नै सुहावै है... चोखो खा लेवो, चोखो पैर सेवो, हम पीया हमारा बैल पीया अवै कूवा दुड़ पड़ो...। अे आज देख’र कोनी चाल आरो काल कुण धणी हुयसी । टैम ताग्यां कीरघावो ई खिडमी, देखाणी कियां पार पटक... म्हे दोरी-सोरी पार तो घालली आं में हुसी मूडे सीतरांली... सगळा फटफटिया धूड में नही मिल जावै तो मन कैय देया । बच्चुआ भाजोला तो ई पार नी पड़ला, आगै जमानो ई धारें मायें बांधें जेहो आय रेंयो है...”

अेकल बोल्यो ई चलयो जावणो मां री साघ्योड़ी बात है... इया किसी मां बोलणें में गड़गड़ाहट पोड़ी ई चढ़ जावै... बिचालें-बिचालें ठैर-ठैर म्हारा मुंडा भी जोवै... सुगनड़ी कानी ई जोवै... मां भूल जावै कै उणनै हाल सुगनड़ी नै लबड़घकें ओरुं लेवणी है ।

“करल्यो मजा... किताक दिन करो देखां... हाल तो तिलक काठीज्या है ठा: तो सूक्या पड़सी । बूहा तो पैसी भी हुया करती, मजाल है मूडो धीखज्या, पण आजकाल तो सरम के चीज दुबै आ जाणै ई कोनी । उधाड़ें मुंडें सांढ़ नाई आगी कर निकळ जयावै । म्हारें काळजै राध पड़गी आं बूहा नै देख देख’र पण की नै कैंवा कूवै ई भाग पड़गी । आंधें आगै रोवो अर नैन गमाओ । म्हारें माटाळी काम मे साव कम कस अर खावण-पीवण मे सासवां सू आगै । चाय दूजै कीनै ई मिलो ना मिलो पण अे तो दिनुगै सूणी त्यार...। पण पी सी कठै सू खसम स्यावै घणी नी...।”

अर बात जठै सू सलु हुयी उठै ई आय’र सांस खावण लागगी । मां री सास खावण री फूरसत नै बापू भरणी सलु करदी—“तू तो इयां कर... धायलारे सती हूज्या...” बापू मुळकें—“दोबू बिना पीयां को मरां नो तो मरै तू ई परतिया को नी... ई रांड ऊकाळी में कोई नशो कोनी पण पीवै क्यूं कोनी मीठी बलें नी... चीणी हुदै नी मांय आठ रिपिया कीलो रो... नशे री बात हूंतो ई में अद जाणू जद लूण घाल’र पीवै...”

बापू बात ई चिखो लागै जेहो करदी अवै मां बोली कीकर रेंय जावै ।

कुम्हार-कुम्हारी न नीं न्हावड़ सकें तो गघड़ी रा कान सीवें ।

“हां-हां, अब इती ई बाकी रेंथी है बुढापे में लूण री चाय तो पाय ई सी...आ तो उम्मीद ई ही । ई खातर ही तो बडो करघो हं । दसवीं ताई पढायो हो (अबें मां न कीकर समझाऊं कै मा आ बात में नी बापू कैयो है) ताकि लूण री चाय पा सकें ।”

उणरी होड़ भळै उणरें पाडीसी रतनाराम सूं हुयें ।

“रतनाराम भी अक ई है पण घर में चीज बसत री धेड़ लगायोडी राखें । बापडो मां-भाप सार समझें । रिण उतारें...। ई नें कैठा: ओ तो अबें अफलातून हुयग्यो । खेजड़ा नें कूण बडा करघा हा । खुद रात-रात भर गीलें में सोयी अर इनें सुकेड़ में सोवाण्यो । लगातार तीन-तीन माल ताई काळ पडघा पण ई नें तो ठा ई को पड़ण दीयो नी । मजूरघां माथें जा'र दोरो घणो पढायो है । साडो-कोडा परणा-पता दीयो...घोड़ सी बीनजी ल्याय दी भळै ई म्हा में कोई कसूर हें ? स्तो की करो पण ई रें कै अहमान है—कद ई सोन री तीब ई को देखीनी पण ईरी लुगाई रें तो भरी तीन घाल्यो अलबत पढ्यै-लिख्यै रें लारें आई है साब कोभी लागसी म्है तो म्हा कानी ऊं तण्या ई तण्या—पण अर ओ कै जाणें ई बात नें । दमवी कराया पछै अक साल ताई नौकरी खातर इयां ई भटकतो फिरघो तो ई म्है जाणो लाई नें कै तग करां नौकरी किसी ई रें हाथ री बात है । नौकरी लागसी जणा हाफें ई स्तो कीं ठीक हुय ज्यासी-पण अबें किता ई दिन हुयग्या नौकरी करतें नें आज फगत दिनुयै नौकरी माथें जावती बँला इतो कैयो हो वेटा आवतो एव पाव चाय लैय आई । जाबक नीबड्योडी है पण सफा खाली हाथ आयग्यो । ठीक...।”

मां आपरो लांघो भापण दैय'र चुप हुय जावें ।

अबें वो मां कन आवें । बेवसी सू उणरी आंख्या मरीज ज्यावें । दिनुगें वो मां सूं वय कूड़ो वादो करग्यो आ जाणता थकां भी कै पूरो अक महीणो हुयां सू पैसां वणरें हाथें एक पईसो नीं आय सकेंता । अर बिना पईमा वो मा री मगाई चीज कीकर लाय सकमी ।

दिन में उण एक दो दफा जरूर ओ दिरढ निश्चं कियो हो कै वो जे. ई एन. सू एकर पाच दस रिपिया उचार मांग लेसी अर पछै मस्टर

रोल घणसी उण माय सूं कटा देसी पण जद-जद ई जे. ई. एन. उणरें सामें पड़धो उणरी हिम्मत जबाब देंगी। वो पईसा मांगण रो साहस नी कर सय्यो।

लूठी पगचंगी कर'र तो वो वाटर बक्स री इण डेली वेजेज री नौकरी नें पाय सक्यो है अर इण में ई बिचाळें पईसा मांग्या सूं कांभी ठा: अफसर नाराज हुय आवें तो ? तो वो आ कळपना कर'र मन ही मन धूज ग्यो। नौकरी खातर रुळियार गयोड़ा लारला साल उणरी आख्या आगें लैराय-ग्या।

वो आपरी मां मू माफी मांगतो थको गिडगिडावण लाग्यो—

“मां हूं गुनहगार हूं लावण रो कौळ करघां पछै ई हूं लाय नी सक्यो। म्हारी नौकरी नें पच्चीस दिन पूरा हुयग्या। पाच दिन पछै मन तिनखा मिलसी... उण दिन में तनै पूरो एक कीलो चाय लाय देसू। ओ पाच दिनां रो कष्ट भेलो कष्ट है, बाम सूं उधारी लैय आवो। दिनूगें सोच्यो एकर अफसर कनै सूं पईसा लैय'र चाय लैय आवू पण मां हाल कच्ची नौकरी हुवण सूं में ओ माहस कर को सक्यो नी।”

पाणी सूं भर-भरीज ज्याबें आख्या। एक नाजोगी छोटी सीक चीज खातर कितो कालजो दुखायो है में मां रो।

“आ बात तूं दिनुगें ई बताय देंवतो...। हूं इती बातें कैंवती ई क्यूं, इता दिन धिका लिया जर्ण अब किस्सो पांच दिन कोनी कढ़े हा...हूं ई की मोकळ मुंही हूं ई घणी...वा लाडी वा चोखो...ले हाथ धोयलै, बीनणी बाली ह्यायी...”

नूवो भीसम

कृपाचो माथें गू हेटें मेहयां पछें, उण माव निचेंताई सृ मांम सीगही ।
 तीरू झू गुरजी कानी जोयनं अकर जोरदार आळग मोटपो । टातीं
 मरीर री किरण अंग में गू तीन-चार कटका कटीड करता निकळया ।
 उन्हाटनी सृ दयनियो मरनें यात्र नंटे वंठ'र मुई आग्यां माथें केई छावका
 माग्या । बाकी नारें रेंयो जके पाणी न गिर माथें उन्हा लियो ।

उणनं लग्नायो जाणें ठंडो पाणी उकळनं हीग ते पोर-पोर में पैरायो
 हूयें । यो सोचे—ओ पाणी भी कंडी गुगनायी चीज हूयें, आगें दिन रो
 धापो पाकेलो तो एक डोलिये पाणी गू ई जावनां रेंयो । अक डोलियो कंहे
 डोळण री दळ्छया हूई पण आगें उन्हाटिमे में कम पाणी हूवण सूं उणनं
 आपरी दळ्छया डावनं रागणी पटी ।

उण पाणी भरतें मुई नें पूछया नी । आले मुडे माथें भीणी-भीणी
 पून टाटी ई गुवार्य । यो डोलियो लिया बाइ कनं ई वंठपो रेंयो ।

मुटो धोयां पछें मदीय ई यो अकर कां ताळताई मपली माथें आडो
 हूयें । जटें ताई सीजकी आ नी कंय देवें—भामर याजण री वगत हूयगी है,
 हू धाटो ओमणू, धें निमट-निमटार आय ज्यावो । यो मशीन रो गळार्ई
 सोटो जेवनं धोरां कानी निगर जायें । धोरां जायें तो यो धोरां माथें ई
 केयो जेज निमट'र आया पछें रेत सू हाय मांजतां-मांजतां रेतण लाग
 जायें । ठंडी-ठंडी रेत उन्हाळे में हाथा-गंगां रें घणी गुवार्य । यो आगो दिन
 सफटियां फाटें । सकडियां फाटनो उणरी वारूं माग री मंघ्योई कार है ।

अँधी बात नहीं है कँ उणरी जात आळा सँग लकड़ियाँ फाड़ने रो ई काम करे । कँयी उन्हाळें सियाळें चेजें-कमठाणे जावें, कँयी उणरें दांजी लकड़ियाँ ई फाड़ें, कँया रें दो बीघा जमीन है, जका छव महीणा उण सू उद्यम करे । पण यितू लकड़ियाँ फाड़ने रो काम तो एक वो ई करे, चावें किसी ई रुत हुयो । लकड़ियाँ फाड़ती वँळा वो घणी ई सावचँती बरत । हाथ-पग, आंख-नाक री, पण नही-नही करता पांचें-सातें एकाध लकड़ी रें किरचें री लाग ई जावें, अर लागें जकी ई घणकरी गोडा मू नीचें जठें धोती सू उगाड़ी पिड्या हुबें । उण लाग्योड़ी ठोड वो निमट'र आयोई पाणी गूं घाळू रा आला पोडिया घणाय-घणाय नें चेपें । उणरें रेन दुआई रो असर करे । दूजें दिन लाग्योड़ी माथें सलुट आय जावें ।

“तो अब बाढ़ कन ई बैठपा रयसो कांभी ?” तीजकी कँयो, तो वो गोडां माथें हाथ देंवतो उठयो । मुडें माथें कंवळास सू हाथ फेरयो । पाणी सूक चुक्यो हो । उण डोलियो सागी जाग्यां राख्यो अर मंचली नैडें आयो तो मंचली री दसा देस नें ई मोचण लाग्यो । एक आ मचली ई लागण उणनें कितरो आराम देवें, फेर भी बापड़ी री कांभी दसा हुय रँयो है । हुबें पण क्यूं नी, ईस-सळू तो ठाः नीं कद रा है, मूज नें ई बापड़ी नें दस साल नैडा हुवण हुका है । ठोड-ठोड सू खुस-खुस नें नीचें लटकगी ।

उण मंचमी माथें बैठने नीचें जोयो—च्च...च्च...च्च ले भई गिणसी में ई नी आवें—एक एक करतां खुस'र वणगत रा आधें सू घणा तातां धांड्यां री दाई लटक रँया है, बिचाळें धूब पड़गी जकी न्यारी । अब आने गांठपां दैय-दैय नें कितरा दिन धिकावुंला-मरघोडां रो कांभी जीवें । गूज रा लटकता तातां नें देख'र उणनें टावरपणें में बाबें री सुणायोड़ी एक काणी चेत आयगी कँ आगे कोरवां-पाण्डवा में एक दादो भीसम हुया करतो, जको वाल-ब्रह्मचारी हो अर मरघो जद तीरियां माथें सोयनें मरघो, ठाडो ई अपरवळो हो भीसम दादो...बियां अपरवळी तो हूं ई कांभी कम हूं आखें दिन ठूठियां रा भोड बाहू...अर आयण आयनें उणरें (भीसम) ई दाई इण मचली माथें सोवू, इणरें ओ लटकती मूजवड्यां तीरियां दाई तो लखावें है—उणनें आपरें सोचणें माथें हेसी आयगी ।

हेसी ठम्यां पछें वो फेरूं सोचण लाग्यो—बापू कंवता, भीसम

वापड़ आखी जिन्दगाणी मे दुख ई दुख देख्यो अर पछे बुढ़ापो सुघरयो जको ई जुध में । वापू कँवता—भीसम'र कोरू-पाण्डू अ सगला-सगला केभी सँकड़ूं बरसां ताई जीवतां, हुंह ब्यू कोनी जीव सक हा, वो सतजुग हो सतरै पाण जीवता लोग, एक-बीजै नै चांवता लोग । अब तो सँकड़ूं किणनै हुवै, पेसठ रा ई कोई कोई सा हुवै । आदमी आदमी रँ बटकी बोढ़णी चावै । कोई नित चावळ सिजावै, केई लाघण ई काढै, पण किणनै जोर, कळजुग है, पण म्हाटो ओई खाली गरीबां रँ खातर, पईसांळा रँ तो ओई हाजरी भरै । गरीब जै साठ बरस ई जीव सँवै तो घणी है, उण खातर तो । इतरी में ई नाक नाक आय जावै ।

हूं अजैस दो बीसो उमर को खाई नी पण लागूं जाणं तीन बीसी रँ नैडे उमर लैय लीन्ही हुवै । चांखी भी है, ओपै है मनै उमर । साठ बरस सूं जै दोय बरस और ऊमर हुवै तो और ई ओपै मनै आ उमर... अब किणनै चाईजै जुवानी, जुवानी तो मां-बापू रँ सागै ई भरगी ही... कांभी करणो है जुवानी रो... अठे तो आखो दिन लकड़ियां फाड लेवू जितरी जुवानी चाईजै, इतरी है । उण री आख्यां मे पाणी साधरग्यो अर मुडै माथै मुळक आयगी । वो छाती माथै बेगो-बेगो हाथ फैरतो रँयो । वो मांय ई-मांय असूझ रँयो हो । जाणै उण की सांतरी चीज गमाय दी हुवै ।

पिछतावै सूं तो खाली दुख हुवै । वो इण बात नै जाणै, पण फैर भी उण रँ आगै पिछतावै आळी ढकी-दूमी बांतां उधडण-उधडण लागी ।

हां याद है, वो अर उण रो मोटो भाभी छोटा थका ई हा कै उण रँ बापू री आख्यां जावती रँयी, पण फैर भी रड़-भड़ नै कियाई कर'र बापू दोवू भाया नै पाळया । मोटै भाभी रो ब्याव बापू जीवता जीवतां ई कर दियो । मोटै भाभी रँ ब्याव रँ दूजै-तीजै साल ई एक एक साल रँ आंतरै सूं मा-बापू सरगां मँळा हुयग्या, घर में खाली दोवू भाभी । मोटै भाभी री मुकलावो अजै हुयो नी हो । पण भलो मिनख भोजाई री बाप, मुकलावै रँ दस्तूर कियां बिना भोजाई नै पूगयग्यो । डेण-डेणी लारे सजै सारू दाणा ई खिडाईज्या, पांच पचीस माथै ई हुया । मायाळा पईसा दोवू भाभी कार करने चुकाया । उणरी भोजाई रामजी री जीव आयतां ई घर मम्हाळ लियो । मा-बापू री ओमर करघां पछै घर मे घादो दाणो

ई ना हो, पण भोजाई नाक सळ कदैई नी घाल्यो । कदैई कोओ कमी परगामी नी । आथण काम कर'र आयोडा नै प्रेम सू खीच घालती ।

दोवू भाभी क्रिया ई कर'र आघो घिकावंता । धीरै-धीरै रामजी रो संजोवण, घर में नानकड़ा ई आया, खरचें में फेरूं वधेंपो हुवतो । एकाध बार तो नी, पण पछै ओ खरचो अचेरो भी लागतो, खाली मनै ई नी भायै-भोजाई नै भी, पण सांई री कुदरत नै कुण पूर्ण । दोवू भाभी जिया-सियां कर'र सेंग जीवां रो पेट भरता ।

इण तासातोई में उणरो उमर ब्याव री निसरणी रै गातां सू आगै निसरगी । अंडी बात नी कै उणनै छोरी नी मिलती । ब्याव सारू की तो चाईजै ई । पण उण अर उण रै भाभी कनै तो वा 'की' ई नी ही । भाभी-भोजाई राह्यू उणरै ब्याव री चिन्त्या मे घुलता । एक-दोय दिनां री बिचाळै-बिचाळै उणरो भाभी मजूरी खोटी करनै, उणरै ब्याव सारू तड़फा तोडणनै ई जावतो । घणो नी तो आगै बेटी रो बाप चांदी री सांकळी-बोरियो अवस भागतो, पण उणरै भाभी कनै तो वो ई नी ही । टैमोटैम जटै दाणा बापरै उठै सांकळी-बोरियै री बात ई क्यू करो । भाभी हारनै घरै आय जावतो, पछै उण दिन री रोटी भाये नै नी भांवती, भायै-भोजाई री अंडी कळपण सू वो कामो हुय जांवतो । छैवट उणनै आखतो 'हुय'र केवणो ई पड़तो ।

“भाया, धानै म्हारे ब्याव री इती कांभी चिन्त्या लागगी ?”

भायो रोवणवाळी मुळक मे कँवतो—“चिन्त्या...अठै तो पहाड़ वण रैयो है चिन्त्या री भायै ऊपर ।”

“वा ओ वा भाया, आ ई कोओ बात हुयी, ईयां हूं कांभी छोरी हूं जको थै इतरा डरो अर कळपो...आपणी जात मे तो घणा ई कुवारा रेवै ।”

“नही रै भाभी, आपणी जात में रैवता हुवैला पण आपणै वडकां में तो कोओ नी रैयो, कदास आपणै ई सौ-पचास बीघा जमड़ी हुवती ।” आगै भायै सू नी बोल्हो जांवतो । एक चितराम मंड जावतो ।

माल-साल रै छेई सू मां-बापू नै सौ साल पूगणा अर उणरो सेत-बाणियै रो हुवणो, उपरात पाच छः माल री बैंगार खाटणी । पण हुवो-

हुवावो, अढ़ो तो भिनखां रो सो काढ़ दियो। कोयी अमीणी तो नी दैय मकै कै थारा मां-वापू आकड़ां में फिरै घूड उड़ावता।

वो भायै नै समझावतो—“भाया अणैसो ब्यू लावो, हूं धानं म्हारै ब्याव खातर जै कदेई दो जबान केवू तो जबान बाढ नाख्या, आपां तो फूटरा हिनमितल रैयमां।”

“नही आयी तू नीं जाणै, अई सागण न्यात विरादरी आळा काले मां-वापू रै अढ़े नै सरावै हा, जका पाछा नाक माथै मारण लाग जासी... काली करघो मां घराणो, भाजी तो टांड सो कुवारो फिरै... इण खातर भाजी जीवतै जीव नै मो की करणो पड़ै।” भाजी रै मुंडै माथै घांछक मी पूतण लाग जावनी।

वो जाणै सागण बातनै, कै भायै नै बेटी आळो वाप क्यूं खाली काढ देवै। मैंग बेटी रा बाप जमी टटोलै, घर जाग्यां देखै, पछै बेटी देवै, संग धन-डांगरा अर घर-गवाडी रै लारै बेटी देवै। टावर (छोरो) नी देवै, उणरा गुण-भौगण नी देखै। जखरी है उणरी विरादरी री रीत। असल मे साकळी-बोरियै री बात तो पछै है अर जकै कनै इतरो सरजाम हुवै उणरै खातर तो साकळी-बोरियो भी भारी नी हुवै, एक मैस बेचै उण में संग हुय जावै।

उणरै भाजी कनै इण मंहगाई रै जुग मे नी हुय सक्या मांकळी-बोरियो। बिनां साकळी-बोरियै रै वो कीकर परणीज सकतो। पण फैर भी ब्याव तो उण रै हाथ री लीकटघां में मडघोडो हो, सो हुयो।

उणरी उमर रा पागड़ा तैतीस-चौतीस नै पार करग्या जणै उणरी भोजाई री मोटी बैन विधवा हुयगी। भोजाई री बैन रो मोटघार दम-घामी री रोगी हो, एक दिन मर पूरो हुयो। भोजाई री बैन रा हाथ हुळका हुयगा। पण उणरा हुळका हाथ छोटी बैनड नै नी सुवाया। उणरै ई तो देवर कुवारो हो। भोजाई भाजी सूं गुरवत करनै एक दिन उणनै पूछवायो।

“लालजी थे तो जाणो ई हो उण वापणी उण खसम रो कांभी देख्यो हो, वो खाली जाग्यां रुध राखी ही, कोरो अडेसण हो।”

“कृण भाभी?”

“कुण पछै कुण, म्हारी मोटोही बेन सायण तीजूड़ी ।”

“हां...आ तो थारै वापूजी नै पेलां सोचणी चाईजती ही ।”

“मिनख रै किसो माय बडीजँ ओ लालजी, अर पछै रोग दोख तो सारै ई किणरै सायण तीजा रै करमई में ओई चिडपिडां मुआग लिग्योडो हो ।”

“.....” वो चुप रैंयो ।

“नामजी अक बात केबू, हुयमी तो छोटे मुई रो मोटी बात, पण फेर ई...।”

“केवो भाभी हूँ कांभी थारी बात रो दोरो मानू ।”

“नही दोरो तो कदेई नी मान्यो पण कठेई थे उत्तर दैय दियो तो म्हारे कांभी माज्जो रैंयो ।”

“व्यू माज्जै आळी अँड़ी कांभी बात है ?”

“है जणै ई तो—हूँ पीरै सू आई तो वापू घणा गळगळा हुया, रोंवण लाग्या—सोनको तू थारै घरै सोरी-मुखी है पण सायण तीजूड़ी रो कांभी हुयसी, जणा हूँ बानै की भरोसो देय आई ।”

“भरोसो । कांय रो भरोसो ? म्हारै कोभी बख पडती है तो केवो ।”

“है तो बख पडती ई...।”

“जणै केयनै देखो ।”

“कैय वू ?”

“हां...हां...।”

“हूँ थानै वहनोई घणावण रो वापू नै केय आई ।”

“भाभी ? ओ कांभी भरोसो दैय आया ।”

“जो तो मनै टा: ही, आ कीकर हुय सकै, म्हारै मोटपार सू छोटा देवरजी अर म्हारै सू मोटी बेन नै वै लुगाई कीकर मान सकै ?” भाभी रा डसका फूटण लाग्या—“अठीनै देवर कुंवारी, उठीनै बेन विधवा ।”

“नही भाभी रोय नै क्यू मन मेलो करो, कोई कुंवारी नी रेंवेला थारो माज्जो राख सू ।”

“नी ! लालजी ! सावरिया देवर तो देवें तो जुग में अँडा ई दिज्यो ।”

भोजाई री बात राखीजी, उणरो ब्याव हुयो। पण नी वो कांय रो ब्याव हुयो—चाळीस री लुगाई चौतीस रो बीन। अर पछे लुगाई ई दमै री मरीज। पैलड़े मोटघार सू वा आ मोटी चीज सागै ई हुय आई हो। बां दोवू नूवा परणेतो खातर भाजी-भोजाई अलग सू भूपड़ो बांध दियो। पाच माल सू बो इण भूपड़ै अर उण रोगल लुगाई रै सागै रात बासो स्तेवै।

उणनै याद आयो—बापू कँवता, भीसम बाल-ब्रह्मचारी हो, पण बापू नै नी ठा: हो के उणरो ई अक बेटी भीसम हुयसी, साब बाल-ब्रह्मचारी। उणरै बाप री अल चालेला, पण खाली अक बेटी सू। दूजीड़ी बेटी तो भीसम है नी—उणरो काम कोई अल बचावणो थोड़ो ई है, उणरो काम तो तीरियां माथै सोवणो है।

अकर आमै कानी जोगनै वो उठ बैठभो हुयो।

“ले भाजी कितरी जैज हुयनी घोरियां माथै ई बैठघो हूं-हूं ई कैड़ो पागल हू।” डोली हाथ में लेयनै आंख्यां पूछतो वो आपरै भूपड़ै कानी खाना हुयग्यो।

सांसर

सनिवार रा बंक रो काम और दिनां सूं बेगो ई सलट जावै—बियांस सलट काई जावै—संग बायू आसै-पासै रा हुवण रै कारण इण दिन बैगा ई टाबरा मैला रखना चावै। इण खातर जरूरी-जरूरी काम मलटायर बाकी छिटपुट काम सोमवार खातर पेंडिंग राख देवै क्यूँक अगलों दिन दीतवार हुवण सूं ये काम हू तो इया ई को सकंनी—खैर।

शनिवार अर दीतवार टाबरां में बितायां पछै सोमवार रा तो भ्रांम्भ-रकै ई घूपरळो बालनो पड़ै। क्यूँकै हूं जकै कस्वै री नौकरी कहं उण ताई दिनुगै बेगो पूगण रो साधन छव बजी आळी ट्रैन ई है। छव बजी आळी ट्रैन दिल्ली सूं आवै, उण रै पछै अगली ट्रैन साढ़ी दस बज्यां आवै। उण सूं पूगण रो सवाल ई नीं, क्यूँक बेंक रै टैम तो वा अठै आवै अर रही बात बस सूं पूगण री' सो पूछो ई क्यूँ—राम रखाळां है—अंक तो टैमसर आबण री गिराटी कोनी अर दूजै म्हारै जिता नितरा हिंडा खावणिया नै बस री अंम० एस० टी०, ई को पोसावै नी। ट्रैन री अंम० एस० टी० रो बापड़ी रो लागै ही काई है। बस री अंक महीण री अंम० एस० टी० में ट्रैन री साल अर री जात्रा हुय जावै।

रात मोड़ ताई हताई करणै सूं आज आंख की ज्यादा देर ताई लागी। उठयो तो देख्यो—छव बज चुकी ही। मेरा दिया—आज तो बसटो सूं ई जावणो पड़सी दीखै—लाग्यो दीखै रुपिया आठ रो बटी पण काई ठा ट्रैन लेट-सेट ई हुवै—थोड़ी धणी लेट तो हरमेस ई हुवै ई है

परवाळा माथें कूडो-माचो भीकतो—सगळा नितकरम करतां कुल पन्द्रह मिन्ट लगाया अर ले साईकिळ ठेसण पूगय्यो। गाडी तो पूण घंटो लेट है ठा लाग'र ध्यावस हुयो—खर सल्ला मोडो उठ'र ई टैमसर पूग तो ग्यो। कई देर रा आळा टोळा रें पछे ठेसण री बारलें पासली दुकान सून पान खाय'र आयो जितें में तो गाडी स्टेशन कनली गोळाई सून मुड'र मुंडो निकाळ रेंयी हो।

गाडी में म्हारो कायदो है कैं हूं हरमेस ऊपर वाली सीट जोखू—ठाठ मू मांवतो जावू। दिन उगणवाळो हुवण रें कारण ट्रैन रें अठे आंवतां-आवता लाग मुडो धोयन नीचे आळी सीट माथें बंठयो हुय जावें।

अंक खानी मो डब्यो देख'र हू उण में चढग्यो। ऊपरआळी सीट माथें चढण खानर मतो उमावें ई हो कैं इतें मे किण ई बतळायो—

“कियां बाबूजी?”

हूं पाछो फुर'र जोयो। बतळावण आळें रो चेरो पैचाण री कोसिस करी।

“कियां ओळख्या कोनी काई?” फेर वण खुद ई समस्या सुळभा दी—ओ तो मैं हूं रामेसर-मुळचासर आळो।”

अबै मनै ई चेतै आयग्यो—अरें हां सारलें दिनां दुळचासर में लीन बांटण खातर गया हा जणा हजार रिपिया रो लीन इणनै भी दियो हो। “ओळख तो लियो भाई पण काई बात है ओ-sss” में उणरें मुंहायेवें माथें अर सफाचट दाढी मूछां कानी जोय'र कैंयो।

वो मुळवयो—“ओ, तो हरद्वार जाय'र आयो हूं।”

हूं ई मुळवयो—“तो काई लीन इण खातर ई लियो हो?”

वो हँस्यां बिना को रेंय सवयो नी—“लियो तो घणो ई को हो नी पण अबै इयें खातर ई समझो।”

“कुण हा?” में वूझ्यो।

“ये समझो जकां में कुण ई नी।”

“तो कोई पारकी पुन्न कर रेंया ब्होला। बार गांव मे तो थारै रीत हुवें कैं-कैंडें झकल, हुवें तो फूल को घाल सकें नी। कोई प्यारी सेंग हुवें जको घन्न आवें। फूल जितें बारण पड्या रेंवें। घर री पुन्याई को बंधें

नी। गांवरां री आ मानवो भळै हुवै।" "ओ तो थारो कणो माचो, गाव में रीतां तो इसी ई हुवै।" इतो सो कय'र चुप हुयग्यो। उणरें गळें में घणी सारी गंगाजी री माळावां पडी ही। कनै ई सीट माये लोक-निकाट्या काढघोड़ी एक बेंत पडी ही। एक डवियो गंगाजळ सू भरियो पड़घो हो। अर एक धेलियो ई पड़घो हो। वण धेलियें में हाथ घाल्यो अर लफेंक भावळां री फुल्या अर मियोड़ा मखाणा काढघा—“ल्यो थे भळै कणै मिनस्यो...परसाद...”

“पैसोपोत मनै ई?” हूं सकतो परसाद लैय लियो अर उण मांय सू थोड़ी-थोड़ी तीन च्यार कनैसी सीट मायें बँठघा गांवेंडघां नै घाट दियो।

गांवेंडी परसाद लैय-लैय'र आपरें खूजा में घाल लियो। सगळा आप-आप री जेब सू अक-अक रिपियो निकाळ'र रामेसर रै खोळां में धर दियो। रामेसर नां नुकर करी—“अरें ओ काई करो माइतां।”

“नां लाडी ओ तो हुवै ई। असबत हर री पैड़ी जाय'र आयो है। इतो पुन्र तो म्है ई कर सका। अर पछै थारें सू सगळा बडा हा पगां लागें तो थारी मरजी है नही लागें तो कोई अणसरयो को पड़घो नी।” सगळा अकै सागै केयो। हूं ई अक रिपियो काढ़'र भट उणरें खोळां में धर दियो। गांव करै सो गेली।

रामेसर गांवेंडघां री यातां सू संकग्यो। वो नीधो लुळ'र सगळां रै थारी-वारी सर पगा साग्यो। जीवतो रै री सगळां आसीस दी अर पछै सगळां ई जै गंगा माई री बोली।

अजब हिवळास हुवै गांवरां में।

वणीसर री ठेसण आवतां ई सगळा गांवेंडी अकै सागै उतरग्या। अवै डब्लें में फगत हूं अर रामेसर दोवा दो रैयग्या। मनै बात करण रो कोई सिलसिलो नी मिल रैयो हो। रामेसर चुपचाप बँठघो हो।

“कियां कोई भायपै मे ही हो काई?” हूं मून-तोड़यो

“नही।” उण छोटो सो पड़ूतर दियो।

“तो पछै?”

रामेसर अबकाळै कोई पड़ूतर ई को दियो नी

“काई बोल् वावूजी! बतावतां ई सैरम अरव।” रामेसर, जाण संकै

री लाद नीचे दबग्यो हो ।

“अरे वा हरद्वार जाय’र आया हो आ बतावतां सरम आवे के पलाणै रा फूल घाल’र आयो हूं ।”

रामेसर रो मुंडो उतरग्यो । रोवणवाळो सो लाग रैयो हो । उण कैयो, “या ऊंकारो सरम—ये अलबत पदधा-लिख्या हो हरेक चीज नै जाणो—ह्यो बताऊं...”

अवे वो सीट माथे जच’र बैठग्यो । पगां री खड़ाबू घरतें खोल’र पालथी मारली सीट माथे ।

“ये गाव में लौन बांटण खातर गया हा नी । उणरें दूज ई दिन म्हारें हाथ सू अंक ईन्याव हुयग्यो । हजार रिपिया ये दैम’र गया ई हा, हूं उण दिन ई सिक्का भूरजी रो ट्रैक्टर तोई कडावण नै खेत लैयग्यो । घ्यानणो रात ही । रात नै अंक बजी लाई म्हारें बीघा चाळीम अंक जमडी सुधार नांली । ट्रैक्टर माथे भूरजी रो छोटोडो बेटो लादू हो । लादू म्हारें ई सायनो है । तोई काढण रें आधेक घंटे पछे लादू ताकड़ करणी सह करदी के रामेसर अबे रुक्या पार पड़े कोनी । गाव ई चालस्यां । दिनुगी भळै लोकां रें जावणो है ।

हूं ई पछे वयू रोकतो । कैयो चाल तो बाल थारें जचगी जणां । लादू नै ट्रैक्टर चलावता देख’र म्हारें ई जीव मे आयगी । आधीटें आंवता में कैयो—लादू थोडो मन ई चलावण दे यार । उण बरज्यो ना तनै ठा तो है कोनी गैयरां-धैयरां रो । हूं जिद कर्यो ई में पछे कोई भेद है, चलाने तो लुगाई रा जाया ही है नी । हूं घणो कैयो जणा—सीधी सो गैलो आयो । जणा वो स्टेयरिंग हळावणी बता’र म्हारें कने ई लारणै पासी बैठग्यो । सूबो रस्तो हों कोई डर आळी बात ई को ही नी, रात रा रस्तो इयाई सुनो रेवै । ताल आळी ऐरिये कने आवता ठा नी कटै सू ट्रैक्टर रो हरडाट सुण’र चाणचक अंक चिमकोर गावडी आगे आयगी । म्हारें स्टेयरिंग घुमावता-घुमावता ई गावडी रो पग ई टूटग्यो दोसैं हो । लादू फुरती सू ट्रैक्टर सम्हाळ लियो । उण जाड़ भीचां—“जिद कर’र कोढलियो नी जाम ।” उण ट्रैक्टर रोक दियो । दोवूं नीचे उतर’र गाय कने आयां । म्हारो मुंडो थोळो हुयग्यो । आ आछी गिरह आई नी ॥

गावड़ी ने अठो-उठो देखी फोर'र—अंक पग में खौरसल आंडा ले जांवती ।

हूं नाइ कानी जोवे हो । आप कानी देख'र उण केयो ।

मुंडो कांभी देखे—करो पाटा पोळो—अर दिनुगं घणी कीं कैक्षैठ्यो ।

न्यारो—पैली ही रोयो हो नो अे सकड़ा हरेक रं तावे को आवे”

ओळखै है कांभी को री है आ धेन ?”

ग वात

हूं नाइ हनाई ।

गभी

“तो बैठ, उणने वापई ने खबर तो कर कै थारो घीणो सवायो करम आयो हूं ।”

गांव आया जिते भंभरको हुयग्यो हो । बूढा-ठंरा नित-नैम में लागग्या हा । हूं पैलीपोत परै नी जाय'र गाय रं घणी हरजी नामक रं अठै ई गयो । हरजी ने सारी हैम-नैस बताई । च्यार सौ रिपिया हर्जाने सरूप देवण रं कैयो तो—अकर तो वो थोड़ो किणतिणयो पण पछै मानग्यो । पण हरजी रं मान्यां सू काई हुंवतो हो । दिनुगं पंचायत मे मने बुलायो गयो । सिरेपंच समेत च्यार पांच भोजिज आदम्या केयो कै—“भाई रिपिया तो तें हरजी ने दिमा है, बाकी घी सांसर ने काई क्षीरीज्यो । ई रं वास्तै नाडेसर घी री सेवा तो तने ई करणी पड़सी । वात भी वाजब ही, ई खातर मने हुंकारो भरणो पड़्या ।

अवे हू नितउठ अंक कुंडै में पीळी माटी अर गोबर रो भारो कर'र लैय जावतो अर गाप रं पग मापै उणने बांधतो । बिरखा हुयोड़ी ही । डचावडी-गंठियो वापरग्या हो । हूं उठै ई ऐरियै सू डचावडी-गंठियो उपाइ ल्यावतो अर उणरं आगे न्हंक देंवतो ।

म्हारै इलम सू गावडी दस-बारह दिना बाद की ससबी हुंवती लखाई । पग री खौरसल में खासा फरक लखावतो । हूं सोचतो अवे अंक दो दिन में आ डांगड्यां सू ऊंचाया उभी हुवण लाग ज्वासी ।

पण कैया करै नी करम पतळा हुवे जणा को सेवा आडी आवै न कोई दवाई । अंक दिन दिनुगं भारो कर'र ले ज्याऊं तो आगे गावड़ी माथे चीलक्यां मूवे । हूं देख्यो म्हारो ओ काई विरतंग है । गावडती डांगड्यां पसार्यां निढाळ पड़ी ही । हूं फुरती सू आम'र नाक आडो हाथ दियो । पण मांय की हुवे तो आवै नी । अवे भारो को रं बाधे हो । राम जागे गावड़ी

नेक और कोई खेलो हुयो क ठा: नी ।

॥ पंचां कैयो—“भाइड़ा, सेवा
लागणी हुवै जणां काई हुवै । ठीक
इ काम हो पण अब तो लाई रै पईसा
पंचां रो बणावटी अफसोस की की म्हारी

पच बोल्हो—“अरै पईसा तो बळो लागी लूगो—
नी । दुनिया घणी जालस हुवै, खड़घा ई लोग गळ मार
॥ मार देसी ।

“खैर आ तो है ई पण मांसर निमित्त करम कर्यां पछै अमीणी
दवणआळै री किसी फुटघोड़ी हुवै ।” सिरपंच कैयो ।

हू सिरपंच साम्हो हळको सो विरोध कर्यो—“भाइता गावदी तो
मनी घंगी हुयगी ही वा तो अेरु काटो...”

सिरपंच म्हारी बात विचाळै ई काट नांखी—“भोळो है रै तू, जे
गावडी चालण फिरण आळी हुवतो तो उणनै अेरुं काटो थोड़ो ई लड़तो
डांगरा घणा सावचेत हुवै ।”

मनै वां री बात मानणी पड़ी । पंचां-सरपंचां आगै नटण री किण री
खिमता हुवै । राजाजी रै रैणा'र हांजी-हांजी कैयो ।

गाव रो पूछ गळै में घाल'र सगळै गाव रो चक्कर लगावण पढ़घो
अर पछै पंचवारी आळै खेजई सू सोगां मनै बहीर कर दियो । आज
अबै धारै साम्हो हू ।

“जबर फोड़ा पढ़घा भई ।” हू कैयो ।

“हाल तो की बाकी ई पढ़घा है ।”

“मळै ?”

“सासर रै चारै दाणा ई खिडावणा पड़सी । गगेडा कर'र टावरा-
टूवरा नै जिमावणा पड़सी । सोच्यो हो बैक सू पईसा लैय'र कोई गाव-
ढती-गूवड़तो लेसू पण सेवतो की रै वापरी करमचंदिये में लिह्योड़ी ई
नी हुवै-जणा ।” रामेसर री आंख्यां मजळ हुयगी ही । म्हारी समझ में नी
आय रैयो ही कै मैं इणनै किणतरै रो ध्यावस बंधाळं ।

गूगळी

जेठ रो तपतो महीणो अर ऊपर मू चालती कुसखारी लू। आलकतरें
री सटका नुहार री भट्टी सी तपें; पण गूगळी नै किण बात री फिकर।
उणरें भवां (मले) लूवां वयू लूवां रो थाप चालो नी चावें, सडकां भट्टी
वयू रेन रें हंजम ज्यू तपोनी चावें। वा तो आखो दिन बियां ई उमराणी
तपडका मारें। अक जाग्यां बंठी तो उणनें स्यात हो किण देखी हुवैना।

सियाळो, उनाळो, चौमासो किसी ही रत हुवो। गूगळी रो एक पह-
रावो हुवें, फाट्योडो मेणो कुचेसी सो म्याडियो, (घाघरो) टुकीआळी
काचळी, अर अक फाट्योडो सो ललूरियो (ओडणो) माथें ऊपर
नांख्योडो। कितरो ई कटकड़ावतो पाळो पडो। गूगळी रें शरीर माथें
बीजो गावो नी दीसैं। साघो-बुधो मिनख पाळें सू जकडीजया पण कै
मजाल गूगली नै तेज तावडो चडें। कंवत माची ई कैमी है कै 'भोळा री
भगवान राखें टेक...।

आपरो दीन धर्म विचार'र जै कोअी वासी-कुसी गूगळी नै देय देवें,
गूगळी पोता री कायानें भाडो दे देवें अर फेरूं मस्त, पण गूगळी भी अजब
तरीकें री सटकणी (चिडोकली), उमराणी फिरती नै देख'र जद कोअी
फाटी पुराणी चपलां देय देवें, तो गूगळी चपला नै पाछी देवण आळें रें
मिर माथें मारें, अर रोळा करें। गळियां मे भूवती वेळां कदैई नी वकती
दीसैं, पण जे समझदार मोटो मिनख लुगाई छेड़ लेवें तो रांडा-बूडा री
गाळया काढयां विना नी रवें। छतांपण गूगळी मे अक अनोखी बात फेरूं

ही, नान्हा टावरां नै कंओ नीं कँवती । नान्हां टावरां नै देखता ही भाज'र माम्हो आवतो अर टावर नै बांध्यां मे उठा'र छाती सू काठो चँप लेंवती, मुटं माथें सैकडूं वाल्हा (प्यारिया) जबरदस्ती लेंवता थका बडबडावती, "म्हारा नैनकिया...म्हारें काळजियें री कोर...म्हारा नैनकिया इतरा दिन नूं कठें रमायो हो...।"

अघाणचकें री गिरफ्त में आयोड़ो टावर गरळावतो ।

"अे मां अे गूंगळी खा अे...मां म्हने गूंगळी खा...ऽऽऽ..."

टावर रो रोवणो सुण'र टावर री मां भाज'र वेगी-वेगी आंवती अर गूंगळी रें हाथा सू टावर नै छुड़ा ले जांवती । जाती-जाती पाच सात गाळ्यां री यगदीस गूंगळी ने यनाय जांवती ।

"निसरमी रडार नै ढोई ई को हुवें नी...डाकण गळी गळी हावती फिरवो करसी, टावरां नै सुख सू को खेसण दें नी...।"

टावर रो बावळियो भास'र आगीनं करती टावर री मां पाछल फुर'र ओजू घेतावणी देंवती थकी कँवती 'अवकाळें जें टीगरा नै अधाई तो बखोरो सो; भांग नाखूली ।"

गूंगळी अेकटक जोवती रेंवती, जोवता ही उणरो ठीमर (धीरज) फूट ज्यावतो । नैण सावण भावदै री झड़ी लगाय देंवता । अेक भरजोर गेहरो निसकारो नांख गूंगळी आगसी गळी में रम जांवती ।



आज जद म्है नानाणें सू भण पढीज'र दस वरसा सू पाछो गाव आयो तो लारली बालपणें री संग वाता मुहें आगें सनीमा रें पड्डें माथें चितराम आवें ज्यां आवण लागी । जुनीये पीपळ तळें हाडा सकडी रमया हा अर ची टैम ही घूमती घामती आ ज्यांवती गूंगळी । संग रमणआळा टावर चिडावणो सरू कर देवता—"गूंगळी थारें माथें ऊपर भाठो...गूंगळी थारें माथें ऊपर भाठो ।"

टावरा सू गूंगळी कदे ही नी चिडती टावर चाहे जचें ज्यां केवो छता पण टावर डरता मागण लाग जावता । गूंगळी भाज'र म्हनं पकड लेंवती

अर म्हें गरळांवतो म्हारी गरळावणो सुण'र मां आयर छुडा ले जांवती ।
फैर गूगळी केअी जेज ताई आसूडा ढळकावती ।

आज जद अे वाता मुडें आगें आवण लागी तो मां सू पूछ वेंट्यो ।

“मां गूगळी तो को दीसं नी आसं-पासं...काई हुयो उणरो ?”

मां रो आकरो सुभाव सदा सू है । पण म्हारी अचाचूक रो आ वात
मुण'र तो मुडें माथें मुळक आ ही गी । फैर नंहुनं सू बोली—“हुवें काअी
हो मरगी, पण तनै आ अचाचूक रो वात पूछण री काअी सुभी । दम
थरम हुयग्या पण अजें को भूत्योनी ?”

“भून्नू कियों...” फैर थोडी जेज रुक'र बोल्थो—“मा, गूगळी जळम
सूं ई पागल ही काअी...। उणनै टावर स सू अणूतो कांड कीकर हो ?”

मां फेरुं हंसी...

“बावळा ! तनै काअी नेवणो है आं वाता सू । हणें तो नानाणें सू
आपो है...वुठें री वातां बत्ता अे तो फेरुं ही हुंवती रेंसी ।”

“नहो मां ! मनै गूगळी रें वारें मे सगळी वाता बत्ता । नानाणें रा
काअी समचार है । मय राजी खुशी है ।”

घणो अधायो जणें जा'र मा गूगळी रो इतिहास बत्तावणो सरु
करियो ।

“ओ...जको आपा रें अयूणें छेई उपासरो है वो कदेई गूगळी रो
हुया करतो । गूगळी रो मोटियार, गूगळी अर उबैरो नैनो छोरो तीना
तीन ई रेंवता । गूगळी रो मोटियार मास्टर हो । सगळां रें मुडें लागतो
आदमी हो । इयें उपासरें मे टावरां नै भणावतो । टावर भणावणें रें अंबज
मे उणनै मोयलाळा जरूरत री चीजा देय देवता । मास्टर री जिम्नडी
पोतारी सुन्न सू हासती ही । मास्टर आपरें रस्तें सर चालतो इण कारण
सूं सेंग मोयलाळां रो प्यारो हुयग्यो । कोअी नै पण शिकायत रो मोको नी
देवतो । पोता री ईमानदारी अर मंणत सू टावरां नै पढावतो ।

मास्टर सदा सू रिगली गारो हो । लोगा नै रोजीना सिझ्यारा उपा-
सरें में भेळा कर लेंवतो अर उवानें आपरी धड्डियोडी का'ण्या सुणांवतो ।
उणरी का'ण्यां कोअी राजा-राणीयां री नी ही । भोगता जमींदारा री
काट करणवाळी होंवती । उवां रा जुल्मां माथें मास्टर खार खाया बेंठो

हो । कोअी भोगते नै उवैरी लिखियोड़ी का'णी पांचगी । दूजैई दिन लोगां मास्टर अर उवै रै नैने टावर री लाश दीठी । कोअी दोखी मास्टर अर उणरै नान्हे छोरै री कतन करदी ही ।

मास्टरनी (गूगळी) जद मोट्यार अर आपरै अकलई छोरै री लाश दीठी तो तडाछ खाय'र पड़गी । च्यार दीना पछ मास्टरनी नै चेतो वापर्यो तो अवै वा मास्टरनी नी ही । गूगळी रो खतवो मिळ चुक्यो हो ।

गूगळी नै आपरै अकलपै छोरै सू मोत बती मोह हो । इण वास्तं वा सदा गळिया मे खेलता टावरां में आपरै छोरै जोंवती रैवती ।" मा इतरी कैयनै चुप हुयमी । मै रूपाला रै डूगै भागर में गोता लगावतो थको मा सू प्रश्न कर्यो—“पण मा वा इत्ता छोरा रै होवता थका म्हनै क्यू बाय्या मे भर लैवती अर मनै ई क्यू वाल्हा दैवती ?”

मा बतायो ।

“जिण दिन गूगळी रै मोटियार अर छोरै री हरया हुयी ही उणी दिन धारो जलम हुयो हो पण गूगळी नै इण बात रो पतो नी हो वा तो थनै इण वास्ते ज्यादा वाल्हा देवती कै थारी अर उवैरै छोरै री मूरत अक ही जैठी ही, उवैनै इयात धारै चे'रे मे आपरो फरजन्द लखावतो ।”

मा तो कैवणो बन्द कर दीयो हो पण म्हारो सोचणो जारी हो । मां रै मुई सू पूरी बात सुण'र तो मनै इया लागण लाग्यो कै जाणै गूगळी म्हारी मा ही अर वा अवै इण नुस्वर सेंसार मे भी है । आख्या री कोरां मे हाथ लगायो तो बठै नमी ही । बँठ्यो बँठ्यो ही भर जोर निसकारो नाख्यो—“हे गूगळी मा तू जठै कठैई हुवै थारी आत्मां नै इयाती मिळै ।

नोक धूम्यो—“वांभी हयो रं चीनणी रं ?”

दो नान-नान आंभ्यां मूं पूरतो पहूनर दिमो—“बी...नी ।”

“नो आ ईयां अठं कियां पड़ी है ?”

“मन्न टा: नी...।”

उणरी मां धरतं पड़ी चीनणी रो कांधां हिलायो, तो वा मफां अचेत । होटा मार्यं हीं कठाई बापरयो । वा बोली—बेटा ! ओ कं कुजरबो काम कर नांख्यो...जा, जल्दी मेक गाडी जोत, असपतान ले चालां नी जणास बाजो विगड़मो । ”

वां धूम्यता मे गमंडो सोक गाडी जोती, अर दोवू मां बेटां रळर चीनणी नं गाडी मार्यं घाली ।

असपताळ मे डाक्टर केओ ताळ ताई उणरं म्लुकोज चढायो । अक-आध मूर्ख भी लगायी...मूर्ख लगावतं डाक्टर उणरी मां नं धूम्यो ।

“यह कही से गिर गई थी क्या ?”

“हां भीतळी मार्यं गारो दैवण नं चढी हीं मो उठं सूं पडगी ।”

“ओ हो...वड़े बुद्धिमान लोग हो तुम भी...जब तुम लोगों को यह पता है कि लुगाई को इसमें बद्धकर कोई सौरियम स्टेज नहीं होता.. इन दिनों इसे पूरा आराम मिलना चाहिये था...लेकिन आप लोग तो काम के लोभी होते हो न ..।”

“नी नी डाक्टर सांव माडाणी ही चढयी भीतळी मार्यं...।”

“बहुत भला किया...अब देखो मैंने इसका पूरा ट्रीटमेंट...चेकअप कर लिया...बचने की तो कोई आशा है ही नहीं, क्योंकि पेट में मरे बच्चे का जहर बुरी तरह से फैल गया है...अलबत्ता कुछ क्षणों के लिए इस इजेक्सन के प्रभाव से होश में जरूर आ जायेगी...।”

डाक्टर इजेक्सन लगायो जितरं मे वो भी वारं मू चाल'र डाक्टर कनं बायम्यो । हाय जोडतो थको बोल्थो—“नी...नी डाक्टर सांव इणनं चचाओ पुकाई...।”

“नो होम” कय'र डाक्टर वारं चल्थो गयो । छोड़ी ताळ नं वण चेतो करघो । सासूं अर मोटियार उणरं कन्नं तो खड्घा ही हा...चेतो हुंवता देख'र उणरी माथो मालघो । वण धीरे-धीरे आंभ्यां उघाड़ी । दोषा कानी

चारो-वारी मर जाँयो, फँर आँख्या भपकाय'र लीला हुयोडा होठा माथै जीभ फँरती बकी कैयो—“सासूजी मैं काम नी, करती ही नी...हू भीत गुनगार हूँ—मन्नै माफी बगसाया, अबै हू बच नी सकूली...मन्नै भीत जोरदार गैल आलै है...फँर नांड़ आपरै मोटियार कानी फोर'र दर्द सँ होंठ मीच'र टूटती उबाज में कैयो—

“मैं...धानै...आछी...नी लागती...ही...नी...हूँ...भीतSSS...भूगली हूँ मन्नै माफी दिराया...म्हारै...पेट मे डीक चालै...ये...पकायत...दूजो...ब्याव...कर लेया...।”

“मां-बेटो दोवां मायो काठो भाल लियो ।

“बीनणी चेतो करो तो...बीनणी...ओ बीनणी—” पण बीनणी कठै । उणरो पछी पीजरो खाली करग्यो हो । वो अचेत रै ज्यू हुयग्यो हो...आपरी पण री छेकडली बात उणरै माथै मे भूणचक्कर री ज्यू धूमै हो । वो रोजीता ईयां चाया करतो हो कँ वो इण सुगाई री काभी धार धारै है । पण, अबै उणनै आकाश टोपाळी सू खासा लाठो लागै हो । पैलड़ो ब्याव ही बापू जीवतो ही जणा किया ई करथो हो । अजै ताई तो पैलड़ै ब्याव रा पर्दसा ही नी उतरथा है, अर दूजो ब्याव...हे भगवान !”

उणनै की नौ सूम्है हो । उणनै लखावै हो कँ जानै, धरती, आकाश अस्पताल कमरो, मां की बकूरियां घूम रैया है, अर जाने थोड़ी ही लाळ नै अँ सगळा उणरै उपर पड ज्यासी ।

“लाज नै उठावो” री ताकीद सँ मा-बेटो दोनू चिमक्या ।

